विचार

मैक्सिम गोर्की

पीले दैत्य का नगर

अनुवाद : अशोक पांडे

पीले दैत्य का नगर

सौ बरस पुराने अमरीका की अनुभव-यात्रा

लोग उसका आदेश मानते हैं: वे कूड़ा ख़रीदते हैं जिसकी उन्हें ज़रूरत नहीं होती और दिमाग़ को कुंद करने वाले शोज़ देखते हैं. ऐसा लगता है मानो शहर के बीचोबीच बेतरह आवाज़ करता सोने का एक बड़ा टुकड़ा तेज़-तेज़ घूमता जाता है और सोने के महीन कण हवा में उड़ते जाते हैं जिन्हें लोग दिन भर तलाशते और दबोचते रहते हैं. लेकिन आख़िरकार शाम आ जाती है और सोने का टुकड़ा उल्टा घूमना शुरू कर देता है: वह एक ठंडा भंवर चलाना शुरू करता है ताकि लोग दिन में इकट्ठा किए हुए सोने के कणों को उसे वापस लौटा दें. हमेशा वे उससे ज़्यादा लौटाते हैं जितना उन्हें मिला होता है और हर अगली सुबह सोने का टुकड़ा और बड़ा हो चुका होता है. अब वह और ज़ोर से घूमता और उसके ग़ुलाम लोहे की बनी तमाम चीज़ों का शोर लगातार ऊंचा होता जाता है.

फिर और ज़्यादा ताक़त से वह दिन भर लोगों का ख़ून और दिमाग़ चूसता है ताकि शाम तक यह ख़ून और दिमाग़ ठंडी पीली धातु में बदल जाए. इस शहर का दिल सोने का एक लौंदा है. इसी की धड़कन में शहर का जीवन है इसी के विकास में जीवन का अर्थ है.

पीले दैत्य का नगर

महान लेखक मैक्सिम गोर्की की
दुर्लभ पुस्तक का अनुवाद

लेखक
मैक्सिम गोर्की
अनुवाद
अशोक पांडे

संवाद प्रकाशन
मुंबई : मेरठ

विश्व ग्रंथमाला

संपादक आलोक श्रीवास्तव

सर्वाधिकार : संवाद प्रकाशन (हिंदी अनुवाद)

प्रकाशक : **संवाद प्रकाशन,**
आई- 499, शास्त्रीनगर,
मेरठ- 250 004 (उ. प्र.)

मुंबई कार्यालय : ए-4, ईडन रोज, वृंदावन,
एवरशाइन सिटी, वसई रोड (पूर्व),
ठाणे, पिन- 401 208

मुद्रक : राज आफसेट, मेरठ (पाठ्य भाग)
न्यू हर्षा प्रोसेस, दिल्ली (आवरण)

कवर डिजाइन : संवाद कला विभाग

पहला संस्करण : फरवरी, 2008

मूल्य : 75/

ISBN : 978-81-89868-35-2

Pile Datye ka Nagar
(Essays : Maxim Gorki)
Translated by Ashok Pandy

Published by *Samvad Prakashan,*
I – 499, Shastrinagar, Meerut – 250 004, INDIA.
First Edition : 2008, Price : 75/

बिड़ला विद्या मन्दिर के अपने आदरणीय गुरुजनों

श्री बसन्त कुमार भट्ट

श्री राज शेखर पन्त

और

श्री अशोक कुमार अग्रवाल

के लिए कृतज्ञता के साथ

मैक्सिम गोर्की

1868 में जन्मे मैक्सिम गोर्की का मूल नाम अलेक्सेई मैक्सिमोविच पेश्कोव था. बाद में जोड़े गए उपनाम गोर्की का अर्थ होता है कड़वा.

रूसी कथा-लेखक, उपन्यासकार, आत्मकथा-लेखक और गद्यकार मैक्सिम गोर्की का समूचा जीवन उनके देश के हलचल भरे क्रांतिकारी कालखंड से जुड़ा रहा था. 1936 में अपने देहांत के समय तक वे जोसेफ स्टालिन की सोवियत सत्ता में संस्कृति के प्रमुख प्रवक्ता बन चुके थे. गोर्की ने समाजवादी यथार्थवाद के मूलभूत सिद्धांतों को प्रतिपादित किया जो सोवियत साहित्य के प्रतिमान बने. गोर्की के रूखे और सामाजिक चेतना से भरपूर प्रकृतिवाद का वर्णन करते हुए चेख़व ने उसे "एक ऐसा विनाशकर्ता" बताया "जो हर उस चीज़ का विनाश करता है जिसका विनाश किया जाना आवश्यक होता है."

अलेक्सेई मैक्सिमोविच पेश्कोव के पिता जगह-जगह घूमकर कुर्सियों की गद्दियों की मरम्मत किया करते थे. उनके माता-पिता का देहांत बहुत जल्दी हो गया था. संस्मरणों की उनकी किताब 'मेरा बचपन' की शुरुआत पिता की मृत्यु का शोक मनाती माता की याद के दर्दभरे दृश्य से होती है. 11 वर्ष की आयु में अनाथ हो गए गोर्की ने बहुत ग़रीबी देखी. उन प्रारंभिक दिनों में उनको सहारा देने वाली उनकी दादी का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा. दादी के भीतर साहित्य और दबे-कुचलों के लिए प्रेम था. कथावाचन पर उनकी गहरी पकड़ थी. उनके अलावा बाक़ी के रिश्तेदारों के साथ गोर्की के संबंध कड़वे और हिंसापूर्ण थे. बात-बात पर पिटाई करने वाले सौतेले पिता पर गोर्की ने एक दफा चाकू से वार कर दिया था. गोर्की को बहुत कम शिक्षा मिली पर उनकी स्मरण-शक्ति आश्चर्यजनक थी. बारह की उम्र में घर छोड़ देने के बाद उन्होंने कई तरह के पेशे अपनाए. वोल्गा पर चलने वाले एक स्टीमर पर उन्होंने पढ़ना सीखा. 1883 में वे एक बिस्कुट फैक्ट्री में काम कर रहे थे. उसके बाद वे कुली, बेकरी में नौकर, फल-विक्रेता, रेलवे कर्मचारी, वकील के सहायक और अंतत: 1891 में नमक की मिल में आपरेटर रहे. बाद में भटकन के इन दिनों का गोर्की ने अपने लेखन में प्रयोग किया. 1884 में वे कज़ान विश्वविद्यालय में दाख़िला लेने में नाकाम रहे और 1880 के दशक के अंत में क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण गिरफ़्तार किए गए. 19 की आयु में उन्होंने आत्महत्या का प्रयास किया, पर बच गए. गोली उनके दिल के बग़ल से होकर गुज़र गई.

उक्रेन, कॉकेसस और क्रीमिया तिफ्लिस की यात्राओं के बाद गोर्की ने अपनी पहली कहानी छपाई. बंदरगाह के चोर की कहानी 'चेल्काश' को छपने के साथ ही सफलता मिल गई. उन्होंने अख़बारों के लिए लिखना शुरू किया और तीन खंडों में छपी उनकी किताब 'स्केचेज़ एंड स्टोरीज़' के 1898-1899 में प्रकाशित होने के साथ ही वे लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हो गए. वे अपने लेखन में समाज के निचले हिस्सों में रह रहे लोगों के बारे में लिखा करते थे. बाद में उन्होंने इन लोगों के दुखों को एक व्यापक सामाजिक स्तर पर विश्लेषित करना प्रारंभ किया. अपने लेखन के शुरुआती दौर में उनकी दोस्ती चेख़व, तोल्सतोय और लेनिन से हो गई. चेख़व के कहने पर उन्होंने अपना पहला नाटक लिखा. इस नाटक के लिए उन्होंने अपनी प्रारंभिक कहानियों से सामग्री ली. 1902 में रचित 'द लोअर डैप्थ्स्' गोर्की का सबसे प्रसिद्ध नाटक है. कोन्स्तान्तिन स्तानिस्लाव्स्की के निर्देशन में इसका मंचन मास्को आर्ट थियेटर में हुआ. इसे बहुत सफलता मिली और जल्द ही इसका प्रदर्शन पश्चिमी यूरोप और अमरीका में हुआ.

गोर्की एक गुप्त छापेखाने से जुड़ गए और 1902 में उन्हें अस्थाई तौर पर मध्य रूस के अरजामास में निष्कासित कर दिया गया. उसी साल उनका चुनाव रूसी अकादेमी के लिए हुआ पर सरकार ने इस चुनाव को अवैध ठहराया जिसकी प्रतिक्रिया में अकादेमी के कई सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया. अपनी राजनीतिक गतिविधियों के चलते गोर्की को लगातार ज़ारशाही के कारण मुश्किलें झेलनी पड़ीं. उन्होंने लेनिन के नेतृत्व वाली सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की सदस्यता ले ली. रूसी क्रांतिकारियों के लिए पैसा इकट्ठा करने के लिए वे 1906 में अमरीका गए. वहां उन्हें अपना होटल छोड़ने पर विवश होना पड़ा. ऐसा उन्हें अपनी राजनीतिक सोच के कारण नहीं करना पड़ा. कारण यह था कि उनके साथ मादाम आन्द्रीएवा भी सफ़र कर रही थीं जिनके साथ उन्होंने क़ानूनन विवाह नहीं किया था. उस समय तक उन्होंने अपनी पहली पत्नी एकातेरीना पाव्लोव्ना से तलाक़ के काग़ज़ प्राप्त नहीं किए थे. वहां एक डिनर-पार्टी में अमरीकी लेखक मार्क ट्वेन ने गोर्की का समर्थन करते हुए कहा था: "निश्चय ही मेरी सहानुभूति रूसी-क्रांति के साथ है."

1906 में गोर्की कैप्री में जा कर बस गए. लेनिन 1908 में उनसे मिलने आए जहां वे मछली पकड़ते थे शतरंज खेलते थे और हार जाने पर बच्चों की तरह नाराज़ हो जाया करते थे. गोर्की लेनिन के आत्मसंतुष्ट मार्क्सवाद से खीझे हुए थे और उनकी किताब 'मैटीरियलिज़्म एंड एम्पीरियो क्रिटिसिज़्म' के कुछ पन्ने पढ़ने के बाद उन्होंने उसे दीवार पर पटक दिया था.

अमरीका में अपने असफल अभियान के दिनों में गोर्की ने अपनी श्रेष्ठतम रचना 'माँ' का ज़्यादातर हिस्सा लिखा. यह उपन्यास 1906-1907 में छप कर आया. समाजवादी यथार्थवाद की नींव समझे जाने वाले इस उपन्यास को बर्तोल्त ब्रेख्त ने नाटक के रूप में ढाला.

1913 में गोर्की रूस लौटे और उन्होंने 'पेत्रोग्राद थियेटर' की स्थापना में सहायता की. 1913-1914 में उनकी आत्मकथात्रयी का पहला खंड 'मेरा बचपन' छपा. 1916 में 'इन द वर्ल्ड' और 1922 में 'मेरे विश्वविद्यालय' का प्रकाशन हुआ.

गोर्की ने शुरू में लेनिन की कठोर नीतियों का अस्वीकार करते हुए पेत्रोग्राद के सिद्धांतों का बचाव किया. "लेनिन की ताक़त रोमानोव की तरह हर उस आदमी को गिरफ़्तार कर लेती है जो उसके विचारों को स्वीकार नहीं करता" नवंबर, 1917 में उन्होंने लिखा. रूसी-क्रांति के बाद हालांकि गोर्की को सुरक्षा प्राप्त थी, 1918 में बोल्शेविकों की तानाशाही के उनके विरोध को लेनिन द्वारा ख़ामोश करा दिया गया था. 1919 में गोर्की द्वारा लिखा गया लेव तोल्सतोय का संस्मरण उस महान लेखक का एक निर्दय चित्र प्रस्तुत करता है.

1921 में जब अन्ना अख्मातोवा के पूर्वपति निकोलाई गुमिल्योव को गिरफ़्तार किया गया, गोर्की जल्दी-जल्दी मास्को पहुंचे ताकि लेनिन से कहकर अपने दोस्त को छुड़वा सकें. यह अलग बात है कि बिना मुक़दमा चलाए तब तक निकोलाई गुमिल्योव को गोली से उड़ाया जा चुका था.

कम्युनिस्ट-सत्ता और बुद्धिजीबियों के प्रति उसके व्यवहार से खिन्न हो कर गोर्की ने 1920 के दशक में अंतत: स्वयं को आत्मनिर्वासन में डाल लिया. "किसी भी बूढ़े आदमी के लिए हर गर्म जगह मातृभूमि जैसी होती है" एक बार उन्होंने लिखा था. गोर्की ने तीन साल जर्मनी और चेकोस्लोवाकिया के आरोग्यालयों में बिताए. लेनिन की मौत पर उन्होंने एक भावपूर्ण संस्मरणात्मक लेख लिखा.

कुछ समय गोर्की सोरेन्टो में रहे लेकिन स्तालिन के बहुत मनाने पर 1931 में वापस रूस आ गए. उन्होंने तमाम पत्रिकाओं का प्रकाशन किया और वे लेखक संघ के अध्यक्ष बने. कांग्रेस हॉल में लगा उनका चित्र स्तालिन के चित्र जितना विशाल था. 1935 में सोवियत लेखकों की पहली कांग्रेस में गोर्की का सम्भाषण समाजवादी यथार्थवाद के सिद्धांत के रूप में स्थापित हुआ.

हालांकि गोर्की ने लेखक संघ की लालफीताशाही की निंदा की थी पर कुछ बदला नहीं. 'ग्रेट टैरर' की शुरुआत के साथ ही कांग्रेस के सारे प्रस्ताव दफना दिए

गए. लेखकों को गोली से उड़ाया जाने लगा और स्तालिन स्वयं लेखकों के कार्यकलापों में दिलचस्पी लेने लगे थे. रूस आने से पहले और बाद दिए गए गोर्की के वक्तव्य विवादास्पद हैं.

18 जून, 1936 को मास्को के निकट न्यूमोनिया से गोर्की की मृत्यु हो गई. यह बात दीगर है कि उनकी मौत को लेकर तमाम कयास लगाए गए. 1938 में गेनरिख यागोदा नामक खुफिया पुलिस प्रमुख ने "स्वीकार" किया कि उसे गोर्की की मौत के आदेश दिए थे. ऐसा कहा जाता है कि गोर्की के पुत्र की 1934 में हुई हत्या का मक़सद गोर्की को मानसिक रूप से तोड़ देना था. लेकिन जब 1990 के दशक में केजीबी के दस्तावेज़ों को दुबारा छाना गया तो ऐसा कोई सबूत सामने नहीं आया. बल्कि बीमार गोर्की को देखने स्तालिन ख़ुद दो बार गए थे. संभावना यही है कि गोर्की की मृत्यु प्राकृतिक कारणों से ही हुई थी.

पीले दैत्य का नगर' का प्रकाशन 1906 में 'एप्पलशन' पत्रिका में होने के बाद पाठकों का चिट्ठियों की बाढ़ आ गई थी. "सांसद बहाने खोज रहे हैं और कामगार हंस रहे हैं" गोर्की ने लिखा था. इस किताब में गोर्की की दो प्रतिसाम्राज्यवादी रचनाओं 'अमरीका में' और 'मेरे साक्षात्कार' से चुने हुए पैम्फलेटों के अलावा उनके पत्रों के चुने हुए हिस्से और अन्य महत्त्वपूर्ण लेख सम्मिलित हैं.

अब से क़रीब सौ साल पहले प्रख्यात रूसी लेखक मैक्सिम गोर्की समाजवाद के प्रचार और पार्टी के लिए धन इकट्ठा करने के उद्देश्य से अमरीका की यात्रा पर गए थे. यह नन्हीं-सी किताब उन्हीं दिनों उनके द्वारा लिखे गए लेखों इत्यादि का संग्रह है.

'माँ' जैसी क्लासिक कालजयी कृति के रचनाकार के रूप में दुनिया भर में विख्यात मैक्सिम गोर्की की यह रचना बहुत ज़्यादा प्रसिद्ध नहीं हुई पर विगत कुछ दशकों से अमरीका की अंतर्राष्ट्रीय दादागीरी और सनकभरी नीतियों की पृष्ठभूमि में यह किताब हरेक सजग पाठक के लिए आवश्यक हो गई है.

लालच और पैसे की चकाचौंध से भरे नगर न्यूयॉर्क को गोर्की 'पीले दैत्य का नगर' कहते हैं. पीला दैत्य यानी सोना और सोना माने लालच और और अधिक लालच. इस पुस्तक में संग्रहीत लेखों को पढ़ना गहरे कहीं डराता भी है. सौ साल पहले के न्यूयार्क के दृश्य आज तक़रीबन उसी वीभत्स रूप में उन तमाम विकासशील देशों में देखे जा सकते हैं जिन पर काला अमरीकी साया पड़ा हुआ है. कहना न होगा हमारा अपना देश भी इन्हीं में एक है.

दो-एक साल पहले कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल में हिंदी विभाग में अध्यापन करने वाली डॉ. नीरजा टंडन के पास से यह पुस्तक मुझे बेहद इत्तफाक से बतौर 'इनाम' मिली और इसे पहली बार पढ़कर ही मैंने अधूरे छूटे बाक़ी काम को अलग रखकर इसका अनुवाद करना शुरू कर दिया था. डॉ. नीरजा टंडन को इस लिहाज से इस अनुवाद के पीछे परोक्ष रूप से सबसे महत्त्वपूर्ण कारक कहा जा सकता है, क्योंकि न तो अब रूस के प्रगति प्रकाशन की पुस्तकों की नुमाइशें छोटे क़स्बों में लगा करती हैं और न ही इस अपेक्षाकृत गुमनाम किताब को मैंने आज तक कहीं और देखा है न किसी से इसका जिक्र सुना है. इसलिए मैं उनका आभारी हूं.

-- अशोक पाण्डे

जनवरी, 2008

अनुक्रम

पीले दैत्य का नगर

जनता न सिर्फ़ सारे सांसारिक मूल्यों का निर्माण करने वाली ताक़त होती है वह अध्यात्मिक मूल्यों का भी इकलौता अथक स्रोत होती है, वह समय का प्रथम दार्शनिक और कवि होती है, सौंदर्य और जीनियस भी, धरती पर सारी कविताओं और त्रासदियों की रचना करने वाली ताक़त भी वही होती है, जिनमें वह सबसे महान -- विश्व-संस्कृति का इतिहास भी शामिल है.

- मैक्सिम गोर्की

पीले दैत्य का नगर

... धरती और समुद्र के ऊपर धुंए में घुले कोहरे की पर्त टंगी हुई है, और एक महीन धीमी बारिश शहर की अंधेरी इमारतों और सड़क के कीचड़ पर गिर रही है.

आप्रवासीगण जहाज़ के कोने पर इकट्ठा होते हैं और उत्सुकताभरी आंखों में आशा और संशय; भय और आनंद के साथ अपने चारों तरफ़ निगाह डालते हैं.

"वह कौन है?" एक पोलिश लड़की हौले से पूछती है और आश्चर्य के साथ 'स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी' को देखती है.

"अमरीकी ईश्वर" कोई जवाब देता है.

तांबे से बनी हुई विशाल स्त्री आकृति सिर से पांव तक जंग से ढंकी हुई है. उसका ठंडा चेहरा कोहरे में समुद्र के विस्तार को देख रहा है मानो तांबा सूर्य की प्रतीक्षा कर रहा हो कि वह आए और दृष्टिहीन आंखों को दृष्टि प्रदान करे. लिबर्टी के पैरों के पास बहुत थोड़ी ज़मीन है. लगता है वह समुद्र से पथराई लहरों के किसी प्लेटफार्म पर उभर आई है. समुद्र और जहाज़ों के पालों के ऊपर ऊंची उठी उसकी बांह उसकी आकृति को शालीन बनाती है. उसके हाथ में कस कर पकड़ी गई मशाल तीखी लपट में विस्फोटित होने ही वाली लगती है और जो मटमैले धुंए को हटाकर आसपास की हर चीज़ को आनंद और उजास से भर देगी.

ज़मीन की जिस पट्टी पर वह खड़ी है उसके चारों तरफ़ पानी में बड़े-बड़े लोहे के जहाज़ प्रागैतिहासिक दानवों की तरह तैर रहे हैं और छोटी-छोटी नावें भूखे शिकारी जानवरों जैसी चक्कर काट रही हैं. परीकथाओं के दैत्यों की तरह गुस्सैल तीखी सीटियों में साइरन बजते हैं. लंगरों की ज़ंजीरें खड़खड़ाती हैं और समुद्र की लहरें उदासी के साथ किनारे पर थपेड़ों में टूट रही हैं.

हरेक चीज़ तनाव के साथ जल्दी-जल्दी भाग रही है. पीले झाग की परत

पानी पर है और स्टीमरों के स्क्रू और पैडल उसे छपछपा रहे हैं.

और हर चीज़ -- लोहा, पत्थर, पानी और लकड़ी -- बिना धूप के बिना गीत और बिना ख़ुशी के इस थकानभरे अकेले जीवन के ख़िलाफ़ विद्रोह करती लग रही है. हरेक चीज़ चिल्ला चिंघाड़ रही है और मनुष्य के विरोध में काम कर रही किसी रहस्यमय ताक़त का बेमन से आज्ञापालन करती लग रही है. तेल लोहे जूठन और कूड़े से गंदा कर दिए गए पानी के ऊपर एक ठंडी दुष्ट ताक़त अदृश्य तरीके से लगातार मेहनत करती लग रही है. ऊब और बेमन के साथ यह ताक़त इस विशाल मशीन को चला रही है जिसमें जहाज़ छोटे हिस्सों जैसे हैं और आदमी लोहे और लकड़ी की इस गंद में बेमतलब कीलों और अदृश्य बिंदुओं जैसे.

शोर से बहराया हुआ निर्जीव चीज़ों के इस पागल नाच से घबराया हुआ धुंए और तेल में सना हुआ दो पैरों वाला एक जीव जेबों में गहरे हाथ डाले उत्सुकता से मुझे देखता है. उसके चेहरे पर तेल और गंदगी है जिसे मानवीय आंखों की चमक नहीं दांतों की सफ़ेदी थोड़ा कम करती लगती है.

जहाज़ों और नावों की भीड़ में हमारा स्टीमर धीरे-धीरे जगह बनाता आगे बढ़ता है. आप्रवासियों के चेहरे अजीब तरीके से सलेटी और बेरंग हैं. उन सबकी आंखों में भेड़ों जैसा समानता का भाव है. जहाज़ के एक तरफ़ इकट्ठा खड़े हुए वे ख़ामोशी से कोहरे को देख रहे हैं.

इस कोहरे में खोखली आवाज़ छोड़ती एक बेहद विशाल चीज़ पैदा होती है; उसका आकार बढ़ता जाता है, उसकी भारी बदबूदार सांस लोगों तक पहुंचती है और उसकी आवाज़ में धमकी है.

यह एक शहर है. यह न्यूयार्क है. किनारे पर बीस मंज़िले अंधेरे बेआवाज़ स्काइस्क्रेपर खड़े हैं. सुंदर दिखने की इच्छा से हीन ये चौकोर बड़ी इमारतें उदासी और भय पैदा करतीं उठती चली गई हैं. अपनी ऊंचाई पर थोथा गर्व करने वाले हर मकान की बदसूरती को महसूस किया जा सकता है. खिड़कियों पर फूल नहीं हैं और कहीं भी बच्चे नज़र नहीं आते.

इस दूरी से शहर ऊबड़-खाबड़ काले दांतों वाले एक विशाल जबड़े जैसा दिखता है. वह आसमान में काले धुंए के बादल छोड़ता अपने मोटापे से तंग किसी खाऊ की तरह फूंफूं करता है.

शहर में प्रवेश करना पत्थर और लोहे के किसी पेट में घुसने जैसा है -- एक पेट दसियों लाख लोगों को निगल चुका है और उन्हें चबाता हुआ पचा रहा है.

सड़क एक फिसलनभरा लालची गला है जिसकी गहराइयों में शहर के भोजन के काले टुकड़ों जैसे जीवित लोग तैरते हैं. अपनी विजय का जश्न मनाते लोहे की खड़खड़ ऊपर-नीचे हर जगह है. जीवन से भरपूर और सोने की ताक़त से जगा हुआ बेआवाज़ पत्थर पर आराम करता हुआ अपनी ज़ंजीर की कड़ियों को लगातार बढ़ाता हुआ वह आदमी के गिर्द अपना जाल फेंकता है, उसका गला घोंटता है, उसके ख़ून और मस्तिष्क को चूसता है, उसकी मांसपेशियों और नसों को निगल जाता है.

विशाल कीड़ों जैसी रेलगाड़ियां अपने पीछे कारों को घसीटती चलती हैं; गाड़ियों के हार्न मोटी बत्तखों जैसी आवाज़ें निकालते हैं, बिजली के तार बेमन से भन्नाते हैं, जिस तरह स्पंज नमी को सोख लेता है उसी तरह हवा ने अपने भीतर तमाम आवाज़ों को सोख लिया है और वह कांप रही है. इस गंदभरे शहर के ऊपर उसकी फैक्ट्रियों के धुंए में मिली यह हवा ऊंची कालिखपुती दीवारों पर टंगी रहती है.

चौराहों और सार्वजनिक उद्यानों में पेड़ों पर धूल से ढंकी पत्तियां निर्जीव तरीके से टहनियों पर झुकी रहती हैं और काले स्मारक उठे होते हैं. मूर्तियों के चेहरों पर धूल की मोटी पर्त होती है; जिन आंखों में कभी अपने देश के लिए प्यार की चमक थी वे अब शहर की धूल से ढंकी हुई हैं. तांबे के बने ये लोग ऊंची इमारतों के जाल के बीच इस कदर निर्जीव और अकेले हैं. ऊंची दीवारों की छायाओं में बौनों जितने क़द वाले ये लोग अपने आसपास के कोलाहल और पागलपन के बीच अपना रास्ता खो चुके हैं और आधे अंधे हो चुकने के बाद दर्दभरे दिलों के साथ अपने पैरों के आसपास लोगों की भूखी चहल-पहल को देखा करते हैं. नन्हीं काली आकृतियां जल्दी-जल्दी इन स्मारकों के बग़ल से गुज़रती हैं और उनमें से कोई भी इन नायकों की तरफ़ निगाह नहीं डालतीं. राजधानी के इस बेअख्तियार शोर ने लोगों की स्मृति से स्वतंत्रता का निर्माण करने वालों के महत्त्व को मिटा दिया है.

तांबे के ये लोग हमेशा एक ही उदास विचार में खोए लगते हैं :

"क्या मैंने ऐसे जीवन का निर्माण करने की सोची थी?"

उनके आसपास जीवन स्टोव पर धरे किसी सूप-सा उबलता है और छोटे-छोटे लोग इस भंवर में ग़ायब होते जाते हैं जैसे शोरबे में भोजन के कण ग़ायब होते हैं जैसे समुद्र में माचिस की तीली ग़ायब होती है. अपने लगातार भूखा रहने वाले मुंह में यह शहर लोगों को एक के बाद एक कर निगलता जाता है.

तांबे के कुछ नायकों ने अपने हाथ गिरा दिए हैं जबकि कुछ ने अपनी बांहें

लोगों के सिरों के ऊपर चेतावनी में उठा रखी हैं :

"बन्द करो यह सब. यह जीवन नहीं पागलपन है?"

पत्थर कांच और लोहे की बनी इस उदास फंतासी के दमघोंटू भय में और अतिशय भूख के बर्बर शोर में सड़क के जीवन की ऊहापोह के बीच ये सभी लोग असंगत लगते हैं.

एक रात वे सारे अपने प्लेटफार्मों से उतर कर सताए गए लोगों की भारी चाल के साथ शहर की गलियों से गुज़रते हुए अपने अकेलेपन की यंत्रणा को शहर से दूर पहुंचा देंगे : खेतों में जहां चांद चमक रहा है और ताज़ी हवा और पवित्र शांति है. अगर एक आदमी अपनी सारी ज़िदगी अपने देश के लिए मशक्कत करता रहा हो तो यह निश्चित तौर पर उसका हक़ है कि उसकी मौत के बाद उसे शांति से रहने को छोड़ दिया जाए.

तमाम दिशाओं को जाने वाली गलियों और सड़कों के ऊपर जल्दीबाजी में गुज़रते लोग होते हैं. पत्थर की दीवारों के गहरे छिद्र उन्हें चूस लेते हैं. लोहे के विजयभरे नाद, बिजली की तीखी सीटीभरी आवाज़, इस्पात या पत्थर के किसी नए निर्माण के शोर ने मानवीय आवाज़ों को अपने में डुबा लिया है जिस तरह तूफ़ान चिड़ियों की आवाज़ों को डुबा लेता है.

लोगों के चेहरों पर एक गतिहीन शांति का भाव होता है; जाहिर है उनमें से सारे लोग जीवन का ग़ुलाम बन चुके होने से बेख़बर हैं जिसमें वे शहर नाम के दैत्य का भोजन भर हैं. अपनी दयनीय धृष्टता में वे ख़ुद को अपने भाग्य का स्वामी समझने की कल्पना करते हैं. उनके आज़ाद होने की चेतना कभी-कभी उनकी आंखों में झलकती है लेकिन साफ़ है कि वे इस बात को नहीं समझते कि उनकी आज़ादी बढ़ई के हाथ में धरी कुल्हाड़ी की आज़ादी है, किसी लुहार के हथौड़े की आज़ादी है, उस अदृश्य कारीगर के हाथ में थमी ईंट की आज़ादी है जो एक मक्कार मुस्कराहट के साथ हर किसी के लिए एक विशाल लेकिन दमघोंटू कारागार का निर्माण कर रहा है. उनमें कई चेहरे पौरुष से भरपूर होते हैं लेकिन आपको सबसे पहले उनके दांत दिखाई पड़ते हैं. अंदरुनी स्वतंत्रता यानी आत्मा की स्वतंत्रता इन लोगों की आंखों में कतई नहीं चमकती. और उनकी स्वतंत्रताहीन ऊर्जा को देखकर किसी चाकू की ठंडी चमक याद आती है जिसे अभी कुंद होना बाक़ी है. यह पीले दैत्य -- सोने के हाथों में किसी अंधे उपकरण की आज़ादी है.

मैं इतना बड़ा शहर पहली बार देख रहा हूं और आज से पहले लोग मुझे कभी भी इस कदर बेमतलब और ग़ुलाम नज़र नहीं आए हैं. साथ ही मैं आज तक

कभी इस कदर त्रासद तरीके से संतुष्ट लोगों से नहीं मिला हूं जो एक पेटू के भूखे और गंदे पेट के भीतर रहते हैं : यह पेटू लालच के कारण मानसिक रूप से कमज़ोर पड़ चुका है और जानवरों की जैसी प्रसन्न आवाज़ें निकालता हुआ दिमाग़ और नसों को अपना भोजन बनाता जाता है...

लोगों के बारे में बात करना दर्दनाक और भयानक है.

संकरी सड़क पर तीसरी मंज़िल की ऊंचाई पर शोर करती भागती रेलगाड़ी आग से बचने के रास्तों के ऊबभरे जालों से होती गुज़रती है. खिड़कियां खुली हुई हैं और हर किसी में आकृतियों को देखा जा सकता है. कुछ लोग अपनी डेस्कों पर सिर झुकाए काम कर रहे हैं या सिलाई कर रहे हैं या कुछ गिन रहे हैं. कुछ लोग खिड़कियों से लगे मिनट-मिनट में गुज़रती जाती रेलगाड़ियों को देख रहे हैं. बूढ़े जवान और बच्चे सभी एक समान तरीके से निश्चिंत नज़र आते हैं. वे इस निरुद्देश्य श्रम के आदी हो चुके हैं. वे इस बात को सोचने के भी आदी हो चुके हैं कि उनके श्रम का कोई उद्देश्य है. लोहे के शासन के प्रति उनके भीतर कतई गुस्सा नहीं है, न उसकी विजय के प्रति नफ़रत. रेलगाड़ियों के गुज़रने से मकानों की दीवारें हिलती हैं -- औरतों के सीने और आदमियों के सिर हिलते हैं; छज्जों पर खड़े बच्चों की देहें हिलती हैं और रेलगाड़ी का गुज़रना उन्हें बताता जाता है कि यह घृणास्पद जीवन उनके लिए एक निश्चितता की तरह आने वाला है. इस तरह लगातार हिलाए जा रहे मस्तिष्कों के लिए निश्चित ही यह असंभव होता होगा कि वे अपने विचारों को सुंदर पैटर्नों में बुन सकें और जीवित लोगों के लिए यह असंभव होता होगा कि वे पैदा हो पाने का सपना देख सकें.

सामने से खुले ब्लाउज वाली एक बूढ़ी स्त्री के काले चेहरे की छवि गुज़रती है. रेल के लिए रास्ता बनाती यातना पाई विषैली हवा भय के कारण खिड़कियों में चली गई है और उस स्त्री के बाल किसी सलेटी चिड़िया के पंखों की तरह फड़फड़ाते हैं. उसने अपनी सीसा बन चुकी धुंधली आंखें बंद कर ली हैं. और वह ग़ायब हो गई है.

घरों के भीतर दिखने वाले दृश्यों में पुराने चीथड़ों से ढंके बिस्तर हैं और मेज़ों पर जूठन और गंदे बरतन हैं. आपकी इच्छा होती है कि खिड़कियों पर फूल होते और उनसे बाहर कोई किताब पढ़ता नज़र आता. दीवारें ऐसे गुज़रती हैं जैसे वे गल गई हों. यह किसी लगातार आती बाढ़ जैसा होता है जिसमें बेआवाज़ लोग बेचारगी के साथ बहते जाते हैं.

एक खिड़की के धूलभरे कांच के पीछे एक पल को एक गंजा सिर चमकता है. वह सिर कारीगरों की बेंच के ऊपर सहमति में हिल रहा है. लाल बालों वाली

एक छरहरी लड़की खिड़की पर बैठी मोजा बुन रही है और उसकी गहरी आंखें फंदे गिनने में मसरूफ हैं. हवा की धारा ने उसे खिड़की से पीछे खिसका दिया है पर वह अपने काम से सिर नहीं उठाती और न ही अपनी पोशाक ठीक करती है जिसे हवा ने अव्यवस्थित कर दिया है. क़रीब पांच साल के दो लड़के बालकनी पर गिट्टियों से मकान बना रहे हैं. रेल के कारण उनका बनाया ढांचा गिर जाता है. बच्चे गिट्टियों को श्रमपूर्वक थामते हैं कि कहीं वे बालकनी की रेलिंग के डंडों के बीच के ख़ाली स्थान से नीचे सड़क पर न गिर जाएं. वे उस रेल को नहीं देखते जिसने उनके प्रयासों पर पानी फेर दिया है. एक पल को देखे गए ये चेहरे और ज़्यादा चेहरे किसी एक संपूर्ण के हिस्सों जैसे दिखते हैं -- एक बड़े संपूर्ण के जिसे सूक्ष्मतम टुकड़ों में तोड़कर रेत में मिला दिया गया है.

रेलगाड़ियों की दौड़ से पागल हो चुकी हवा लोगों के बालों और कपड़ों को उड़ा देती है: वह उनके चेहरों पर गर्म हवा फेंकती है, उनके कानों में हज़ारों आवाज़ों के साथ हमला बोलती है, उनकी आंखों को झुलसाने वाली धूल उड़ाती है, उन्हें अंधा बना देती है, और उनके कानों को न ठहरने वाली एक चीख़ से बहरा कर देती है...

एक ज़िंदा आदमी जो सोचता है, सपने देखता है, अपने दिमाग़ में तस्वीरें बनाता है और इच्छाएं करता है उनका अस्वीकार करता है और प्रतीक्षारत रहता है -- इस चीख़ और गुर्राहट से तंग हो जाएगा जिसमें पत्थर की दीवारें हिलती हैं और खिड़कियों के कांच कांपते हैं. वह गुस्से में अपने घर से बाहर जाएगा और इस घृणित चीज़ को तोड़ डालेगा -- इस उठाई हुई चीज़ को; वह लोहे की इस चीख़ को ख़ामोश कर देगा, क्योंकि वह अपने जीवन का स्वामी है. जीवन उसके लिए है और जो भी चीज़ उसके जीवन में बाधा बनती है उसे बरबाद कर देना चाहिए.

पीले दैत्य के नगर के मकानों में रहने वाले लोग ख़ामोशी से उस सबको बर्दाश्त करते हैं जो मानव की हत्या करता है.

नीचे इस ऊंची रेलवे के लोहे के जाल के नीचे फुटपाथ की धूल में बेआवाज़ बच्चे खेल रहे हैं हालांकि वे दुनिया के और बच्चों की तरह हंस और चीख़ रहे हैं पर ऊपर चल रहे शोर में उनकी आवाज़ें समुद्र में बारिश की बूंदों की आवाज़ की तरह डूब जाती हैं. ये बच्चे किसी हाथ द्वारा सड़क की गंद में फेंके गए किसी गुलदस्ते जैसे हैं. उनकी देहों को शहर की गंद से पोषण मिलता है, वे फीके और कमज़ोर हैं, उनके ख़ून में ज़हर मिल चुका है, उनके स्नायु जंगभरी धातु के दुष्ट

शोर और जाल में फंसी बिजली के कारण मंद पड़ चुके हैं.

क्या ये बच्चे स्वस्थ, बहादुर और गर्वीले बनेंगे? आप अपने से सवाल करते हैं. एक गुस्सैल चीख़भरा शोर ही जवाब के तौर पर उभरता है.

रेलगाड़ी ईस्ट साइड से होकर गुज़रती है जो शहर का कूड़ेदान है और जहां ग़रीब लोग रहते हैं. यहां की गटरनुमा गलियां लोगों को शहर के दिल तक ले जाती हैं जहां आप कल्पना कर सकते हैं एक विशाल अतल गड्ढा होगा किसी बर्तन या कढ़ाई जैसा जिसमें इन लोगों को पिघलाकर सोना निकाला जाता होगा. गटर जैसी इन सड़कों पर बच्चों की भीड़ होती है.

मैंने अपने जीवन में बहुत ग़रीबी देखी है. उसका रक्तहीन हड़ियल हरा चेहरा मैं अच्छी तरह पहचानता हूं. मैंने उसकी भूख से बोझिल और लालच से जलती आंखें हर जगह देखी हैं लेकिन ईस्ट साइड की ग़रीबी जैसा भयानक मैंने कभी कहीं नहीं देखा.

इन गलियों में लोगों के साथ अनाज के बोरों की तरह ठुंसे हुए बच्चे फुटपाथों के कूड़ेदानों में सड़ी सब्जियां खोजते हैं और मिलते ही उन्हें वहीं भयानक गंदगी और गर्मी के बीच अपने पेट में ठूंस लेते हैं.

फफूंद लगी डबलरोटी का एक टुकड़ा उनके बीच बर्बर दुश्मनी पैदा करने को बहुत होता है. उसे खाने की इच्छा में वे आपस में छोटे कुत्तों की तरह लड़ते हैं. भूखे कबूतरों के झुंड की तरह वे फुटपाथ पर रहते हैं; रात के एक और कभी-कभी दो बजे या उसके बाद तक वे कूड़ेदानों को खंगालते रहते हैं; ग़रीबी के ये दयनीय नन्हे जीव जो पीले दैत्य के रईस ग़ुलामों के अतिशय लालच का सीधा मज़ाक़ बनाते दिखते हैं.

गंदभरी गलियों के किनारों पर स्टोव या भट्ठियों जैसी कोई चीज़ होती है जिनमें कुछ पक रहा होता है; उनसे निकले एक पतले पाइप से होकर बाहर आती भाप एक तीखी आवाज़ पैदा करती रहती है. यह तीखी आवाज़ गली की सारी आवाज़ों पर फैली रहती है और एक ठंडे चमकीले सफ़ेद धागे की तरह गरदनों के गिर्द लिपटती जाती है: विचारों को उलझाती हुई, पागल बनाती हुई, एक क्षण को भी न ठहरती हुई, हवा को प्रदूषित करती गंदगी की सड़ांध के ऊपर थरथराती हुई और धूल में जिए जाते इस जीवन के ऊपर नफ़रत के साथ फैली हुई.

धूल एक तत्व है और उसने हर चीज़ को हरा दिया है : घरों की दीवारों को, खिड़कियों के कांच को, लोगों के कपड़ों को, उनके शरीरों के रोमों को, उनके

दिमाग़ों को, उनकी इच्छाओं और विचारों को...

इन गलियों में दरवाज़ों के अंधेरे खोखल दीवार के पत्थरों पर घावों जैसे होते हैं. उन की तरफ़ देखने पर आपको गंदगी से अटी सीढ़ियां नज़र आती हैं और ऐसा लगता है कि भीतर की हर चीज़ सड़ चुकी है जैसे किसी मृत देह की अंतड़ियां. और लोग उनके भीतर कीड़ों जैसे...

एक दरवाज़े पर बड़ी और गहरी आंखों वाली ऊंचे क़द की एक औरत एक बच्चे को अपनी बांहों में लिए खड़ी है; उसकी अंगिया खुली हुई है और नीलापन लिए हुए उसकी छातियां लंबे झोलों की तरह लटकी हुई हैं. बच्चा चीख़ता हुआ माँ की देह को खसोटता है चूसने की आवाज़ें निकालता है और एक पल की ख़ामोशी के बाद और ज़ोर से रोता हुआ माँ की छाती पर चोट करता जाता है. वह स्त्री इस तरह खड़ी है मानो पत्थर की बनी हो. उल्लू जितनी गोल आंखों से वह अपने सामने के किसी ख़ाली स्थान को घूरती रहती है. आपको लगता है कि वे आंखें सिवा डबलरोटी के कुछ नहीं देखतीं. उसके होंठ कसे हुए हैं और वह अपनी नाक से सांस लेती है. गली की भारी दुर्गंधभरी हवा की सांस लेने से उसके नथुने कांपते हैं. यह स्त्री कल खाए गए भोजन की स्मृति पर ज़िंदा रहती है और भविष्य में इत्तफाक से मिल जाने वाले भोजन के किसी टुकड़े का ख़्वाब देखती है. बच्चा चीख़ता है और उसकी नन्हीं पीली देह दोहरी पड़ जाती है पर माँ न तो उसकी आवाज़ सुनती है, न उसकी कोमल चोटों को महसूस करती है.

बिना हैट के लंबे क़द का सलेटी और भूखी आंखों वाला एक बूढ़ा कूड़ेदान में सावधानी से अपनी थकी आंखों की लाल पड़ चुकी पलकों से कोयला बीन रहा है. जब भी कोई उसके पास आता है वह किसी भेड़िए की तरह पलटता है और कुछ बुदबुदाने लगता है.

लैम्पपोस्ट से लगा खड़ा एक बेहद दुबला और जर्द नौजवान अपनी सलेटी आंखों से गली को देख रहा है. समय-समय पर वह अपने घुंघराले बालों को झटकता है. उसके हाथ उसकी जेब में गहरे धंसे हुए हैं और उसकी ऊंगलियां तेज़-तेज हिल रही हैं...

यहां इन गलियों में आदमी साफ़ पहचाना जाता है और उसकी गुस्सेभरी, उकताई हुई, और बदले की आग से भरी आवाज़ सुनाई दे जाती है. यहां आदमी का चेहरा होता है -- भूखा, उत्तेजित, यातना झेलता हुआ. साफ़ है कि ये लोग महसूस करते हैं और इस बात को जाना जा सकता है कि वे सोचते हैं. गंदे गटर में रहने वाले ये लोग झागभरी किसी नदी में टूटी नाव के बहते टुकड़ों की तरह एक-दूसरे से टकराते चलते हैं. भूख की ताक़त उन्हें यहां से वहां फेंकती है और

कुछ खाने की उनकी तीव्र इच्छा उन्हें ज़िंदा बनाए रखती है.

इस दौरान भोजन और संतुष्टि महसूस करने के बारे में सपने देखते वे ज़हरभरी हवा निगलते हैं और उनकी आत्मा की काली गहराइयों में तीखे विचार, ईर्ष्या और आपराधिक इच्छाएं पैदा होती हैं.

वे शहर के पेट में किसी बीमारी के कीटाणुओं जैसे हैं और समय आएगा जब वे उसे इसी ज़हर से प्रदूषित करेंगे जो इस वक़्त उन्हें इतनी उदारता से पाल रहा है!

लैम्पपोस्ट से लगा युवक बार-बार अपना सिर झटकता है. उसके भूखे दांत कस कर जकड़े हुए हैं. मैं समझता हूं, मैं जानता हूं, वह क्या सोच रहा है और उसे क्या चाहिए -- उसे विकट शक्ति वाले दो विशाल हाथ चाहिए और पीठ पर पंख; और मैं जानता हूं उसे वही चाहिए. ताकि एक दिन वह शहर के ऊपर मंडराते हुए अपने इस्पात सरीखे हाथों से सारे कुछ को कूड़े और राख के ढेर में बदल दे. ईंटों और मोतियों, सोने और ग़ुलामों के ख़ून, कांच और करोड़पतियों, धूल, मूर्खों, मंदिरों, धूल के ज़हर से ढंके पेड़ों, और मूर्खताभरी उन ऊंची इमारतों, सब कुछ को एक ढेर में बदल देना, धूल और लोगों के ख़ून से बने एक ढेर में -- एक घृणित अराजकता में. यह ख़तरनाक इच्छा इस युवक के दिमाग़ में उतनी ही प्राकृतिक है जैसे किसी बीमार आदमी के शरीर में घाव. जहां बहुत सारी ग़ुलामी होती है वहा आज़ाद रचनात्मक विचारों के लिए जगह नहीं होती और केवल विनाश के विचार और प्रतिशोध के फूल वहां खिल सकते हैं. यह समझने की बात है: अगर आप आदमी की आत्मा को जकड़ देते हैं तो आपको उससे दया की उम्मीद नहीं करनी चाहिए.

आदमी को प्रतिशोध का अधिकार है -- और यह अधिकार उसे आदमियों ने दिया है.

फीका पड़ता हुआ दिन धुंए के बादलों वाले आकाश में धुंधला जाता है. बड़े-बड़े मकान और भी उदास और विशाल हो जाते हैं. उनकी काली गहराइयों में जहां-तहां रोशनी टिमटिमाती है: किसी अजनबी पशु की, जिसे इन क़ब्रों में रखी गई मृत संपत्ति पर रात भर पहरा देना है, पीली आंखों जैसी चमकती.

लोग दिन का काम कर चुके हैं -- और बिना यह सोचे कि वह क्यों किया गया या कि उसका कोई मतलब था या नहीं -- वे अपने घर अपने बिस्तरों पर लौटते हैं. फुटपाथों पर मानवीय बाढ़ की काली धारा है. सारे सिर उन्हीं गोल

हैटों से ढंके हुए हैं, और सारे दिमाग़ -- जैसा उनकी आंखों से पता चलता है -- अभी से सो गए हैं. काम किया जा चुका है और सोचने के लिए कुछ नहीं बचा है. उनके बारे में सोचने का काम उनके मालिकों का है. उन्हें क्या सोचना है? अगर काम है तो रोटी होगी और जीवन के सस्ते मनोरंजन भी होंगे जिनके परे पीले दैत्य के इस नगर में आदमी को कुछ और नहीं चाहिए.

लोग अपने बिस्तरों तक जाते हैं, अपनी औरतों तक जाते हैं, अपने पुरुषों तक जाते हैं और रातों को उन घुटनभरे कमरों में प्रेम करते हैं ताकि शहर के लिए ताज़ा भोजन पैदा किया जा सके...

वे बस जाते हैं. कहीं कोई हंसी नहीं सुनाई देती न कोई मज़ाक़ : प्रसन्न मुस्कराहटें यहां नहीं चमकतीं.

मोटरगाड़ियां चीख़ती हैं. चाबुक चलता जाता है. बिजली के तार गुनगुनाते रहते हैं. रेलगाड़ियां खड़खड़ाती जाती हैं. निस्संदेह कहीं-न-कहीं संगीत भी बजाया जा रहा होगा.

अख़बार बेचने वाले लड़के अख़बारों के नाम चिल्लाते हैं. इस रेलमपेल की दयनीय आवाज़ और किसी की चीख़ हत्यारे के ट्रैजीकामिक आलिंगन और मसखरे के मज़ाक़ में घुलती जाती है. छोटे-छोटे लोग बेमन चलते जाते हैं किसी पहाड़ी की ढलान पर लुढ़कते पत्थरों जैसे...

और भी रोशनियां चमकने लगती हैं. पूरी-की-पूरी दीवारों पर बीयर व्हिस्की साबुन नए रेजर सिगार और शोज़ के बारे में लिखे शब्द दमकते हैं. सोने की अतृप्त पुकार कभी नहीं रुकतीं: सड़कों पर लोहा लगातार खड़खड़ाता जाता है. अब जबकि हर जगह रोशनी है, इस न थमने वाली चिंघाड़ का महत्त्व बढ़ जाता है और उसके भीतर नए मानी पैदा हो जाते हैं: वह एक और भी नई और दमनकारी ताक़त में बदल जाती है.

पिघले सोने की चौंधिया देने वाली दमक घरों, दुकानों के बोर्डों और रेस्त्राओं से लगातार उड़ेली जाती है. अपमानित करती और यह ढीठ चमक हर जगह जीतती है : अपनी ठंडी दमक से आंखों को चुंधियाती, चेहरों को कुरूप बनाती. यह दुष्ट चमक अपने भीतर एक विकट वासना लिए होती है और साधारण लोगों की जेबों से उनकी कमाई को अपने भीतर लेना चाहती है. इस वासना को वह आंख मारते शब्दों में अभिव्यक्त करती हुई कामगारों को सस्ते मनोरंजन और छोटी-छोटी चीज़ें ख़रीदने का लालच देती है...

इस शहर में रोशनी की भयानक प्रचुरता है. शुरू में वह आकर्षक लगती है: उत्तेजित करती है और ख़ुश भी. रोशनी एक मुक्त तत्व है, सूर्य की गर्वीली संतान. जब वह अपने निखार पर आती है वह दुनिया के किसी भी फूल से सुंदर होती है और सारी थकी हुई, मर चुकी और ग़लत चीज़ों का विनाश कर सकती है.

लेकिन यहां इस शहर में कांच के कटघरों में क़ैद रोशनी को देखते ही आप समझ जाते हैं कि बाक़ी चीज़ों की तरह रोशनी भी यहां ग़ुलाम बना दी गई है. यह सोने की नौकरी करती है सोने के लिए है और लोगों के प्रति दुश्मनी की हद तक बेजार है...

लोहा, पत्थर, लकड़ी -- हरेक चीज़ की तरह रोशनी भी मनुष्य के ख़िलाफ़ षडयंत्र में शामिल है; उसे चौंधियाती हुई वह उससे कहती है:

"यहां आओ!"

वह उसकी चापलूसी करती हुई कहती है:

"अपनी रक़म मेरे हवाले करो!"

लोग उसका आदेश मानते हैं: वे कूड़ा ख़रीदते हैं जिसकी उन्हें ज़रूरत नहीं होती और दिमाग़ को कुंद करने वाले शोज़ देखते हैं. ऐसा लगता है मानो शहर के बीचोबीच बेतरह आवाज़ करता सोने का एक बड़ा टुकड़ा तेज़-तेज़ घूमता जाता है और सोने के महीन कण हवा में उड़ते जाते हैं जिन्हें लोग दिन भर तलाशते और दबोचते रहते हैं. लेकिन आख़िरकार शाम आ जाती है और सोने का टुकड़ा उल्टा घूमना शुरू कर देता है: वह एक ठंडा भंवर चलाना शुरू करता है ताकि लोग दिन में इकट्ठा किए हुए सोने के कणों को उसे वापस लौटा दें. हमेशा वे उससे ज़्यादा लौटाते हैं जितना उन्हें मिला होता है और हर अगली सुबह सोने का टुकड़ा और बड़ा हो चुका होता है. अब वह और ज़ोर से घूमता और उसके ग़ुलाम लोहे की बनी तमाम चीज़ों का शोर लगातार ऊंचा होता जाता है.

फिर और ज़्यादा ताक़त से वह दिन भर लोगों का ख़ून और दिमाग़ चूसता है ताकि शाम तक यह ख़ून और दिमाग़ ठंडी पीली धातु में बदल जाए. इस शहर का दिल सोने का एक लौंदा है. इसी की धड़कन में शहर का जीवन है इसी के विकास में जीवन का अर्थ है.

यह इसके लिए होता है कि लोग दिन-प्रति-दिन धरती को खोदते हैं, लोहा निकालते हैं, घर बनाते हैं, फैक्ट्रियों का धुंआ निगलते हैं, अपने शरीर के पोरों में प्रदूषित हवा जमा करते हैं; यह इसके लिए है कि वे अपने सुंदर शरीर बेच देते हैं.

यह दुष्ट जादूगरी उनकी आत्माओं को ढीला बना देती है और उन्हें पीले दैत्य के हाथों में एक औजार में तब्दील कर देती है : एक ऐसा खनिज जिसे पिघलाकर वह सोना बनाता जाता है, जो उसका ख़ून और उसकी मांस-मज्जा है.

समुद्र के रेगिस्तान से रात आती है और शहर के ऊपर एक ठंडी नमकभरी सांस फैला देती है. ठंडी रोशनी उसे हज़ारों तीरों से बींधती है; लेकिन वह चलती जाती है और उदारता के साथ संकरी गलियों की भयंकरता और घरों की बदसूरती को अपनी अंधेरी पोशाक पहना देती है. लालचभरे पागलपन की एक चीख़ उसे मिलती है, लेकिन वह चलती जाती है और ग़ुलाम बना दी गई रोशनी की ढीठ चमक को बुझाती जाती है और शहर के संक्रमित घावों पर अपना कोमल हाथ रखती जाती है.

लेकिन जब वह गलियों के गड़बड़झाले में पहुंचती है वह अपनी ताज़ा सांस से शहर की दुर्गंध को हटा पाना नामुमकिन पाती है. वह सूरज द्वारा गरमाई दीवारों से रगड़ खाती चलती है छतों के जंग खाए लोहे और फुटपाथों की गंदगी पर से गुज़रती है लेकिन ज़हरभरी धूल और शहर की बदबू से अघा कर अपने पंख तहा कर थम जाती है और घरों की सीढ़ियों और गटरों पर बेजान-सी पसर जाती है. अब उसका बचा-खुचा सिर्फ़ अंधेरा होता है -- उसकी ताज़गी जा चुकी होती है उसका ठंडापन जा चुका होता है : पत्थर, लोहा, लकड़ी और लोगों के प्रदूषित फेफड़े उन्हें निगल चुके होते हैं. अब उसके भीतर कोई ठहराव नहीं बचा, न कोई कविता...

दमनकारी अंधकार में शहर किसी विशाल पशु की तरह कसमसाता सोता है. उसने दिन भर में ज़्यादा खाना खा लिया था सो उसे गर्मी और बेचैनी लगती है. उसकी नींद में दु:स्वप्न ख़लल डाला करते हैं.

फड़फड़ाती हुई रोशनी बुझ जाती है : विज्ञापन करते ललचाते उसके सेवकों का काम आज के लिए ख़त्म हो चुका. पत्थर की अपनी आंतों में मकान एक के बाद एक लोगों को निगल लेते हैं.

गली के किनारे पर लंबे क़द का एक झुका हुआ आदमी खड़ा है और धीमे से अपना सिर घुमाकर बेजान आंखों से दांए-बांए देखता है. कहां जाना होगा उसे? सारी सड़कें एक-सी हैं, सारे मकान एक से, उनकी चमकहीन खिड़कियां एक-दूसरे को उसी संवेदनहीनता से देखती हुईं...

अपने गरमाए हाथ से एक दमघोंटू नॉस्टेल्जिया गला थाम लेता है और सांस लेने में तकलीफ़ होने लगती है. मकानों की छतों के ऊपर एक धुंधला

बादल मंडराता है -- इस अभिशप्त शहर की दिन भर की भाप उसमें है. कोहरे के इस आवरण के परे आसमान की सुदूर अनंतता में शांत सितारों की दबी हुई दिपदिप है.

वह आदमी अपना हैट उतारकर सिर उठाता है और आसमान को देखता है. इस शहर के ऊंचे मकानों ने आसमान को धरती से इतना दूर कर दिया है जैसा दुनिया में और कहीं नहीं है. सितारे बस नन्हे अकेले बिंदु भर हैं.

दूर से एक चेतावनीभरी सीटी की आवाज़ आती है. उस आदमी की लंबी टांगें झटके से गति में आती हैं और अपना सिर झुकाए अपनी बांहें झुलाता वह एक गली में मुड़ जाता है. काफ़ी देर हो गई है और गलियां और भी वीरान होती जाती हैं. मक्खियों की तरह नन्हे लोग अंधेरे में ग़ायब होते जाते हैं और अंधेरा उन्हें निगलता जाता है. हाथ में डंडा लिए पुलिसिए गली के किनारे पर चुपचाप खड़े हैं. वे तम्बाकू चबा रहे हैं और उनके जबड़े धीरे-धीरे हिल रहे हैं.

वह आदमी उनकी बग़ल से गुज़रता है टेलीफोन के खंभों के पास से होता हुआ अब वह मकानों के काले दरवाजों की भीड़ के सामने है : उनके चौकोर जबड़े नींद में उबासियां ले रहे हैं. दूर कहीं एक टैक्सी चीख़ती है. गली के अंधेरे पिंजरों में रात का दम घुटता है, रात मर चुकी है.

अपना झुका हुआ ढांचा झुलाता वह आदमी सधे क़दमों से चलता जाता है. उसकी मुद्रा में कुछ है जो बताता है कि उसका दिमाग़ काम में लगा हुआ है. शायद वह कुछ तय नहीं कर पा रहा या शायद कर चुका है...

मेरे ख़्याल से वह एक चोर है.

रात के अंधेरे में एक जीवित आदमी को देखना अच्छा लगता है.

खुली हुई खिड़कियों से मानवीय पसीने की उबकाईभरी बदबू आती है.

दमघोंटू रूखे अंधेरे में विचित्र दबी आवाज़ें हिलती हैं...

सोया हुआ है नीमबेहोशी में बड़बड़ाता पीले दैत्य का यह बर्बर नगर.

1906

ऊब का साम्राज्य

जब रात उतरती है समुद्र पर रोशनियों का एक प्रेतनगर आसमान की तरफ़ उठना शुरू करता है. अंधेरे में जगमग करती अनंत चिंगारियों की चमक है जो शालीनता के साथ आकाश की काली पृष्ठभूमि में रंगीन क्रिस्टल के आश्चर्यजनक महलों-मंदिरों को उकेरती है. हवा में एक सुनहरा जाल थरथराता है और ख़ुद को आग के एक चमकीले पैटर्न में बुन कर समुद्र के पानी में अपने प्रतिबिंब को सराहता गतिहीन टंग जाता है. यह आग आकर्षक और अस्पष्ट है जो जलती तो है पर चीज़ों को निगलती नहीं; आकाश और समुद्र के सूने विस्तार में आग के किसी शहर के जादुई दृश्य की रचना करती इसकी झलमल बेइंतहा ख़ूबसूरत है. इसके ऊपर एक लाली मंडराती है और पानी उसके आकार को वापस दिखाता हुआ पिघले सोने की जादुई छपछपाहट में उसे एकाकार कर लेता है...

रोशनियों के इस खेल को देखकर दिलचस्प ख़्याल आते हैं: ऐसा महसूस होता है कि यहां इस जगमग में महलों के कमरों में संगीत की आवाज़ इस कदर मीठी होगी जैसी पहले कभी न सुनी गई हो. धरती के श्रेष्ठतम विचार पंख लगे सितारों की तरह इस संगीत में बहते आएंगे. वे अपने दैवीय नृत्य में एक-दूसरे का स्पर्श करेंगे और क्षणिक आलिंगन के इन पलों में एक नई रोशनी और नए विचारों का सृजन करेंगे.

ऐसा महसूस होता है कि वहां उस मखमली अंधेरे में सुनहरे धागों फूलों और सितारों से बना कोई महान झूला समुद्र की हिलकोरती छाती पर धीरे-धीरे अपने भीतर सूरज को सुबह होने तक पनाह दिए है.

सूरज आदमी को वास्तविकता के नजदीक ले कर आता है. दिन की रोशनी में आग का यह शानदार शहर असल में सफ़ेद हवाई इमारतों का समूह भर होता है.

समुद्र की सांस की नीली धुंध शहर के गाढ़े सलेटी धुंए से मिलती है; नाजुक सफ़ेद इमारतें एक पारदर्शी नकाब के पीछे हैं और एक मृगतृष्णा की तरह

झिलमिलाती हुई वे अपने पास बुलाती हैं किसी ख़ूबसूरत थपकाती चीज़ देने का वायदा करती हुई.

उधर पृष्ठभूमि में धुंए और धूल के बादलों के बीच शहर की चौकोर इमारतें पसरी हुई हैं और हवा उनके अतृप्त भूखे शोर से भरी हुई है.

हवा और आत्मा को कंपा देने वाला यह शोर, इस्पात के तने हुए तारों की यह लगातार चीख़, सोने की ताक़त द्वारा जीवन की परास्त की गई शक्तियों की यह त्रासद कराह और पीले दैत्य की ठंडी चिढ़ाती सीटी -- ये सारी आवाज़ें आदमी को धरती से दूर ले जाती हैं: पराजित और शहर की बदबूदार देह द्वारा कुचला हुआ. इसलिए लोग समुद्र के किनारे जाते हैं जहां ये शानदार सफ़ेद इमारतें शांति और सुख का सपना दिखाती हैं.

वे एक-दूसरे से सटी हुई बालू के लंबे खड्ड पर काले पानी पर किसी तलवार की तरह धंसी हुई हैं. धूप में बालू चमकती है और ये सफ़ेद इमारतें पीले मखमल पर सफ़ेद रंग की किसी जटिल कशीदाकारी जैसी नज़र आती हैं. ऐसा लगता है जैसे कोई इस बालू में आया था और अपनी शानदार पोशाक किनारों के सीने पर उछालकर पानी में कूद गया था.

आदमी को ज़ोरों की इच्छा होती है कि वह वहां जाकर इस मुलायम वस्त्र को छुए उसकी महंगी सिलवटों के बीच पसरे और उस विराट विस्तार को देखता रहे जहां बिना शोर किए सफ़ेद परिंदे उड़ा करते हैं जहां समुद्र और आसमान सूरज की तपती निगाह के नीचे पसरे रहते हैं.

यह कोनी आइलैंड है.

सोमवार को इसके अख़बारों ने विजय-भाव से अपने पाठकों को बताया था :

"कल तीन लाख लोग कोनी आइलैंड देखने पहुंचे. तेईस बच्चे खो गए."

... कोनी आइलैंड तक की यात्रा बहुत लंबी है: आप स्ट्रीटकार से ब्रुकलिन की धूल और शोर से अटी सड़कों और लांग आइलैंड से होते हुए इस द्वीप की चमकीली शान तक पहुंचते हैं. और सचमुच जब भी कोई पहली बार रोशनियों के इस शहर के प्रवेश-द्वार पर खड़ा होता है उसकी आंखें चौंधिया जाती हैं. यह शहर उसकी आंखों में हज़ारों ठंडी सफ़ेद चिंगारियां फेंकता है और बहुत देर तक इस चमकदार धूल में उसे कुछ नज़र नहीं आता. उसके चारों तरफ़ हर चीज़ आगभरे झाग का एक तूफ़ानी चक्रवात है जिसके भीतर हर चीज़ घूमती हुई चमकती हुई उसे अपनी तरफ़ बुलाती है. आदमी तुरंत भौंचक्का रह जाता है. उसका दिमाग़ इस चमक के कारण कुंद पड़ जाता है. उसके सारे विचार मिट जाते

हैं और वह भीड़ में एक कण में तब्दील हो जाता है. जगमगाती रोशनियों के बीच हकबकाए दिमाग़ों वाले लोग निरुद्देश्य भटकते रहते हैं. उनके मस्तिष्कों के भीतर एक सफ़ेद धुंध प्रविष्ट हो जाती है और उत्सुकतापूर्ण उम्मीद उनकी आत्माओं पर एक कफन जैसा डाल देती हैं. रात के तमाम कोनों पर मढ़े हुए रोशनी के गतिहीन तालाब के भीतर भौंचक्के लोगों का लगातार आना बना रहता है.

नन्हे लैम्प हर चीज़ के ऊपर एक ठंडी और सूखी रोशनी डालते हैं. वे सारे खंभों और दीवारों पर लगे हुए हैं, वे इमारतों की खिड़कियों पर हैं, वे पॉवर-स्टेशन की ऊंची चिमनियों पर तरतीबवार लगे हुए हैं, वे तमाम छतों पर चमक रहे हैं, अपनी निर्जीव जगमग की तीखी सुइयां लोगों की आंखों में चुभोते हुए -- मूर्खों की तरह मुस्कराते हुए आंखें झपकाते लोग ज़मीन पर घिसटते जाते हैं मानो वे किसी उलझी हुई ज़ंजीर की कड़ियां हों.

इस भीड़ में अपने आपको पाने के लिए बिना आनंद या ख़ुशी के आश्चर्य से कुचल चुके आदमी को बहुत श्रम करना पड़ता है. और जब वह अपने आपको पा लेता है उसे दिखता है कि ये लाखों लैम्प एक बोझिल प्रकाश फेंक रहे हैं जिसके भीतर एक तरफ़ तो सुंदरता की तरफ़ कोई संकेत है और वहीं वह आसपास की बदसूरती को पूरी तरह विवस्त्र भी कर देता है. दूर से किसी तिलिस्म जैसा दिखने वाला यह शहर अब एक अर्थहीन खोह जैसा दिखता है जिसमें बच्चों का मनोरंजन करने के लिए किसी बूढ़े अध्यापक ने जल्दीबाजी में कुछ इमारतें खड़ी कर दी हों -- बूढ़ा अध्यापक बच्चों की खुराफातों के कारण चिन्तित था और उनके खिलौनों की मदद से उनको तमीज सिखाना चाहता था. कई तरह की दर्जनों सफ़ेद इमारतों के भीतर सौंदर्य का ज़रा भी पुट नहीं है. वे सब लकड़ी की बनी हुई हैं और उनके बाहर लगा हुआ सफ़ेद रंग पपड़ी बन कर उखड़ रहा है. ऐसा लगता है वे सब एक से चर्मरोग की शिकार हैं. ऊंची मीनारें दो लंबी कतारों में दूर तक बिना किसी सुरुचि के खड़ी हैं. रोशनियों की निष्पक्ष चमक के आगे हर चीज़ नंगी बना दी गई है. वह हर जगह है और कहीं कोई छायाएं नहीं हैं. हर इमारत मुंह खोले सामने ताकते किसी मूर्ख जैसी नज़र आती है और हरेक के भीतर आप धुंए के बादल देख सकते हैं पीतल और आर्गन का शोर सुन सकते हैं और लोगों की काली आकृतियां देख सकते हैं. खाते हुए पीते हुए और धुंआ उड़ाते लोग.

लेकिन आदमी की आवाज़ नहीं सुनाई पड़ती. हवा आर्कलाइट्स की एकसार फुंफकार, संगीत के ग़रीब टुकड़ों और लकड़ी के पाइपों की पवित्र शिकायत से भरी हुई है. यह सारा कुछ एक उबाऊ गुनगुनाहट में डूब जाता है मानो कोई मोटी

तनी हुई रस्सी हो और जब भी कोई मानवीय आवाज़ इस न थमने वाली गुनगुन तक पहुंचती है वह एक भयभीत फुसफुसाहट जैसी सुनाई देती है. हर चीज़ शिकायत करती-सी चमकती है अपनी भयानक बदसूरती को प्रकट करती हुई.

आपकी आत्मा के भीतर एक ज़िंदा लाल फूलभरी लपट की इच्छा लपकती है जो लोगों को इस अंधा और बहरा कर देने वाली रोशनी से मुक्त करे. आपकी इच्छा होती है कि इस सब सौंदर्य को आग लगा दी जाए और इस बेजान आध्यात्मिक निर्धनता की महानता के विनाश का उत्सव मनाया जाए.

वास्तव में कोनी आइलैंड ने हज़ारों लोगों को अपनी ग़ुलामी में जकड़ा हुआ है. इसके विशाल क्षेत्रफल के भीतर वे काली मक्खियों के बादलों जैसे मंडराया करते हैं -- एक-दूसरे से सटे पिंजरों जैसे कमरों और इमारतों के गलियारों के भीतर. गर्भवती महिलाएं अपने पेटों का भार संभालती हुई आराम से टहला करती हैं. ख़ामोश बच्चे अपने चारों तरफ़ की चमक को विस्फारित आंखों के साथ देखते चलते हैं और आपके भीतर उनके लिए गहरी दर्दभरी संवेदना पैदा होती है क्योंकि अपनी आत्मा में पल रही बदसूरती को वे सौंदर्य समझ रहे होते हैं. घुटी दाढ़ी मूंछों वाले लोग अजीब तरह से एक से नज़र आते हैं और उनके चेहरे भारी और संवेदनाहीन हैं. उनमें से कई अपने बीवी-बच्चों को साथ लाए हैं और वे अपने परिवारों को रोटी के साथ-साथ इस दृश्य को उपलब्ध कराने के गौरव से भरपूर हैं. ख़ुद उन्हें यह जगमग पसंद है, लेकिन वे अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिहाज से काफ़ी गंभीर हैं सो वे अपने होंठ भींचे रहते हैं अपनी आंखों को संकरा कर लेते हैं और उनकी मुखमुद्रा किसी ऐसे आदमी की-सी होती है जिसे कोई भी चीज़ प्रभावित नहीं कर सकती. तो भी प्रौढ़ अनुभव से पाई हुई इस बाहरी शांति के पीछे उस सब चीज़ को भोगने की इच्छा नज़र आती है जो इस जादुई शहर के पास पेश करने को है. सो ये सम्मानित लोग अपनी आंखों की ख़ुशी को नपे-तुले तरीकों से छिपाते हुए लकड़ी के घोड़ों पर सवार होते हैं, मैरी गो राउंड के बिजली के हाथी पर बैठते हैं और अपनी टांगें हिलाते हुए उस पल का इंतज़ार करते हैं जब उन्हें पटरियों की तरह उछाल दिया जाएगा और फिर वे हवा में ऊपर-नीचे फेंके जाने का आनंद ले सकेंगे. इस झटकेदार यात्रा के समाप्त होने के बाद वे अपने चेहरे पर की त्वचा को फिर से फैला लेते हैं और दूसरे मजे की खोज में निकल पड़ते हैं...

ऐसे मनोरंजन असंख्य हैं. लोहे की एक ऊंची मीनार के ऊपर दो लंबे सफ़ेद पंख लगे हुए हैं जिनके कोनों पर लोगों से भरे पिंजरे लगाए गए हैं. जब उनमें से एक पंख आसमान की तरफ़ उठना शुरू करता है पिंजरों के भीतर के

लोगों के चेहरों पर एक दर्दनाक गंभीरता छा जाती है और तनाव से भरपूर एक-सी मुद्राओं के साथ वे दूर जा रही धरती को देखते रहते हैं. सावधानी से नीचे की तरफ़ झुकाए जाते दूसरे पंख पर लगे पिंजरे के भीतर के लोगों के चेहरे ख़ुशी से खिले हुए हैं और प्रसन्न ध्वनियों को सुना जा सकता है. यह आवाज़ें उस पिल्ले की आवाज़ से मिलती-जुलती हैं जिसे काफ़ी देर गरदन से पकड़कर हवा में लटकाए रहने के बाद ज़मीन पर धरा गया हो.

एक दूसरी मीनार के छोर पर हवा में उड़ती नावें हैं. एक और तीसरी मीनार है जो धातु के बने सिलिंडरों को गतिमान बनाती है. फिर चौथी और पांचवीं... वे सारी चमकती हुई घूमती हैं और अपनी ठंडी रोशनी की ध्वनिहीन चीख़ के साथ लोगों को अपनी तरफ़ बुलाती हैं. हर चीज़ झूलती है, चीख़ती है, धमधमाती है और लोगों को मंद और बोझिल बना देती है: रोशनी की गतिमान घूमती चमक से उनके स्नायु कुंद पड़ने लगते हैं. हल्की आंखें और भी हल्की पड़ जाती हैं मानो दिमाग़ से रक्त बह गया हो और अजीब-सी चमकदार लकड़ी के कारण वह पीला पड़ चुका हो. और ऐसा लगता है कि आत्मघृणा के बोझ से मरती ऊब एक धीमी यातना के साथ चक्कर काटती रहती है. अपने उदासीभरे नृत्य के भीतर वह हज़ारों ऊबे हुए काले लोगों को ले लेती है. वह उन्हें बुहारती है जिस तरह से हवा सड़क की गंद को बुहार कर एक पालतू ढेर में इकट्ठा कर देती है, और फिर से बिखेर देती है उन्हें दुबारा इकट्ठा करने को...

इमारतों के भीतर भी लोगों की प्रतीक्षा करते मनोरंजन हैं लेकिन वे संजीदा क़िस्म के हैं -- वे शिक्षित करते हैं. यहां लोगों को नर्क के दर्शन कराए जाते हैं और उन्हें बताया जाता है कि नियमों का उल्लंघन करने पर उन्हें किस-किस तरह की यातनाएं दी जाएंगी...

दबे कत्थई रंग की पेपरमैशी के साथ बनाया गया है नर्क को. हर चीज़ पर एक फायरप्रूफ पदार्थ की पर्त चढ़ाई गई है और उससे बदबू आ रही है. नर्क को बहुत ख़राब तरीके से बनाया गया है -- बहुत कम जानकार आदमी के भीतर भी इसे देख कर उबकाई आ जाएगी. इसे लाल उदासी से भरपूर पत्थरों से भरी एक गुफा की तरह दिखाया गया है. एक चट्टान पर कत्थई पतलून पहने शैतान बैठा हुआ है. वह अपने चेहरे को विभिन्न मुद्राओं में मरोड़ता है -- वह अपने हाथों को आपस में किसी सफल व्यापारी की तरह रगड़ रहा है. निश्चय ही पेस्टबोर्ड का वह पत्थर बहुत आरामदेह नहीं है जिस पर वह बैठा है लेकिन उसे कोई फ़र्क़ पड़ता नजर नहीं आता. उसका ध्यान अपने पैरों पर गिरे पापियों को उसके सहायकों द्वारा दी जा रही यातनाओं पर लगा हुआ है.

एक युवा लड़की है जिसने अपने लिए नया हैट ख़रीदा है और वह आइने के सामने खड़ी अपने को निहार रही है. शैतान के दो नन्हें लेकिन भूखे सेवक पीछे से आकर उसे बांहों से दबोच लेते हैं. वह चीख़ती है लेकिन तब तक देर हो चुकी है. शैतान के सेवक उसे एक लंबी संकरी नाली में लिटाते हैं जो गुफा के बीच में एक गड्ढे की तरफ़ जा रही है. गड्ढे के भीतर से सलेटी धुंआ उठ रहा है और एक लाल चिमटा लड़की को हैट और आइने समेत भीतर पहुंचा देता है.

एक नौजवान व्हिस्की का एक गिलास पीता है -- शैतान के सेवक तुरंत उसे भी स्टेज के नीचे एक गड्ढे में पहुंचा देते हैं.

नर्क घुटनभरा है. शैतान के सेवक कमज़ोर और दुबले हैं. वे अपने काम से पूरी तरह थक गए नज़र आते हैं. काम की बोझिलता और व्यर्थता से वे स्पष्टतया ऊब चुके हैं और वे पापियों को लकड़ी के गिल्टों की तरह नाली में फेंकते हैं. उन्हें देख कर चिल्लाने की इच्छा होती है:

'बहुत हुई यह बकवास. तुम लोग हड़ताल पर क्यों नहीं जाते लड़को!'

एक युवती अपने पड़ोसी के बटुए से कुछ सिक्के चुरा लेती है. शैतान के सेवक उसे तुरन्त ठिकाने लगा देते हैं -- यह देख कर शैतान बहुत ख़ुश होता है और अपनी टांगें हिलाने लगता है. शैतान के सेवक हर उस शख्स के साथ वैसा है सुलूक करते हैं जो नर्क की तरफ़ देखने की हिम्मत करता है...

जनता इस भयानक दृश्य को गंभीर शांति के साथ देखती है. हाल में अंधेरा है. मोटी जैकेट पहने घुंघराले बालों वाला एक गठीला नौजवान उदासी भरी गहरी आवाज़ में लगातार भाषण देता जाता है.

स्टेज की तरफ़ इशारा करता हुआ वह उपदेश देता है कि अगर लोग लाल पतलून वाले शैतान का शिकार नहीं बनना चाहते तो उन्हें पता होना चाहिए कि शादी करने से पहले किसी लड़की को चूमना ग़लत है, वरना वह वेश्या बन जाएगी; चर्च की अनुमति के बिना शादी से पहले युवकों को चूमना ठीक नहीं, क्योंकि इसके परिणामस्वरूप नन्हें बच्चे पैदा हो सकते हैं; वेश्याओं को अपने ग्राहकों की जेबों से पैसे नहीं चुराने चाहिए; लोगों को आमतौर पर शराब या ऐसी कोई चीज़ नहीं पीनी चाहिए जो उन्हें उत्तेजित करती हो; लोगो को शराबख़ानों के बजाय चर्च जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा करना आत्मा के लिए बेहतर होने के

साथ-साथ सस्ता भी पड़ता है...

उसकी आवाज़ रूखी और बोझिल है और उससे यह साफ़ है कि जिस तरह के जीवन के बारे में वह भाषण दे रहा है ख़ुद उसका उस सबमें कतई विश्वास नहीं.

पापियों के लिए इस शिक्षाप्रद मनोरंजन को देखने के बाद इस कार्यक्रम को चलाने वालों से आपकी यह कहने की इच्छा होती है: 'महानुभावो! अगर आप चाहते हैं कि आपके कार्यक्रम के भाषण मानवों की आत्मा को शुद्ध कर सकें तो आपको अपने भाषण देने वालों को ज़्यादा पैसा देना चाहिए.'

इस प्रदर्शन के बाद गुफा के एक कोने से एक फरिश्ते का प्रवेश होता है. फरिश्ते की ख़ूबसूरती को देखकर उबकाई आ जाती है. वह एक तार से टंगा हुआ है और सुनहरे काग़ज़ से मढ़ा हुआ एक ट्रम्पेट मुंह में दबाए हवा में उड़ने का प्रभाव पैदा करता है. उसे देखकर शैतान एक मेंढक की तरह पापियों के पीछे गड्ढे में कूद जाता है. एक गड़गड़ाहट के साथ काग़ज़ के बने पत्थर गड्ढे में गिरते हैं और शैतान के सेवक अपना काम छोड़कर भाग जाते हैं. परदा गिरता है. भीड़ उठती है और हाल से बाहर चली जाती है. कुछ हिम्मती लोग हंसते हैं पर ज़्यादातर गंभीर हैं. शायद वे सोच रहे हैं 'अगर नर्क इस कदर भयानक है तो बेहतर है पाप न किया जाए.'

वे चलते जाते हैं. अगली इमारत में उन्हें 'आने वाला कल' दिखाया जाता है. यह भी पेपरमैशी का बना एक बड़ा कमरा है जिसके भीतर उन गड्ढों को दिखाया गया है जहां बेहद कुरुचिपूर्ण पोशाकों में मृतात्माएं निरुद्देश्य मंडराया करती हैं. आप उनकी तरफ़ देखकर आंख मार सकते हैं पर चिकोटी नहीं काट सकते -- यह साफ़ है. नम हवा के कारण गीली दीवारों से बनी यह जगह बेहद हताशाभरी होगी. कुछ आत्माओं को खांसी की शिकायत है. बाक़ी चुपचाप तम्बाकू चबा रही हैं ज़मीन पर पीला बलगम थूकती हुई. एक कोने पर दीवार से लगी एक आत्मा सिगार पीने में मसरूफ है...

जब आप उनके सामने से गुज़रते हैं वे अपनी रंगहीन आंखों से आपको देखती हैं. वे अपने होंठ जकड़े हुए अपनी पोशाकों के सलेटी मोड़ों के भीतर अपने ठिठुरते हाथों को छिपाती हैं. वे सब बेहद ग़रीब बेहद भूखे लोग हैं और स्पष्टत: उनमें से कई को जोड़ों के दर्द की शिकायत है. जनता ख़ामोशी में उन्हें देखती है और उस नम हवा को अपने नथुनों में भरती है जो इन आत्माओं को

रूखी ऊब से भरती है जिस तरह एक गीला कपड़ा धीमे सुलगते अंगारों को बुझाता है...

एक और इमारत में आप 'बाढ़' देख सकते हैं जिसे जैसा कि सब जानते हैं लोगों को उनके पापों की सज़ा देने के लिए भेजा गया था.

सच तो यह है कि इस शहर के तमाम दृश्यों का एक ही उद्देश्य है: लोगों को बताना कि पापों के लिए उन्हें कहां और कैसे सज़ा दी जाएगी और उन्हें इस धरती पर नियमों का पालन करते हुए किस तरह भयभीत जीवन बिताना चाहिए.

'तुम नहीं करोगे' यह उनका एक धर्मवाक्य है.

आप देख सकते हैं कि इन जगहों पर आने वाले दर्शकों में मज़दूरों की बहुतायत है.

लेकिन पैसा बनाया ही जाना होता है सो इस चमकीले शहर के शांत कोनों में इस धरती की हर दूसरी जगह की तरह वासना दोगलेपन और झूठ का मज़ाक़ बनाती है. निश्चय ही यह सब छिपा हुआ होता है और नैसर्गिक तौर पर बोझिल भी, क्योंकि यह भी 'जनता के लिए' होता है. इसे आदमी की जेब से उसकी आमदनी बाहर निकालने के उपकरण के रूप में एक व्यवस्थित व्यापार की तरह स्थापित किया गया है और बोझिलपन के इस चमकदार पाताल में यह तिगुना घृणित और उबकाईभरा है.

लोगों को इससे भोजन मिलता है.

जगमग करती इमारतों की दो कतारों के बीच वे एक सघन धारा की तरह बहते जाते हैं और इमारतें उन्हें अपने भूखे जबड़ों में जज्ब कर लेती हैं. दाईं तरफ़ की इमारतें उन्हें अनंत यातना का भय दिखाती हुई चेताती हैं:

'पाप मत करो! यह ख़तरनाक है!'

बाईं तरफ़ एक बड़े डांस-हॉल में धीरे-धीरे घेरे में घूमती स्त्रियां हैं. इस जगह की हर चीज़ घोषणा करती है:

'पाप! यह मज़ेदार है...'

रोशनियों की चमक से चौंधियाए हुए, सस्ती सुविधा के लालच में और शोर के नशे में लोग इस धीमे नाच में शरीक हो जाते हैं. बाईं तरफ़ पाप करने को और दाईं तरफ़ उन मकानों में जहां धर्म की शिक्षा दी जाती है.

यह पागल कर देने वाला क्रम नैतिकता के व्यापारियों और पाप के दुकानदारों दोनों के फ़ायदे का है.

जीवन इस कदर क्रमबद्ध है कि लोग छह दिन काम करते हैं और सातवें दिन पाप. वे पाप करने के पैसे देते हैं फिर पश्चाताप करते हैं और उसके लिए भी पैसे ख़र्च करते हैं. बस इतना ही है.

आर्कलाइटें सैकड़ों हज़ारों गुस्साए सांपों की तरह फुंफकारती हैं और इमारतों के जगरमगर करते नफीस जाले में फंसा लोगों का मक्खियों जैसा झुंड एक बोझिल नपुंसकता के साथ भिनभिनाता है और धीमे-धीमे घूमता है. बिना किसी जल्दीबाजी के अपने घुटे चेहरों पर कोई मुस्कान लिए बिना ये लोग हर दरवाज़े में घुसते हैं. जानवरों के पिंजरों के सामने खड़े रहते हैं, तम्बाकू खाते हैं और थूकते हैं.

एक बड़े से पिंजरे के अंदर एक आदमी बंगाली बाघों को दौड़ा रहा है. वह पिस्तौल चलाता हुआ निर्ममता से उन पर कोड़े फटकार रहा है. भय से पगलाए, पिस्तौल की आवाज़ और शोर से बहरे और रोशनियों से अंधे हो चुके वे सुंदर जानवर लोहे की छड़ों के बीच आगे-पीछे भागते हैं : गुर्राते हुए, उनकी हरी आंखें चमकती हुईं, उनके होंठ कांपते हैं, उनके गुस्साए दांत नज़र आते हैं, और जब-तब उनमें से एक अपना पंजा हवा में ख़तरनाक तरीके से लहराता है. लेकिन वह आदमी उनकी आंखों के सामने पिस्तौल चलाता है, गोली की आवाज़ और कोड़े की फटकार से वह शक्तिशाली बाघ पिंजड़े के कोने में दुबक जाता है. गुस्सा दिलाने वाले अपमान से भरा वह मजबूत क़ैदी-पशु अपने कोने में पल भर को ठहर कर सांप जैसी पूंछ को घबराहट में हिलाते हुए अपने सामने पगलाई आंखों से निगाह डालता है.

उसकी चुस्त देह एक पल को मज्जाओं की एक मजबूत संरचना में बदलती है और वह उछलकर उस आदमी पर हमला बोलने और और उसके टुकड़े करने को तत्पर हो जाता है...

उसके पिछले पैर स्प्रिंग की तरह उचकते हैं, गरदन सामने की तरफ़ आती है और उसकी हरी आंखों में आनंद के लाल अंगार चमक उठते हैं.

पिंजरे की छड़ों के बाहर के बोझिल तांबई रंग के साथ एक जैसे चेहरों को बेरंग ठंडी और उत्सुकता से भरपूर निगाह मिलकर बाघ की पलकों को जैसे हज़ार कांटों से बींध देती है.

अपनी बेजान गतिहीनता में भयभीत कर देने वाला भीड़ का चेहरा इंतज़ार करता है -- भीड़ को भी ख़ून देखना है और वह उसके लिए इंतज़ार कर रही है. उसका

इंतज़ार किसी बदले से प्रेरित नहीं है बल्कि केवल इस उत्सुकता से कि देर से पालतू बनाया गय। बाघ कितनी देर तक प्रतीक्षा करेगा.

बाघ अपना सिर अपने कंधों में रखता है, दर्द से उसकी आंखें चौड़ी हो जाती हैं और एक लहरदार गति के साथ वह अपनी देह को ढीला छोड़ देता है -- मानो बदले की प्यास के उत्तेजित उसकी देह पर किसी ने बर्फ़ की बरसात कर दी हो.

आदमी गोली चलाता है, कोड़ा फटकारता है और पागलों की तरह चीख़ता है -- वह बाघ के सामने होने के अपने भय से पार पाने के लिए चीख़ता है और उस भीड़ को ख़ुश करना चाहता है जो बाघ की निर्णायक छलांग का इंतज़ार कर रही है. वह भी इंतज़ार कर रहा है. उसके भीतर एक आदिम इच्छा पैदा हो गई है: वह युद्ध करना चाहता है, वह चाहता है उस चरमानंद को महसूस करना जब दो शरीर एक-दूसरे से भिड़ेंगे, ख़ून का फव्वारा निकलेगा और मनुष्य का मांस उड़ता हुआ पिंजड़े के फ़र्श पर गिरेगा और हवा चिंघाड़ और चीख़ से भर जाएगी...

लेकिन लोगों के झुंड के भीतर विभिन्न विरोधाभासी बातें आने लगी हैं. ख़ून देखने की प्यास है भी और नहीं भी लेकिन वह अंधेरी प्यास बनी रहती है -- जीवित...

उस आदमी ने सारे जानवरों को भयभीत कर दिया है. दबे पांव पीछे लौटते हुए बाघ पिंजरे से लगकर खड़े हो जाते हैं और एक और दिन जीवित बचे रहने के सुकून के साथ पसीना-पसीना हो चुका वह आदमी बेजान होंठों से मुस्कराता है जिनके कम्पन को उसे छिपाना पड़ता है. फिर वह तांबई भीड़ की दिशा में झुक कर उसका अभिवादन करता है मानो किसी देवता की पूजा कर रहा हो.

भीड़ चीख़ती-चिल्लाती है तालियां बजाती है और गहरे थक्कों में बिखरती है और अपने चारों तरफ़ की ऊब की चिपचिप में रेंगती जाती है...

जानवर के साथ मनुष्य की लड़ाई देखने का आनंद ले चुकी भीड़ अब दूसरे मनोरंजन की तरफ़ जाती है. यहां एक सर्कस चल रहा है. रिंग के बीचोबीच एक आदमी अपनी लंबी टांगों की मदद से दो बच्चों को हवा में उछाल रहा है. टूटे पंखों वाले फाख्तों जैसे बच्चे उसके सिर के ऊपर तक पहुंचते हैं. जब-तब वे उसके पैरों पर वापस नहीं आते और ज़मीन पर गिर जाते हैं. वे भय के साथ उस आदमी के उत्तेजित चेहरे को देखते हैं जो उनका पिता या मालिक हो सकता है. कुछ देर बाद वे दुबारा हवा में होते हैं. भीड़ रिंग के चारों तरफ़ इकट्ठा है. वे सब निगाह फाड़े देख रहे हैं और जब भी कोई बच्चा नीचे गिरता है भीड़ में एक धीमा

शोर उभरता है जिस तरह हल्की हवा से कीचड़भरे दलदल की सतह पर हल्की लहरें बनती हैं.

चमकते चेहरे वाले किसी शराबी को गिरते-लड़खड़ाते गाते-चीख़ते देखना अच्छा लगेगा, क्योंकि वह नशे के कारण प्रसन्न होगा और हर किसी को प्रसन्न होने की दुआ देगा.

संगीत शुरू होता है -- हवा को चीथड़े करता हुआ. बैंड ख़राब है और संगीतकार थके हुए हैं. बजाए जा रहे सुरों में कोई सामंजस्य नहीं है और वे लड़खड़ा रहे हैं. वे एक-दूसरे को गड़बड़ाते हुए आगे बढ़ रहे हैं. पता नहीं क्यों पर मुझे अपनी कल्पना में हरेक सुर टिन की चादर जैसा लगता है जिसे मानव आकृति दे दी गई हो. एक मुंह, आंखें, नाक के लिए एक छेद और दो लंबे सफ़ेद कान. संगीतकारों के सिरों के ऊपर एक आदमी अपना बेटन चला रहा है पर वे उसे नहीं देखते. वह आदमी धातु के इन टुकड़ों को कानों से पकड़ता है और हवा में उठा देता है. उनके टकराने से आवाज़ निकलती है और एक ऐसा संगीत निकलता है जिससे यहां तक कि सर्कस के घोड़े भी बचना चाहते हैं.

ग़ुलामों के मनोरंजन के लिए सुनाए जा रहे भिखारियों के इस संगीत के कारण अजीब-अजीब कल्पनाएं आती हैं. आपकी इच्छा होती है कि सबसे बड़े ट्रम्पेट को संगीतकार के हाथ से छीन लिया जाए और ऐसी आवाज़ निकाली जाए कि सारे लोग उससे बच कर भाग जाएं.

आर्केस्ट्रा के नजदीक एक पिंजड़ा है जिसके भीतर भालू हैं. उनमें से एक जो मोटा और चतुर आंखों वाला है, पिंजरे के बीचोबीच खड़ा है और लय के साथ अपना सिर हिला रहा है. ऐसा लगता है कि वह सोच रहा है: 'मैं इस सबको तभी तार्किक मान सकता हूं अगर मुझे दिखाया जाए कि यह सब जान-बूझ कर किया जा रहा है ताकि लोगों को अंधा-बहरा और विकलांग बनाया जा सके... लेकिन अगर लोग वाकई सोचते हैं कि यह मनोरंजक है तो मुझे उनकी मानसिक शक्ति पर ज़रा भी यक़ीन नहीं है.'

एक-दूसरे के सामने दो भालू इस तरह बैठे हैं मानो शतरंज खेल रहे हों. एक चौथा वाला पिंजरे के कोने पर शालीनता के साथ एक छड़ से खेल रहा है. उसके चेहरे पर धिक्कार की ठंडक है. स्पष्टत: उसे इस जीवन में किसी चीज़ की आशा नहीं रह गई है और वह सोने का फ़ैसला कर चुका है.

इन पशुओं को देखकर अजीब दिलचस्पी पैदा होती है -- लोगों की पानीदार आंखें उनकी हर गति का पीछा करती हैं मानो वे शेरों और तेंदुओं की शक्तिशाली

गतियों और उनकी सुंदर देहों में कोई पुरानी भूली हुई चीज़ खोज रहे हों. पिंजरों के बग़ल में खड़े हुए वे छड़ों के बीच से लकड़ी की डंडियों को इन पशुओं के पेटों और बग़लों में चुभोते हैं और उत्सुकता के साथ देखते हैं कि अब क्या होगा.

वे जानवर जिन्होंने अभी मनुष्य के व्यवहार को नहीं जाना है, अपमान के कारण अपने पंजे पिंजरे की छड़ों पर मारते हुए गुर्राते हैं और उनके खुले जबड़ों में गुस्सा साफ़ देखा जा सकता है. लोहे की छड़ों के कारण जानवरों से सुरक्षित लोग चुपचाप पशुओं की ख़ूनभरी आंखों में देखते रहते हैं और संतुष्टि में मुस्कराते हैं. लेकिन ज़्यादातर जानवर मनुष्य के लिए ज़रा भी आदर नहीं दिखाते. लकड़ी खुभोए जाने या थूक दिए जाने पर वे चुपचाप उठकर पिंजरे के कोने पर चले जाते हैं. उस उदासी में शेरों, बाघों, तेंदुओं की ताक़तवर शालीन देहें पड़ी होती हैं और अंधेरे में उनकी आंखों में आदमी के लिए नफ़रत चमकती है.

और उनकी तरफ़ एक बार और देखने के बाद लोग यह कहते हुए आगे बढ़ जाते हैं:

'ये वाला जानवर खेलता ही नहीं.'

संगीतकारों के सामने एक खंभा है जिससे दो बंदर -- एक मादा और एक शिशु -- पतली ज़ंजीर से बंधे हुए हैं. बच्चा माँ से चिपका हुआ है और उसकी लंबी बांहें माँ की गरदन से लिपटी हैं. माँ ने एक बांह से बच्चे को कस कर पकड़ा हुआ है जबकि दूसरी थकान के कारण सामने फैली हुई है -- उसकी उंगलियां वार करने को तैयार हैं. माँ की आंखें तनाव से भरी हैं और वे एक अशक्त हताशा को अभिव्यक्त कर रही हैं -- एक अवश्यंभावी चोट का यातनापूर्ण इंतज़ार और एक थका हुआ गुस्सा उनमें है. माँ की छाती से सिर चिपकाए बच्चा अपनी आंख के कोनों से लोगों को देख रहा है -- जीवन के पहले ही दिन से उसने भय को जाना है और उसके जीवन के बाक़ी दिनों के लिए भय उसके भीतर पत्थर बन चुका है. एक भी पल को बच्चे को न छोड़ती हुई और अपने नन्हे दांत दिखाती हुई माँ लगातार दर्शकों द्वारा चुभोई जा रही छड़ियों और छाताओं से ख़ुद को और बच्चे को बचा रही है.

ये कितने सारे गोरे लोग हैं -- आदमी और औरतें -- तमाम तरह की हैट और टोपियां पहने हुए और उन्हें यह देखना मनोरंजक लगता है कि अपने नन्हे शरीर की तरफ़ बढ़ाई जाती चोटों से एक बंदरिया किस फुर्ती से अपने बच्चे को बचा लेती है.

दोनों जल्दी से तश्तरी के आकार की एक गोल सतह पर चले जाते हैं. इस बात का जोखिम है कि वे कभी भी दर्शकों के पैरों पर गिर सकते हैं. बंदरिया बिना

हारे उन सारे हाथों को हटाने की कोशिश करती रहती है जो उसके बच्चे को छूना चाहते हैं. जब-तब वह अपनी कोशिशों में कामयाब नहीं होती और एक दयनीय रुदनभरी आवाज़ निकालती है. उसकी बांहें एक कोड़े की तरह हिल रही हैं लेकिन दर्शकों की तादाद बहुत ज़्यादा है और सारे-के-सारे बंदर को छूना चाहते हैं, उसकी पूंछ को छेड़ना चाहते हैं या उसकी गर्दन में बंधी ज़ंजीर को झटका देना चाहते हैं. और वह सबको एक साथ काबू नहीं कर सकती. उसकी आंखें दयनीय तरीके से कांपती हैं और उसके मुंह के कोनों पर दर्द और त्रासदी की रेखाएं घिर आती हैं.

बच्चे की बांहें माँ की छाती से इतनी ताक़त से चिपकी हुई हैं कि उसकी उंगलियां माँ के पतले बालों में अदृश्य हो गई हैं. उसकी आंखें पीले चेहरों पर अटकी हैं -- उन लोगों की निगाहों पर जिन्हें उन दोनों की तकलीफ़ से आनंद आ रहा है.

जब-तब एक संगीतकार अपने मूर्खतापूर्ण ट्रम्पेट को बंदरिया के कान के बिल्कुल पास लाकर बजाता है और उसे कानफोडू आवाज़ों में डुबो देता है. अपने दांत दिखाती हुई बंदरिया गुस्सैल आंखों से अत्याचारी की तरफ़ देखती है.

भीड़ हंसती है और संगीतकार के कृत्य का समर्थन करती है. वह प्रसन्न हो जाता है और एक क्षण बाद अपना प्रदर्शन दोहराता है.

दर्शकों में स्त्रियां भी हैं; निश्चय ही उनमें से कुछ माँएं भी होंगी. लेकिन उनमें से कोई भी इस दुष्टता के ख़िलाफ़ एक शब्द भी नहीं कहती. उन सबको इसमें मज़ा आ रहा है.

कुछ आंखें माँ और शिशु की यातना को देखते रहने के तनाव से फटने को ही हैं.

बैंड के आगे एक बुजुर्ग और सज्जन हाथी का पिंजरा है जिसके सिर की त्वचा गंदी और चमकदार है. उसने अपनी सूंड़ छड़ों से बाहर निकाली हुई है और वह जनता को देखता हुआ कुछ सोच रहा है. और बुद्धिमान जानवर होने के कारण वह सोच रहा है कि:

'निश्चय ही ऊब के गंदे झाड़ू से बुहारी हुई यह गंदगी ख़ुद अपने मसीहाओं का मज़ाक़ बना पाने में सक्षम है -- मैंने बूढ़े हाथियों को ऐसा कहते सुना है. लेकिन मुझे बंदर पर दया आ रही है... मैंने सुना है कि आदमी भी कभी-कभी एक-दूसरे को भेड़ियों की तरह फाड़ डालते हैं लेकिन अफ़सोस इस बात से बंदर का जीवन आसान नहीं बनने जा रहा.'

... आप एक बार अपने बच्चे को बचा पाने में अक्षम माँ को देखते हैं फिर

आप मनुष्य से भयभीत बच्चे की आंखें देखते हैं और उसके बाद लोगों को जिन्हें किसी जीव को यंत्रणा देने में आनंद आता है. उसके बाद आप बंदर की ओर देखकर फुसफुसाते हैं: 'प्यारे जानवर! इन्हें माफ़ कर दो! समय के साथ-साथ ये बेहतर हो जाएंगे!'

निश्चय ही यह बेवकूफीभरा और हास्यास्पद है. और बेकार भी. क्या कोई माँ अपने बच्चों को यातना देने वाले को माफ़ कर सकती है? मैं नहीं समझता कुत्तों तक में ऐसी माताएं होती हैं...

सूअरों में शायद होती हों...

ख़ैर ख़ैर.

और तब -- जब रात आती है -- समुद्र किनारे पर रोशनियों का एक जादुई शहर जगमगाता है. वह बहुत देर तक चमकता है -- बिना जले हुए -- रात के आसमान की काली पृष्ठभूमि में -- और उसका सौंदर्य समुद्र में प्रतिबिंबित होता है.

चमकीली इमारतों के झपझपाते जाल में बेरंग आंखों वाले हज़ारों-हज़ार लोग भिखारी के चीथड़ों में जूं की तरह सश्रम रेंगा करते हैं.

वे जो उत्साह से भरे हैं और कमीने हैं वे उनको अपने झूठ का खौफनाक नंगापन दिखाते हैं अपनी ईर्ष्या की मासूमियत और अपना दोगलापन और अपने लालच की अतृप्त शक्ति. मरी हुई रोशनी की ठंडी चमक बौद्धिक निर्धनता को खोल कर रख देती है जिसने विजेता की चमक का ठप्पा इन लोगों के आसपास की हर चीज़ पर लगा रखा है.

लेकिन लोगों को इतनी बुरी तरह चौंधिया दिया गया है कि ख़ामोश प्रसन्नता के साथ वे उस दुष्ट मिश्रण को पिए जाते हैं जिसने उनकी आत्मा में ज़हर भर दिया है.

ऊब -- एक बेढब नृत्य में चलती हुई अपनी नपुंसकता की यातना में मरती हुई.

रोशनियों के शहर की इकलौती अच्छी बात यह है कि आप अपनी आत्मा को मूर्खता की ताक़त के प्रति आजीवन नफ़रत में डुबो सकते हैं.

1906

भीड़

मेरे कमरे की खिड़की से एक चौराहे को देखा जा सकता है; दिन भर इसके भीतर पांच सड़कों से लोग लुढ़कते आते हैं जैसे बोरे से निकलते आलू. वे कुछ देर यहां-वहां घूमते हैं और सड़कें उन्हें दुबारा अपने भीतर चूस लेती हैं. चौराहा गोल और गंदा है -- मांस भूनने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले किसी बरतन की तरह जिसे कभी रगड़कर साफ़ न किया गया हो. इस भीड़भरे चौराहे में स्ट्रीटकारों की चार लाइनें आती हैं और तक़रीबन हर मिनट लोगों से अटी हुई स्ट्रीटकारें मोड़ों पर चीख़ती गुज़रती हैं. वे लोहे की तेज़ खड़खड़ के साथ गुज़रती हैं जबकि उनके ऊपर और उनके पहियों के नीचे बिजली की भिन्नाहट की आवाज़ होती है. धूलभरी हवा में उनकी खिड़कियों के शीशों की फड़फड़ाहट होती है और उनके पहिए पटरियों पर पतली आवाज़ में चीख़ते हैं. शहर का यह नारकीय शोर अनवरत् चलता रहता है -- एक-दूसरे पर वार करती आवाज़ों का जंगली शोर जो विचित्र कल्पनाओं को जन्म देता है.

... चाकू आरियां और लोहे से बनाए जा सकने वाले तमाम हथियारों से लैस पगलाए राक्षसों की एक भीड़ कीड़ों के झुंड की तरह रेंगती है और वह एक स्त्री की देह के ऊपर भंवर की तरह अंधेरे पागलपन में झुकी हुई है जिसे उसने अपने लालची हाथों से दबोचकर ज़मीन की धूल और मिट्टी में फेंका हुआ है -- वह उसकी छातियों को फाड़ रही है, उसके मांस को काट रही है, उसका ख़ून पी रही है, उसके साथ बलात्कार कर रही है और बिना थके अंधों की तरह उस पर हक़ के लिए लड़ रही है.

वह औरत कौन है इसे नहीं देखा जा सकता: वह लोगों के विशाल गंदे पीले झुंड के नीचे दफ़्न है जिन्होंने ख़ुद को चारों तरफ़ से उसके साथ चिपका रखा है. उनकी हड़ियल देहें उसके चारों तरफ़ गड़ी हुई हैं और जहां भी उनके लालची होंठों के लिए जगह है वे वहां से उसके रोम-रोम से जीवन-जल को चूस रहे हैं. अथक भूख और लालच के एक दौरे में वे एक-दूसरे को अपने शिकार से

दूर फेंकते हैं और वार करते हुए और कुचलते हुए वे एक-दूसरे पर जानलेवा हमले बोल रहे हैं. हर कोई जितना संभव हो उतना पाना चाहता है और हर किसी को भय है कि उसके लिए कुछ नहीं बचेगा. हाथों में लोहे की ज़ंजीरें लिए वे अपने दांत पीसते हैं. हत्या किए गए शिकार की देह के ऊपर दर्द की कराहें, लालच की चीख़ें और निराशा की आहें एक नारकीय रुदन पैदा कर रही हैं. धरती की बहुरंगी गंद के नीचे हज़ारों बलात्कारों से तबाह स्त्री की मृत देह पड़ी है.

इस जंगली रुदन के साथ पराजितों की यंत्रणा मिल जाती है जिन्हें लात मार कर हाशिए में डाल दिया गया है और जो फिलहाल भरे पेट के आनंद के लिए घृणित रूप से तरस रहे हैं. वे उसके लिए लड़ नहीं सकते.

शहर का संगीत इस चित्र की रचना करता है.

आज इतवार है. लोग काम नहीं करते.

इस वजह से बहुत से चेहरों पर थकान संशय और क़रीब-क़रीब चिंता का भाव है. बीते हुए कल का एक सुनिश्चित मतलब था -- उन्होंने सुबह से लेकर शाम तक काम किया था. वे रोज़ के समय पर जागे थे और दफ़्तर, फैक्ट्री या सड़क पर चले गए थे. वे रोज़ की जगह पर बैठे या खड़े रहे थे और इस कारण आराम में थे. उन्होंने पैसा गिना, चीज़ें बेची, मिट्टी खोदी, लकड़ी काटी, पत्थर तोड़े, ड्रिल मशीन चलाई -- उन्होंने दिन भर अपने हाथों से काम किया था. एक परिचित थकान के साथ वे अपने बिस्तर पर पहुंचे -- और आज वे देख रहे हैं कि ख़ालीपन सवाल पूछता-सा उनकी आंखों में झांक रहा है मांग करता हुआ कि उसे भरा जाए...

उन्हें काम करना सिखाया गया था, जीना नहीं. सो, आराम का दिन उनके लिए मुश्किल है. मशीनों, गिरजाघरों, जहाज़ों और सोने की छोटी-मोटी चीज़ें बना सकने वाले इन उपकरणों को पता ही नहीं कि मशीनी-श्रम के अलावा किस चीज़ से अपने दिन को भरा जाए. पहियों और दांतों जैसे इन लोगों को लगता है कि मानव-जीवन केवल फैक्ट्रियों, दफ़्तरों और दुकानों में होता है जहां वे अपने जैसे पहियों और दांतों से मिलकर एक दैत्याकार संरचना बनाते हैं जो अपनी नसों के जीवित द्रव से मूल्यों का निर्माण करती है -- लेकिन अपने लिए नहीं.

सप्ताह में छह दिन जीवन साधारण होता है. वह एक विशाल मशीन होता है जिसमें वे सब दांतों जैसे होते हैं; हर किसी को उसमें अपनी जगह पता होती है और वह उसके बोझिल अंधे चेहरे से परिचित होता है और उसे समझता है.

लेकिन सातवें दिन -- आराम और छुट्टी के दिन -- उसके सामने जीवन एक अजनबी लबादा पहने मंडराया करता है. उसका चेहरा टूट जाता है -- वह अपना चेहरा खो देता है...

वे सड़कों पर घूमते हैं, सैलूनों और पार्कों में बैठते हैं, चर्च जाते हैं, वे गली के नुक्कड़ पर खड़े रहते हैं. सदा की तरह गति है लेकिन आपको महसूस होता है कि एक मिनट में या एक घंटे में वह एक संशय के साथ थम जाएगी -- जीवन में किसी चीज़ की कमी है और कोई नई चीज़ उसके भीतर प्रवेश करने की कोशिश कर रही है. कोई भी इस बात को नहीं समझ रहा, कोई भी इसे शब्दों में बयान नहीं कर पाता, लेकिन हर किसी को इस दर्दनाक और तंग करने वाली उपस्थिति का भान है. तमाम छोटे-छोटे अर्थ अचानक जीवन से बाहर निकल गए हैं जैसे मसूढ़ों से दांत.

लोग सड़कों पर घूमते हैं, स्ट्रीटकारों में चढ़ते हैं, बतियाते हैं, बाहर से वे शांत नज़र आते हैं -- साल में बावन इतवार होते हैं और उन्होंने इतवारों को एक ही तरह बिताने की आदत डाल ली है. लेकिन हर किसी को पता होता है कि वह उससे फ़र्क़ है जो वह बीते हुए दिन था और यह कि उसका साथी अलग है. या कि उसके भीतर एक परेशान करने वाला कोई भयावह ख़ालीपन है जिसके भीतर से कभी भी कोई चीज़ बाहर आ सकती है...

हर किसी को लगता है कि उसके भीतर एक शक़ पैदा हो रहा है लेकिन वह सायास उसका सामना करने से बचता रहता है...

वे एक-दूसरे के नजदीक़ आते हैं, समूह बनाते हैं, गलियों के कोनों पर चुपचाप खड़े हुए अपने आसपास की चीज़ों को घूरते हैं; और भी ज़्यादा जीवित लोगों के झुंड उन तक आते हैं और सारे लोगों के मिले-जुले प्रयासों से एक भीड़ का निर्माण हो जाता है.

... बिना जल्दीबाजी के सारे आदमी एक-दूसरे के साथ खड़े हो जाते हैं. उन सब के भीतर की एक-सी भावना और उनके सीनों में खटकता एक-सा ख़ालीपन उन्हें एक ढेर की शक्ल में इकट्ठा कर देता है -- जिस तरह चुंबक लोहे की छीलन को इकट्ठा करता है. एक-दूसरे की तरफ़ न देखते हुए वे एक-दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो जाते हैं और लगाताए नजदीक़ आते रहते हैं -- और चौराहे के किनारे पर अनगिनत सिरों वाली एक विशाल काली देह का निर्माण हो जाता है. मूक, आशावान, सशंकित और तनावभरी वह देह क़रीब-क़रीब गतिहीन है. देह

का निर्माण हो चुका है और जैसे ही उसकी आत्मा प्रकट होती है उसका चौड़ा बोझिल चेहरा भी बन जाता है और सैकड़ों जोड़ी आंखों की एक निगाह भी. यह एक सावधान शक़भरी निगाह है जो बिना जाने उस चीज़ की तलाश में है जिसके बारे में उसकी चेतना उसे आगाह करती है.

इस तरह उस पशु का जन्म होता है जिसका भावनाहीन नाम 'भीड़' है.

... जब भी कोई ऐसा व्यक्ति सड़क पर नज़र आता है जो अपने कपड़ों या चाल की वजह से दूसरों से फ़र्क़ नज़र आता है तो अपने सैकड़ों सिरों को उसकी तरफ़ घुमाकर 'भीड़' उसे सवालिया निगाहों से घूरती है.

वह औरों जैसे कपड़े क्यों नहीं पहनता? संदेह! ऐसा क्या है कि वह इस सड़क पर इतना तेज़ चल रहा है, जबकि आज हर कोई धीमे चल रहा है? अजीब बात है...

दो युवक ज़ोर-ज़ोर से हंसते गुज़रते हैं. भीड़ चौकन्नी हो जाती है. जीवन में हंसने वाली ऐसी कौन-सी बात है जबकि सारी चीज़ें समझ से परे हैं और करने के लिए कोई काम नहीं है? ख़ुशी से बेजार पशु के भीतर हंसी के कारण खीझ पैदा होती है. गुस्से में कई सिर हंसते युवकों का निगाहों से पीछा करते हैं...

लेकिन जब भीड़ अख़बार बेचने वाले लड़के को चारों तरफ़ से उसे कुचलने की मंशा लिए आती कारों से बचने की कोशिश करता देखती है तो वह मारे ख़ुशी के हंसने लगती है. मौत के भय से डरे हुए आदमी के मन को भीड़ अच्छी तरह समझती है और इस रहस्यमय ऊहापोह के बीच जो भी उसकी समझ में आता है उससे उसे आनंद मिलता है...

उधर अपनी कार में एक आदमी जा रहा है जिसे न सिर्फ़ सारा शहर बल्कि सारा देश पहचानता है -- वह बॉस है. भीड़ उसकी तरफ़ बेहद उत्सुकता के साथ देखती है, वह अपनी तमाम आंखों की दृष्टियों को एक किरण में बदल कर बॉस के सिकुड़े हुए चेहरे को आदर के साथ देखना शुरू करती है. यह इस तरह होता है जिस तरह बचपन में पालतू बना लिए गए भालू अपने मालिक को देखते हैं. भीड़ बॉस को समझती है -- वह एक ताक़त है. वह एक महान आदमी है -- हज़ारों लोग मेहनत करते हैं कि वह ज़िंदा रह सके. भीड़ को बॉस के भीतर एक बात साफ़ नज़र आती है -- वह काम मुहैया कराता है. लेकिन एक स्ट्रीटकार में पके बालों वाला एक आदमी बैठा नज़र आता है; उसका चेहरा गंभीर है और आंखें कठोर. भीड़ उसे भी जानती है; अख़बारों में उसे एक ऐसे पागल की तरह प्रचारित किया जाता है जो सरकार को तबाह करना चाहता है और सारी फैक्ट्रियों, रेलों और जहाज़ों पर कब्जा करना चाहता है -- वह सब कुछ छीन लेना चाहता है.

अख़बार उसकी योजना को पागलपन और मसखरेपन से भरपूर बताते हैं. भीड़ उस बूढ़े को ठंडी नफ़रत और उत्सुकता से देखती है. पागल लोग हमेशा दिलचस्प होते हैं.

भीड़ को बस आभास होता है. वह बस देखती है. वह अपनी छवियों को विचारों में नहीं बदल सकती; उसकी आत्मा सुन्न है और उसका दिल अंधा...

... लोग चलते जाते हैं, एक के बाद एक, और यह अजीब और अवर्णनीय है -- वे कहां और क्यों जा रहे हैं. वे बहुत सारे हैं और वे धातु, लकड़ी और पत्थर के उन टुकड़ों से फ़र्क़ हैं, सिक्कों, कपड़ों और तमाम उपकरणों से फ़र्क़ हैं जिनके साथ पशु कल काम कर रहा था. भीड़ इस बात से खीझ उठती है. उसे इस बात का अस्पष्ट आभास होता है कि कहीं एक और जीवन है जो उनके जीवन से अलग और अजनबी आकर्षणों से भरा हुआ है...

अपनी तीखी सुइयों के साथ, खीझ के ऊपर किसी ख़तरे का एक संशय भीड़ को चुभने लगता है. पशु की आंखें गहरा जाती हैं, उसकी विशाल देह प्रत्यक्ष तनाव से कस जाती हैं और एक अचेतन उत्तेजना के कारण वह कांपने लगता है...

लोग, स्ट्रीटकारें और मोटरगाड़ियां गुज़रते जाते हैं... दुकानों की खिड़कियों से चमकीली चीज़ें आंखों को चिढ़ाती हैं. उनकी उपयोगिता अस्पष्ट है, लेकिन वे आकर्षित करती हैं और इच्छा होती है कि उन्हें पाया जाए...

भीड़ परेशान हो गई है...

उसे लगता है कि वह अकेली पड़ गई है और इन सारे बढ़िया पोशाकों वाले लोगों ने उसे दुत्कारा हुआ है. भीड़ देखती है कि उनकी गरदनें साफ़ हैं, उनके हाथ पतले और सफ़ेद हैं, उनके खाए-पिए चेहरे मुलायम और चमकदार हैं. वह उस भोजन की बस तस्वीर भर बना सकती है जिसे ये लोग रोज़ भकोसते होंगे. वह सुस्वाद भोजन होता होगा, तभी उनके चेहरे इतने सुंदर और पेट इतने शानदार भरपूर होते हैं...

भीड़ को अपने पेट को लगातार खुजलाती हुई ईर्ष्या महसूस होती है...

हल्की महंगी गाड़ियों में सुंदर शालीन स्त्रियां गुज़रती हैं. वे अपनी गद्दियों पर भड़काऊ मुद्राओं में बैठी हुई हैं; उनकी टांगें फैली हुई हैं और उनके छोटे-छोटे पैर देखे जा सकते हैं; उनके चेहरे सितारों जैसे हैं और उनकी सुंदर आंखें देख कर लोग मुस्करा देते हैं.

'देखो हम कितनी सुंदर हैं!' वे औरतें बिना कुछ कहे पुकारती हैं.

भीड़ इन औरतों को ध्यान से देखती है और उनकी तुलना अपनी बीवियों से करती है. उनकी बीवियां या तो बेहद कमज़ोर हैं या बहुत मोटी और वे हमेशा लालची होती हैं और आमतौर पर बीमार. सबसे ज़्यादा उनके दांत दुखते हैं और उनके पेट अक्सर ख़राब रहते हैं. और वे हमेशा आपस में लड़ती रहती हैं. भीड़ वासना के साथ गाड़ी में बैठी औरतों के वस्त्र उतारती है और उनकी छातियों और टांगों पर पंजे गड़ाती है. और विवस्त्र, चमकदार, खाई-पियी औरतों के शरीरों की कल्पना में भीड़ अपनी प्रशंसा नहीं रोक पाती और वासनाभरे, गर्म और पसीनेभरे शब्द उछालती है जो किसी गंदे और भारी हाथ के थप्पड़ सरीखे महसूस होते हैं...

भीड़ को एक औरत चाहिए. उसकी आंखें चमकती हैं और वह तेज़ी से गुज़रती औरतों के छरहरे ठोस शरीरों को लालच के साथ दबोचती है.

बच्चों को देखना भी सुंदर होता है. उनकी हंसी और चीख़ से हवा सिहरती है. साफ़ कपड़े पहने, स्वस्थ बच्चे, सीधी टांगों वाले. गुलाबी गालों वाले प्रसन्न बच्चे...

भीड़ के बच्चे बीमार और बुझे चेहरों वाले होते हैं और पता नहीं किस कारण से उनकी टांगें झुकी हुई होती हैं. झुकी टेढ़ी टांगों वाले बच्चों को देखना आम बात है. शायद यह माँओं का दोष होता होगा; उन्हें कुछ करना चाहिए; हो सके तो उन्हें जन्म ही नहीं देना चाहिए...

ऐसी तुलनाएं करने से भीड़ के दिल में डाह पैदा होती है.

उसकी खीझ में आक्रामकता भी जुड़ जाती है जो ईर्ष्या की उपजाऊ ज़मीन पर सदा फलती-फूलती रही है. विशाल काली देह अपने हाथ-पैरों पर बेढब तरीके से चलती है और सैकड़ों आंखें हर उस चीज़ को बरछियों जैसी निगाह से देखती हैं जो उसे अजनबी लगती है.

भीड़ को लगता है कि उसका एक शत्रु है, एक चालाक और ताक़तवर शत्रु जो हर जगह फैला हुआ है और इसी कारण उसे खोजा नहीं जा सकता. वह कहीं आसपास ही है पर वह कहीं नहीं है. उसने अपने लिए सारे स्वादिष्ट व्यंजन ले लिए, सारी सुंदरियां ले लीं गुलाबी बच्चे ले लिए, गाड़ियां ले लीं और रेशम के चमकदार कपड़े भी. वह सिर्फ़ उन्हीं को वह चीज़ें देता है, जिन्हें देने का उसका मन करता है -- भीड़ को वह कुछ नहीं देता. उस भीड़ को जिससे वह नफ़रत

करता है और अस्वीकृत भी. वह उन्हें देखता तक नहीं ठीक जिस तरह भीड़ उसे नहीं देखती...

सूंघती हुई भीड़ खोजती रहती है. वह हर चीज़ को ध्यान से देखती है. लेकिन हर चीज़ सामान्य है. और हालांकि सड़क के जीवन में बहुत सारा है और वह नया और अजनबी है: वह भीड़ के बग़ल से गुज़रता जाता है -- बिना उसकी आक्रामकता की तनी हुई डोर को छुए बिना किसी को पकड़ कर कुचल डालने की उसकी छिपी इच्छा को छुए.

चौराहे के बीचोबीच सलेटी हैल्मेट पहने एक पुलिसवाला खड़ा है. हजामत किया हुआ उसका चेहरा तांबे की तरह चमक रहा है. यह शख़्स अजेय तरीके से मजबूत है. वह अपने हाथों में एक डंडा थामे है जिसमें सीसा भरा हुआ है.

अपनी आंख के कोने से भीड़ उस डंडे को देखती है. वह डंडे को जानती है और उसने ऐसे सैकड़ों हज़ार डंडे देखे हैं और वह जानती है कि उनमें लकड़ी और सीसे के अलावा कुछ नहीं होता.

लेकिन इस डंडे में एक ऐसी दुष्ट ताक़त भरी हुई है जिसका सामना नहीं किया जा सकता.

अंधी भीड़ धुंधले तरीके से हरेक चीज़ के लिए आक्रामक है. वह उत्तेजित है और किसी खौफनाक चीज़ के लिए तैयार है. उत्तेजना में ही वह अपनी आंखों से डंडे की ताक़त को मापती है...

अवचेतन के गहरे कूड़े में डर लगातार सुलगता रहता है...

अपनी गति में जीवन बिना थके, बिना ठहरे चिंघाड़ता रहता है. इसे ऐसी ऊर्जा ऐसे दिन कहां से मिली है, जबकि भीड़ ने अपना काम शुरू नहीं किया है?

लगातार बढ़ती जाती स्पष्टता के साथ भीड़ को अहसास होता है कि वह किस कदर अकेली है. उसे किसी धोखाधड़ी का अहसास होता है और उसकी खीझ बढ़ने लगती है. किसी चीज़ को दबोचने को वह चौकस हो जाती है.

सामने आ रही छवियों को लेकर वह सचेत हो जाती है. कोई भी चीज़ अब उसकी निगाह से बचकर नहीं जा सकती. अब वह तीखी जबान में नफ़रत से भरे कटाक्ष कर रही है और ज़रूरत से ज़्यादा चौड़ा सलेटी हैट पहने उस आदमी को भीड़ की तीखी निगाह और डंक जैसे कटाक्षों से होकर गुज़रने के लिए अपने क़दमों को

तेज़ करना होगा. चौराहा पार करती एक महिला अपने स्कर्ट को ज़रा-सा उठाती है, लेकिन जब वह देखती है कि भीड़ उसकी टांगों को घूर रही है तो उसकी उंगलियां बेजान पड़ जाती हैं, मानो किसी ने उसके हाथ पर चोट की हो और उसका स्कर्ट वापस नीचे चला जाता है...

पता नहीं कहां से एक शराबी लड़खड़ाता हुआ चौराहे पर आ जाता है. उसका सिर उसके सीने की तरफ़ ढुलका पड़ा है और वह अपने आपसे कुछ बड़बड़ाता गुज़र रहा है. उसकी भीगी देह लड़खड़ाती चल रही है और लगता है वह किसी भी पल फुटपाथ या रेलिंग से भिड़ जाएगा...

उसका एक हाथ जेब में घुसा हुआ है. दूसरे में उसने एक गंदा मैला-कुचैला हैट थामा हुआ है. वह उसे अपने सिर के चारों ओर लहराता है लेकिन उसे कुछ नज़र नहीं आता.

धातु की आवाज़ों वाले इस जंगली चक्रवात में लाए जा चुकने के बाद वह थोड़ा आगे जाता है ठहरता है और धुंधुआई आंखों से चारों तरफ़ देखता है. तेज़-तेज़ भागती घोड़ागाड़ियां और स्टीटकारें हर दिशा से उसकी ओर भागती आ रही हैं जैसे एक लंबी गतिमान डोरी जिस पर काले मनके पिरोए गए हैं. स्टीटकारों से गुस्साई चेतावनियों जैसी घंटियां बज रही हैं घोड़ों के टापों की आवाज़ें हैं. हरेक चीज़ खड़खड़ाती-चीख़ती ख़ुद को उस पर धंसा रही है.

भीड़ को किसी आसन्न मनोरंजन का भान हो जाता है. एक बार फिर से वह अपनी सैकड़ों निगाहों को केंद्रित करती है और उम्मीद के साथ उस तरफ़ देखने लगती है...

स्टीटकार का ड्राइवर तनावभरे चेहरे के साथ घंटी बजाता है और सिर बाहर निकालकर शराबी पर चीख़ता है. दोस्ताना तरीके से शराबी अपना हैट लहराता है और स्टीटकार के ठीक सामने आने पर बग़ल की रेलिंग से लग जाता है. उसका समूचा शरीर पीछे की तरफ़ ढुलका हुआ है और उसकी आंखें बंद हैं. स्टीटकार का ड्राइवर गुस्से के साथ हैंडल को झकझोरता है और एक झटके के साथ गाड़ी ठहर जाती है...

शराबी टहलता जाता है. उसने अपना हैट पहन लिया है और वह अपने सिर को दुबारा अपनी छाती पर गिर जाने देता है.

पहली स्टीटकार के पीछे से एक और स्टीटकार आती है और शराबी की टांग को अपनी चपेट में ले लेती है. पहले वह ज़ोर से बाड़ पर टकराता है और फिर धीमे से पटरी पर गिरता है. गाड़ी उसकी कुचली हुई देह को ज़मीन से उठाकर अपने साथ घसीटती जाती है...

शराबी की बांहें और टांगें ज़मीन पर फड़फड़ाने लगती हैं. आमंत्रित करती हुई मुस्कान सरीखी ख़ून की धार लाल रेखा की शक्ल में बहने लगती है...

कार के भीतर औरतें चीख़ती हैं, लेकिन उनकी आवाज़ें भीड़ के विजयघोष में डूब जाती हैं मानो एक विशालकाय भारी और नम चादर अचानक उनके ऊपर फेंक दी गई हो. घंटियों की भयभीत आवाज़ें घोड़ों की टापें और बिजली की हिनहिन -- सारा कुछ भीड़ के भय से दब जाता है, उस काली लहर से जो आगे बढ़ती आ रही है -- किसी पशु की तरह दहाड़ती हुई, कारों पर हमला बोलती हुई, अपनी काली फुहार उस पर बिखेरती हुई और अपना काम शुरू करती हुई.

कांपता हुआ स्टीटकार का शीशा टुकड़ों-टुकड़ों में तहस-नहस कर दिया जाता है. भीड़ की विशाल देह के अलावा कुछ भी नज़र नहीं आता और उसकी विजयपूर्ण दहाड़ के अलावा कुछ भी नहीं सुना जा सकता जो अपने आपको एक शक्ति बना चुकने के बाद ख़ुश होकर घोषणा करती है कि आख़िरकार उसने अपने लिए एक काम खोज लिया है.

सैकड़ों विशालकाय हाथ हवा को चीरते आगे बढ़ते हैं; बीसियों आंखें एक अजनबी और तीखी भूख में चमकने लगती हैं.

वह काली भीड़ किसी को पीटना चालू करती है; वह उस पर अपना सारा गुस्सा उगलना शुरू करती है...

एक-दूसरे में डूबी आवाज़ों के बीच से लगातार एक शब्द की फुंकार सुनाई देती है जो किसी लंबे तीखे चाकू की तरह चमकती है...

"इंसाफ़"

इस शब्द में एक ऐसा जादू है जो भीड़ की सारी अस्पष्ट इच्छाओं को एकाकार कर देता है और उसकी चीख़ों को एक सघन चिंघाड़ में बदल देता है:

"इंसाफ़"

भीड़ का एक हिस्सा अपने को स्टीटकारों की छतों पर काबिज कर लेता है और वहां से भी कोड़े फटकारती-सी वही आवाज़ हवा को चीरती आती है:

"इंसाफ़"

भीड़ के केंद्र में एक ठोस गेंद जैसी बन गई है; उसने सब कुछ घेर लिया है सब कुछ अपने भीतर चूस लिया है; वह गतिमान है और खुले में आने का जतन कर रही है. केंद्र से पड़ रहे दबाव की वजह से भीड़ थोड़ा-सा बिखरती है और अपनी आंतों के भीतर से वह अपना सिर और अपने जबड़े बाहर निकाल फेंकती है.

उसके दांतों में एक ख़ून-सनी जर्जर देह टंगी हुई है -- वह स्टीटकार का ड्राइवर है जैसा कि उसकी धारीदार पोशाक की चिंदियों से देखा जा सकता है.

अब वह चबाए गए गोश्त का टुकड़ा भर है -- ताज़ा गोश्त, जिससे स्वादिष्ट लाल ख़ून टपक रहा है.

भीड़ का जबड़ा उसे लिए आगे बढ़ता जाता है. वह अब भी उसे चबा रहा है. भीड़ की बाहों में आक्टोपस की भुजाओं की तरह वह बिना चेहरे वाली देह फड़फड़ा रही है.

भीड़ चीख़ती है:

"इंसाफ़"

और वह अपने सिर के पीछे एक लंबी मोटी आकृति की रचना करती है जो बड़ी मात्रा में ताज़ा गोश्त खाने को तत्पर है.

लेकिन अचानक ही उसके सामने तांबई चेहरे और सफाचट दाढ़ी वाला एक आदमी प्रकट होता है. उसने अपना स्लेटी हैल्मेट उसने अपनी आंखों तक खींचा हुआ है और अपना डंडा ख़ामोशी से हवा में उठाए वह भीड़ के सामने स्लेटी चट्टान की तरह खड़ा है.

डंडे से बचाव का रास्ता खोजती भीड़ का सिर पहले दाएं फिर बाएं घूमता है.

पुलिसवाला चट्टान की तरह खड़ा रहता है. उसके हाथ का डंडा ज़रा भी नहीं हिलता और उसकी कड़ी आंखें बिल्कुल नहीं झपकतीं.

भीड़ के जलते चेहरे पर पुलिसवाले की ताक़त और आत्मविश्वास के कारण पाला पड़ने लगता है.

अगर कोई आदमी भीड़ की लावे जैसी भारी ताक़त के सामने इतनी शांति से खड़ा रह सकता है तो यक़ीनन वह अपराजेय ही होगा...

भीड़ उसके सामने कुछ चीख़ती है और आक्टोपस जैसी अपनी बाहें लहराती है मानो पुलिसवाले के चौड़े कंधों पर लिपट जाना चाहती हो लेकिन उसकी गुस्सेभरी चीख़ के भीतर एक भय का स्वर भी है. और जब पुलिसवाले का तांबई चेहरा गंभीर होकर गहराने लगता है और जब वह अपने डंडे को हवा में थोड़ा और ऊंचा उठाता है तो भीड़ की दहाड़ अजीब तरीके से टूटने लगती है और उसका धड़ धीरे-धीरे बिखरने लगता है लेकिन उसका सिर बड़बड़ाता रहता है -- इधर-उधर हिलता हुआ वह अब भी रेंगता रहना चाहता है.

बिना जल्दीबाजी किए डंडे लिए हुए दो और लोग नजदीक़ आने लगते हैं. भीड़ की बांहें कमज़ोर पड़ जाती हैं और वह अपनी जकड़ से शरीर को गिर जाने

देती है. वह शरीर अपने घुटनों पर गिरता है और क़ानून के रखवालों के सामने पसर जाता है. उसके ऊपर पुलिसवाला अपनी आधिकारिक सत्ता का संकेत उठा देता है...

धीरे-धीरे भीड़ का सिर भी टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाता है. अब उसका धड़ भी नहीं बचा है. थके-हारे लोग चौराहे पर रेंगने लगते हैं. उनकी काली आकृतियां चौराहे की गंदी सतह पर किसी विशाल नेकलेस के काले मनकों की तरह बिखरने लगती हैं.

नालियों जैसी सड़कों पर मनहूस और ख़ामोश लोग रेंगने लगते हैं. टूटे हुए लोग छितरे हुए लोग...

1906

गणतंत्र का एक सम्राट

... संयुक्त राज्य अमरीका के इस्पात और तेल के सम्राटों और बाक़ी सम्राटों ने मेरी कल्पना को हमेशा तंग किया है. मैं कल्पना ही नहीं कर सकता कि इतने सारे पैसेवाले लोग सामान्य नश्वर मनुष्य हो सकते हैं.

मुझे हमेशा लगता रहा है कि उनमें से हर किसी के पास कम-से-कम तीन पेट और डेढ़ सौ दांत होते होंगे. मुझे यक़ीन था कि हर करोड़पति सुबह छह बजे से आधी रात तक खाना खाता रहता होगा. यह भी कि वह सबसे महंगे भोजन भकोसता होगा : बत्तखें, टर्की, नन्हें सूअर, मक्खन के साथ गाजर, मिठाइयां, केक और तमाम तरह के लजीज व्यंजन. शाम तक उसके जबड़े इतना थक जाते होंगे कि वह अपने नीग्रो नौकरों को आदेश देता होगा कि वे उसके लिए खाना चबाएं ताकि वह आसानी से उसे निगल सके. आख़िरकार जब वह बुरी तरह थक चुकता होगा, पसीने से नहाया हुआ, उसके नौकर उसे बिस्तर तक लाद कर ले जाते होंगे. और अगली सुबह वह छह बजे जागता होगा अपनी श्रम-साध्य दिनचर्या को दुबारा शुरू करने को.

लेकिन इतनी ज़बर्दस्त मेहनत के बावजूद वह अपनी दौलत पर मिलने वाले ब्याज का आधा भी ख़र्च नहीं कर पाता होगा.

निश्चित ही यह एक मुश्किल जीवन होता होगा. लेकिन किया भी क्या जा सकता होगा? करोड़पति होने का फ़ायदा ही क्या अगर आप और लोगों से ज़्यादा खाना न खा सकें?

मुझे लगता था कि उसके अंतर्वस्त्र बेहतरीन कशीदाकारी से बने होते होंगे, उसके जूतों के तलुवों पर सोने की कीलें ठुकी होती होंगी और हैट की जगह वह हीरों से बनी कोई टोपी पहनता होगा. उसकी जैकेट सबसे महंगी मलमल की बनी होती होगी. वह कम-से-कम पचास मीटर लंबी होती होगी और उस पर सोने

के कम-से-कम तीन सौ बटन लगे होते होंगे. छुट्टियों में वह एक के ऊपर एक आठ जैकेटें और छह पतलूनें पहनता होगा. यह सच है कि ऐसा करना अटपटा होने के साथ-साथ असुविधापूर्ण भी होता होगा... लेकिन एक करोड़पति जो इतना रईस हो बाक़ी लोगों जैसे कपड़े कैसे पहन सकता है...

करोड़पति की जेबें उस गड्ढे जैसी होती होंगी जिनमें वह समूचा चर्च, सीनेट की इमारत और छोटी-मोटी ज़रूरतों को रख सकता होगा... लेकिन जहां एक तरफ़ मैं सोचता था कि इन महाशय के पेट की क्षमता किसी बड़े समुद्री जहाज़ के गोदाम जितनी होती होगी मुझे इन साहब की टांगों पर फिट आने वाली पतलून के आकार की कल्पना करने में थोड़ी हैरानी हुई. अलबत्ता मुझे यक़ीन था कि वह एक वर्ग-मील से कम आकार की रजाई के नीचे नहीं सोता होगा. और अगर वह तंबाकू चबाता होगा तो सबसे नफीस क़िस्म का और एक बार में एक या दो पाउंड से कम नहीं. अगर वह नसवार सूंघता होगा तो एक बार में एक पाउंड से कम नहीं. पैसा अपने आपको ख़र्च करना चाहता है...

उसकी उंगलियां अद्‌भुत तरीके से संवेदनशील होती होंगी और उनमें अपनी इच्छानुसार लंबा हो जाने की जादुई ताक़त होती होगी : मिसाल के तौर पर वह साइबेरिया में अंकुरित हो रहे एक डॉलर पर न्यूयार्क से निगाह में रख सकता था. अपनी सीट से हिले बिना वह बेरिंग स्टेट तक अपना हाथ बढ़ाकर अपना पसंदीदा फूल तोड़ सकता था.

अटपटी बात यह है कि इस सबके बावजूद मैं इस बात की कल्पना नहीं कर पाया कि इस दैत्य का सिर कैसा होता होगा. इसके अलावा मुझे लगा कि वह सिर मांसपेशियों और हड्डियों का ऐसा पिंड होता होगा जिसकी गति को फकत हर एक चीज़ से सोना चूस लेने की इच्छा से प्रेरणा मिलती होगी. लब्बोलुबाब यह है कि करोड़पति की मेरी छवि एक हद तक अस्पष्ट थी. संक्षेप में कहूं तो सबसे पहले मुझे दो लंबी लचीली बांहें नज़र आती थीं. उन्होंने ग्लोब को अपनी लपेट में ले रखा था और उसे अपने मुंह की भूखी गुफा के पास खींच रखा था जो हमारी धरती को चूसता-चबाता जा रहा था : उसकी लालचभरी लार उसके ऊपर टपक रही थी जैसे वह तंदूर में सिंका कोई स्वादिष्ट आलू हो...

आप मेरे आश्चर्य की कल्पना कर सकते हैं जब एक करोड़पति से मिलने पर मैंने उसे एक निहायत साधारण आदमी पाया.

एक गहरी आरामकुर्सी पर मेरे सामने एक बूढ़ा सिकुड़ा-सा शख्स बैठा हुआ था, जिसके झुर्रीदार भूरे हाथ शांतिपूर्वक उसकी तोंद पर धरे हुए थे. उसके थुलथुल गालों पर करीने से हजामत बनाई गई थी और उसका ढुलका हुआ

निचला होंठ बढ़िया बनी हुई उसकी बत्तीसी दिखला रहा था जिसमें कुछेक दांत सोने के थे. उसका रक्तहीन और पतला ऊपरी होंठ उसके दांतों से चिपका हुआ था और जब वह बोलता था उस ऊपरी होंठ में ज़रा भी गति नहीं होती थी. उसकी बेरंग आंखों के ऊपर भौंहें बिल्कुल नहीं थीं और सूरज में तपा हुए उसके सिर पर एक भी बाल नहीं था. उसे देख कर महसूस होता था कि उसके चेहरे पर थोड़ी और त्वचा होती तो शायद बेहतर होता; लाली लिए हुए, गतिहीन और मुलायम वह चेहरा किसी नवजात शिशु जैसा लगता था. यह तय कर पाना मुश्किल था कि यह प्राणी दुनिया में अभी-अभी आया है या यहां से जाने की तैयारी में है...

उसकी पोशाक भी किसी साधारण आदमी जैसी थी. उसका धारण किया हुआ सोना घड़ी, अंगूठी और दांतों तक सीमित था. कुल मिलाकर शायद वह आधे पाउंड से कम था. आमतौर पर वह यूरोप के किसी कुलीन घर के पुराने नौकर जैसा नज़र आ रहा था...

जिस कमरे में वह मुझसे मिला, उसमें सुविधा या सुंदरता के लिहाज से कुछ भी उल्लेखनीय नहीं था. फर्नीचर विशालकाय था, पर बस इतना ही था.

उसके फर्नीचर को देखकर लगता था कि कभी-कभी हाथी उसके घर तशरीफ लाया करते थे.

"क्या आप... आप... ही करोड़पति हैं?" अपनी आंखों पर अविश्वास करते हुए मैंने पूछा.

"हां हां!" उसने सिर हिलाते हुए जवाब दिया.

मैंने उसकी बात पर विश्वास करने का नाटक किया और फ़ैसला किया कि उसकी गप्प का उसी वक़्त इम्तहान ले लूं.

"आप नाश्ते में कितना बीफ़ खा सकते हैं?" मैंने पूछा.

"मैं बीफ़ नहीं खाता" उसने घोषणा की "बस संतरे की एक फांक एक अंडा और चाय का छोटा प्याला..."

बच्चों जैसी उसकी आंखों में धुंधलाए पानी की दो बड़ी बूंदों जैसी चमक आई और मैं उनमें झूठ का नामोनिशान नहीं देख पा रहा था.

"चलिए ठीक है" मैंने संशयपूर्वक बोलना शुरू किया "मैं आपसे विनती करता हूं कि मुझे ईमानदारी से बताइए कि आप दिन में कितनी बार खाना खाते हैं?"

"दिन में दो बार" उसने ठंडे स्वर में कहा "नाश्ता और रात का खाना. मेरे लिए पर्याप्त होता है. रात को खाने में मैं थोड़ा सूप थोड़ा चिकन और कुछ मीठा लेता हूं. कोई फल. एक कप कॉफ़ी. एक सिगार..."

मेरा आश्चर्य कद्दू की तरह बढ़ रहा था. उसने मुझे संतों की-सी निगाह से देखा. मैं सांस लेने को ठहरा और फिर पूछना शुरू किया:

"लेकिन अगर यह सच है तो आप अपने पैसे का क्या करते हैं?"

उसने अपने कंधों को ज़रा उचकाया और उसकी आंखें अपने गड्ढों में कुछ देर लुढ़कीं और उसने जवाब दिया:

"मैं उसका इस्तेमाल और पैसा बनाने में करता हूं..."

"किसलिए?"

"ताकि मैं और अधिक पैसा बना सकूं..."

"लेकिन किसलिए?" मैंने हठपूर्वक पूछा.

वह आगे की तरफ़ झुका और अपनी कोहनियों को कुर्सी के हत्थे पर टिकाते हुए तनिक उत्सुकता से पूछा:

"क्या आप पागल हैं?"

"क्या आप पागल हैं?" मैंने पलट कर जवाब दिया.

बूढ़े ने अपना सिर झुकाया और सोने के दांतों के बीच से धीरे-धीरे बोलना शुरू किया :

"तुम बड़े दिलचस्प आदमी हो... मुझे याद नहीं पड़ता मैं कभी तुम्हारे जैसे आदमी से मिला हूं..."

उसने अपना सिर उठाया और अपने मुंह को क़रीब-क़रीब कानों तक फैलाकर ख़ामोशी के साथ मेरा मुआयना करना शुरू किया. उसके शांत व्यवहार को देख कर लगता था कि स्पष्टत: वह अपने-आपको सामान्य आदमी समझता था. मैंने उसकी टाई पर लगी एक पिन पर जड़े छोटे से हीरे को देखा. अगर वह हीरा जूते की एड़ी जितना बड़ा होता तो मैं शायद जान सकता था कि मैं कहां बैठा हूं.

"और अपने ख़ुद के साथ आप क्या करते हैं?"

"मैं पैसा बनाता हूं." अपने कंधों को तनिक फैलाते हुए उसने जवाब दिया.

"यानी आप नकली नोटों का धंधा करते हैं" मैं ख़ुश होकर बोला मानो मैं रहस्य पर से परदा उठाने ही वाला हूं. लेकिन इस मौक़े पर उसे हिचकियां आनी शुरू हो गईं. उसकी सारी देह हिलने लगी जैसे कोई अदृश्य हाथ उसे गुदगुदी कर रहा हो. वह अपनी आंखों को तेज़-तेज़ झपकाने लगा.

"यह तो मसखरापन है" ठंडा पड़ते हुए उसने कहा और मेरी तरफ़ एक गीली संतुष्ट निगाह डाली. "मेहरबानी कर के मुझसे कोई और बात पूछिए" उसने निमंत्रित करते हुए कहा और किसी वजह से अपने गालों को ज़रा-सा फुलाया.

मैंने एक पल को सोचा और निश्चित आवाज़ में पूछा:
"और आप पैसा कैसे बनाते हैं?"
"अरे हां! ये ठीक-ठाक बात हुई!" उसने सहमति में सिर हिलाया." बड़ी साधारण-सी बात है. मैं रेलवे का मालिक हूं. किसान माल पैदा करते हैं. मैं उनका माल बाज़ार में पहुंचाता हूं. आपको बस इस बात का हिसाब लगाना होता है कि आप किसान के वास्ते बस इतना पैसा छोड़ें कि वह भूख से न मर जाए और आपके लिए काम करता रहे. बाक़ी का पैसा मैं किराए के तौर पर अपनी जेब में डाल लेता हूं. बस इतनी-सी बात है."
"और क्या किसान इससे संतुष्ट रहते हैं?"
"मेरे ख़्याल से सारे नहीं रहते!" बाल-सुलभ साधारणता के साथ वह बोला "लेकिन वो कहते हैं ना लोग कभी संतुष्ट नहीं होते. ऐसे पागल लोग आपको हर जगह मिल जाएंगे जो बस शिकायत करते रहते हैं..."
"तो क्या सरकार आपसे कुछ नहीं कहती?" आत्मविश्वास की कमी के बावजूद मैंने पूछा.
"सरकार?" उसकी आवाज़ थोड़ा गूंजी फिर उसने कुछ सोचते हुए अपने माथे पर उंगलियां फिराईं. फिर उसने अपना सिर हिलाया जैसे उसे कुछ याद आया हो:" अच्छा... तुम्हारा मतलब है वो लोग... वाशिंगटन वाले? ना वो मुझे तंग नहीं करते. वो अच्छे बंदे हैं... उनमें से कुछ मेरे क्लब के सदस्य भी हैं. लेकिन उनसे बहुत ज़्यादा मुलाक़ात नहीं होती... इसी वजह से ऐसा होना ही होता है कि कभी-कभी मैं उनके बारे में भूल जाता हूं. ना वो मुझे तंग नहीं करते." उसने अपनी बात दोहराई और मेरी तरफ़ उत्सुकता से देखते हुए पूछा:
"क्या आप कहना चाह रहे हैं कि ऐसी सरकारें भी होती हैं, जो लोगों को पैसा बनाने से रोकती हैं?"
मुझे अपनी मासूमियत और उसकी बुद्धिमत्ता पर कोफ्त हुई.
"नहीं" मैंने धीमे से कहा "मेरा ये मतलब नहीं था... देखिए सरकार को कभी-कभी तो सीधी-सीधी डकैती पर लगाम लगानी चाहिए ना..."
"अब देखिए!" उसने आपत्ति की" ये तो आदर्शवाद हो गया. यहां यह सब नहीं चलता. व्यक्तिगत कार्यों में दख़ल देने का सरकार को कोई हक़ नहीं..."
उसकी बच्चों जैसी बुद्धिमत्ता के सामने मैं ख़ुद को बहुत छोटा पा रहा था.
"लेकिन अगर एक आदमी कई लोगों को बर्बाद कर रहा हो तो क्या वह व्यक्तिगत काम माना जाएगा?" मैंने विनम्रता के साथ पूछा.
"बर्बादी?" आंखें फैलाते हुए उसने जवाब देना शुरू किया" बर्बादी का

मतलब होता है जब मज़दूरी की दरें ऊंची होने लगें. या जब हड़ताल हो जाए. लेकिन हमारे पास आप्रवासी लोग हैं. वो ख़ुशी-ख़ुशी कम मज़दूरी पर हड़तालियों की जगह काम करना शुरू कर देते हैं. जब हमारे मुल्क में बहुत सारे ऐसे आप्रवासी हो जाएंगे जो कम पैसे पर काम करें और ख़ूब सारी चीज़ें ख़रीदें तब सब कुछ ठीक हो जाएगा.'' उसने अपनी बात दोहराई और मेरी तरफ़ उत्सुकता से देखा. वह थोड़ा-सा उत्तेजित हो गया था और एक बच्चे और बूढ़े के मिश्रण से कुछ कम नज़र आने लगा था. उसकी पतली-भूरी उंगलियां हिलीं और उसकी रूखी आवाज़ मेरे कानों पर पड़पड़ाने लगी:

''सरकार? ये वास्तव में दिलचस्प सवाल है. एक अच्छी सरकार का होना महत्त्वपूर्ण है. उसे इस बात का ख़्याल रहता है कि इस देश में उतने लोग हों जितनों की मुझे ज़रूरत है और जो उतना ख़रीद सकें जितना मैं बेचना चाहता हूं; और मज़दूर बस उतने हों कि मेरा काम कभी न थमे. लेकिन उससे ज़्यादा नहीं! फिर कोई समाजवादी नहीं बचेंगे. और हड़तालें भी नहीं होंगी. और सरकार को बहुत ज़्यादा टैक्स भी नहीं लगाने चाहिए. लोग जो देना चाहें वह मैं लेना चाहूंगा. इसको मैं कहता हूं अच्छी सरकार.''

'वह बेवकूफ नहीं है. यह एक तयशुदा संकेत है कि उसे अपनी महानता का भान है.' मैं सोच रहा था. 'इस आदमी को वाकई राजा ही होना चाहिए...'

''मैं चाहता हूं'' वह स्थिर और विश्वासभरी आवाज़ में बोलता गया ''कि इस मुल्क में अमन-चैन हो. सरकार ने तमाम दार्शनिकों को भाड़े पर रखा हुआ है जो हर इतवार को कम-से-कम आठ घंटे लोगों को यह सिखाने में ख़र्च करते हैं कि क़ानून की इज्जत की जानी चाहिए. और अगर दार्शनिकों से यह काम नहीं होता तो वह फौज बुला लेती है. तरीका नहीं बल्कि नतीजा ज़्यादा महत्त्वपूर्ण होता है. गाहक और मज़दूर को क़ानून की इज्जत करना सिखाया जाना चाहिए. बस!'' अपनी उंगलियों से खेलते हुए उसने अपनी बात पूरी की.

''नहीं यह शख़्स बेवकूफ नहीं है. राजा तो यह हर्गिज नहीं हो सकता.'' मैंने विचार किया और फिर उससे पूछा : ''क्या आप मौजूदा सरकार से संतुष्ट हैं?''

उसने तुरंत जवाब नहीं दिया.

''असल में वो जितना कर सकती है उससे कम कर रही है. मैं कहता हूं : आप्रवासियों को फिलहाल देश में आने देना चाहिए. लेकिन हमारे यहां राजनैतिक आज़ादी है जिसका वो लुत्फ उठाते हैं, सो उन्हें इसकी क़ीमत देनी चाहिए. उनमें से हर किसी को अपने साथ कम-से-कम पांच सौ डॉलर लाने चाहिए. ऐसा

आदमी उस आदमी से दस गुना बेहतर है जिसके पास फकत पचास डॉलर हों. जितने भी बुरे लोग होते हैं : मिसाल के लिए आवारा, ग़रीब, बीमार और बाक़ी ऐसे ही, वो कभी भी किसी काम के नहीं हाते."

"लेकिन" मैंने श्रमपूर्वक कहा "इसकी वजह से आप्रवासियों की तादाद कम होने लगेगी."

बूढ़े ने सहमति में सिर हिलाया.

"मैं प्रस्ताव दूंगा कि कुछ समय के बाद उनके लिए हमारे देश के दरवाज़े हमेशा के लिए बंद कर दिए जाएं... लेकिन फिलहाल के लिए हर किसी को अपने साथ थोड़ा-बहुत सोना लेकर आना चाहिए... जो हमारे देश के लिए अच्छा होगा. इसके अलावा यह भी ज़रूरी है कि यहां के हिसाब से ढलने के लिए उन्हें ज़्यादा समय दिया जाए. समय के साथ-साथ यह सारा पूरी तरह बंद कर दिया जाना चाहिए. अमरीकियों के लिए जो भी काम करना चाहे वह इसके लिए आज़ाद है, लेकिन यह कतई ज़रूरी नहीं कि उन्हें भी अमरीकी नागरिकों की तरह अधिकार दिए जाएं. वैसे भी हमने पर्याप्त अमरीकी पैदा कर लिए हैं. उनमें से हर कोई हमारी आबादी बढ़ा पाने में सक्षम है. यह सब सरकार का सिरदर्द है. लेकिन इस सबको एक दूसरे आधार पर व्यवस्थित किए जाने की ज़रूरत है. सरकार के सारे सदस्यों को औद्योगिक इकाइयों में शेयर दिए जाने चाहिए ताकि वे देश के फ़ायदे की बात अच्छे से और जल्दी सीख सकें. फिलहाल तो मुझे सीनेटरों को ख़रीदना है ताकि मैं उन्हें... इस या उस बात के लिए पटा सकूं. तब उसकी ज़रूरत भी नहीं पड़ेगी."

उसने आह भरी और अपनी टांग को झटकते हुए जोड़ा :

"ज़िंदगी को सही कोण से देखने के लिए आपको बस सोने के पहाड़ की चोटी पर खड़ा होना होता है."

"और धर्म के बारे में आप का क्या ख़्याल है?" अब मैंने प्रश्न किया जबकि वह अपना राजनैतिक दृष्टिकोण स्पष्ट कर चुका था.

"अच्छा!" उसने उत्तेजना के साथ अपने घुटनों को थपथपाया और बरौनियों को झपकाते हुए कहा : "मैं इस बारे में भली बातें सोचता हूं. लोगों के लिए धर्म बहुत ज़रूरी है. इस बात पर मेरा पूरा यक़ीन है. सच बताऊं तो मैं ख़ुद इतवारों को चर्च में भाषण दिया करता हूं... बिल्कुल सच कह रहा हूं आप से."

"और आप क्या कहते हैं अपने भाषणों में?" मैंने सवाल किया.

"वही सब जो एक सच्चा ईसाई चर्च में कह सकता है!" उसने बहुत विश्वस्त होकर कहा, "देखिए मैं एक छोटे चर्च में भाषण देता हूं और ग़रीब

लोगों को हमेशा दयापूर्ण शब्दों और पितासदृश सलाह की ज़रूरत होती है... मैं उनसे कहता हूं...''

एक क्षण को उसके चेहरे पर बच्चों का-सा भाव आया और उसने अपने होंठों को आपस में कस कर चिपका लिया. उसकी निगाह छत की तरफ़ उठी जहां कामदेव के शर्माते हुए चाकर एक मांसल औरत के निर्वसन शरीर को छिपा रहे थे. औरत का बदन यार्कशायर की किसी घोड़ी की तरह गुलाबी था. छत के रंग उसकी बेचमक आंखों में प्रतिबिंबित हुए और उनमें एक कौंध रेंग आई. फिर उसने शांत स्वर में बोलना शुरू किया :

''ईसामसीह के भाइयो और बहनो! ईर्ष्या के दैत्य के लालच से ख़ुद को बचाओ और दुनियादारी से भरी चीज़ों को त्याग दो. इस धरती पर जीवन संक्षिप्त होता है : बस चालीस की आयु तक आदमी अच्छा मज़दूर बना रह सकता है. चालीस के बाद उसे फैक्ट्रियों में रोज़गार नहीं मिल सकता. जीवन कतई सुरक्षित नहीं है. काम के वक़्त आपके हाथों का एक ग़लत काम और मशीन आपकी हड्डियों को कुचल सकती है. एक सनस्ट्रोक और आपकी कहानी ख़त्म हो सकती है. हर क़दम पर बीमारी और दुर्भाग्य कुत्ते की तरह आपका पीछा करते रहते हैं. एक ग़रीब आदमी किसी ऊंची इमारत की छत पर खड़े दृष्टिहीन आदमी जैसा होता है. वह जिस दिशा में जाएगा, अपने विनाश में जा गिरेगा जैसा जूड के भाई फरिश्ते जेम्स ने हमें बताया है. भाइयो, आपको दुनियावी चीज़ों से बचना चाहिए. वह मनुष्य को तबाह करने वाले शैतान का कारनामा है. ईसामसीह के प्यारे बच्चो, तुम्हारा साम्राज्य तुम्हारे परमपिता के साम्राज्य जैसा है. वह स्वर्ग में है. और अगर तुममें धैर्य होगा और तुम अपने जीवन को बिना शिकायत किए बिना हल्ला किए बिताओगे तो वह तुम्हें अपने पास बुलाएगा और इस धरती पर तुम्हारी कड़ी मेहनत के परिणाम के बदले तुम्हें ईनाम में स्थाई शांति बख्शेगा. यह जीवन तुम्हारी आत्मा की शुद्धि के लिए दिया गया है और जितना तुम इस जीवन में सहोगे उतना ज़्यादा आनंद तुम्हें मिलेगा जैसा कि ख़ुद फ़रिश्ते जूड ने बताया है.''

उसने छत की तरफ़ इशारा किया और कुछ देर सोचने के बाद ठंडी और कठोर आवाज़ में कहा:

''हां, मेरे प्यारे भाइयो और बहनो, अगर आप अपने पड़ोसी के लिए चाहे वह कोई भी हो इसे कुर्बान नहीं करते तो यह जीवन खोखला और बेहद आम है. ईर्ष्या के राक्षस के सामने अपने दिलों को समर्पित मत करो. किस चीज़ से ईर्ष्या करोगे? जीवन के आनंद धोखा भर होते हैं; राक्षस के खिलौने. हम सब मारे

जाएंगे, अमीर और ग़रीब, राजा और कोयले की खान में काम करने वाले मज़दूर, बैंकर और सड़क पर झाड़ू लगाने वाले. यह भी हो सकता है कि स्वर्ग के उपवन में आप राजा बन जाएं और राजा झाड़ू लेकर रास्ते से पत्तियां साफ़ कर रहा हो और आपकी खाई हुई मिठाइयों के छिलके बुहार रहा हो. भाइयो, यहां इस धरती पर इच्छा करने को है ही क्या? पाप से भरे इस घने जंगल में जहां आत्मा बच्चों की तरह पाप करती रहती है. प्यार और विनम्रता का रास्ता चुनो और जो तुम्हारे नसीब में आता है उसे सहन करो. अपने साथियों को प्यार दो उन्हें भी जो तुम्हारा अपमान करते हैं..."

उसने फिर से आंखें बंद कर लीं और अपनी कुर्सी पर आराम से हिलते हुए बोलना जारी रखा:

"ईर्ष्या की उन पापी भावनाओं और लोगों की बात पर ज़रा भी कान न दो जो तुम्हारे सामने किसी की ग़रीबी और किसी दूसरे की संपन्नता का विरोधाभास दिखाती हैं. ऐसे लोग शैतान के कारिंदे होते हैं. अपने पड़ोसी से ईर्ष्या करने से भगवान ने तुम्हें मना किया हुआ है. अमीर लोग भी निर्धन होते हैं : प्रेम के मामले में ईसामसीह के भाई जूड ने कहा था, अमीरों से प्यार करो, क्योंकि वे ईश्वर के चहेते हैं. समानता की कहानियों और शैतान की बाक़ी बातों पर ज़रा भी ध्यान मत दो. इस धरती पर क्या होती है समानता? आपको अपने ईश्वर के सम्मुख एक-दूसरे के साथ अपनी आत्मा की शुद्धता में बराबरी करनी चाहिए. धैर्य के साथ अपनी सलीब धारण करो और आज्ञापालन करने से तुम्हारा बोझ हल्का हो जाएगा. ईश्वर तुम्हारे साथ है मेरे बच्चो और तुम्हें उसके अलावा किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है!"

बूढ़ा चुप हुआ और उसने अपने होंठों को फैलाया. उसके सोने के दांत चमके और वह विजयी मुद्रा में मुझे देखने लगा. "आपने धर्म का बढ़िया इस्तेमाल किया" मैंने कहा. "हां बिल्कुल ठीक! मुझे उसकी कीमत पता है." वह बोला "मैं अपनी बात दोहराता हूं कि ग़रीबों के लिए धर्म बहुत ज़रूरी है. मुझे अच्छा लगता है यह. यह कहता है कि इस धरती पर सारी चीज़ें शैतान की हैं. और ए इंसान अगर तू अपनी आत्मा को बचाना चाहता है तो यहां धरती पर किसी भी चीज़ को छूने तक की इच्छा मत कर. जीवन के सारे आनंद तुझे मौत के बाद मिलेंगे. स्वर्ग की हर चीज़ तेरी है. जब लोग इस बात पर विश्वास करते हैं तो उन्हें सम्हालना आसान हो जाता है. हां, धर्म एक चिकनाई की तरह होता है. और जीवन की मशीन को हम इससे चिकना बनाते रहें तो सारे पुर्जे ठीक-ठाक काम करते रहते हैं और मशीन चलाने वाले के लिए आसानी होती है..."

"यह आदमी वाकई में राज है" मैंने फ़ैसला किया.

"और क्या आप अपने आपको अच्छा ईसाई समझते हैं?" सूअरों के झुंड से निकली उस नवीनतम संतति से मैंने बड़े आदर से पूछा.

"बिल्कुल!" उसने पूरे विश्वास के साथ कहा "लेकिन" उसने छत की तरफ़ इशारा करते हुए धीर-गंभीर आवाज़ में कहा "साथ ही मैं एक अमरीकी हूं और कड़ा नैतिकतावादी भी..."

उसके चेहरे पर एक नाटकीय भाव आया और अपने होंठों पर जबान फेरी. उसके कान उसकी नाक के नजदीक आ गए.

"आपका सही-सही मतलब क्या है?" मैंने धीमी आवाज़ में उससे पूछा.

"आपके मेरे बीच की बात है" वह फुसफुसाया "एक अमरीकी के लिए ईसामसीह को पहचानना असंभव है."

"असंभव?" थोड़ा ठहरकर मैंने फुसफुसाते हुए पूछा.

"बिल्कुल" वह सहमत होते हुए फुसफुसाया.

"लेकिन क्यों?" एक क्षण को ख़ामोश हो कर मैंने पूछा.

"उसका जन्म किसी विवाह का परिणाम नहीं था." आंख मारते हुए बूढ़ा अपनी निगाह कमरे में इधर-उधर डालता हुआ बोला. "आप समझ रहे हैं ना? जिसका भी जन्म किसी विवाह का परिणाम न हो उसे तो यहां अमरीका में ईश्वर के बारे में बोलने का अधिकार तक नहीं मिल सकता. भले लोगों के समाज में कोई उसकी तरफ़ देखता भी नहीं. कोई भी लड़की उससे शादी नहीं करेगी. हम लोग बहुत कड़े क़ायदे-क़ानूनों वाले होते हैं. और अगर हम ईसामसीह को स्वीकार करते हैं तो हमें सारे हरामियों को समाज में सम्मानित नागरिकों की तरह स्वीकार करना होगा... चाहे वे किसी नीग्रो और किसी गोरी औरत की पैदाइश क्यों न हों. ज़रा सोचिए कितना हैबतनाक होगा यह सब! है ना!"

ऐसा वास्तव में हैबतनाक होता, क्योंकि बूढ़े की आंखें ठहर गईं और किसी उल्लू की-सी नज़र आने लगीं. अपने निचले होंठ को उसने बमुश्किल ऊपर की तरफ़ खींचा और अपने दांतों से चिपका लिया. उसे यक़ीन था कि ऐसा करने से वह ज़्यादा प्रभावशाली और कठोर नज़र आता होगा.

"और आप किसी भी नीग्रो को सीधे सीधे इंसान नहीं समझते?" एक लोकतांत्रिक देश की नैतिकता से उदास होकर मैंने पूछा.

"आप भी कितने भोले हैं!" उसने मुझ पर दया जताते हुए कहा." एक तो वे काले होते हैं. दूसरे उनसे बदबू आती है. हमें जब भी पता लगता है कि किसी नीग्रो ने किसी गोरी औरत को बीवी बना कर रखा है तो हम तुरंत उसका इंसाफ

कर देते हैं. हम उसकी गरदन पर एक रस्सी बांधकर बिना ज़्यादा सोच-विचार के सबसे नजदीक़ी पेड़ पर लटका देते हैं. जब भी नैतिकता की बात आती है हम लोग बहुत कठोर होते हैं...''

अब उसके लिए मेरी भीतर वह इज्जत जागने लगी जो एक़ सड़ती हुई लाश को लेकर जागती है. लेकिन मैंने एक काम उठाया हुआ था और मैं उसे पूरा करना चाहता था.

''समाजवादियों के लिए आपका क्या रवैया है?''

''वे तो शैतान के असली चाकर हैं!'' उसने अपने घुटने पर हाथ मारते हुए तुरंत जवाब दिया ''समाजवादी जीवन की मशीन में बालू की तरह होते हैं जो हर जगह घुस जाती है और मशीन को ठीक से काम नहीं क़रने देती. अच्छी सरकार के सामने कोई समाजवादी नहीं होना चाहिए. तब भी वे अमरीका में पैदा हो रहे हैं. इसका मतलब यह हुआ कि वाशिंगटन वालों को उनके काम-धंधों की ज़रा भी जानकारी नहीं है. उन्हें समाजवादियों को नागरिक-अधिकारों से वंचित कर देना चाहिए. कुछ तो होगा इससे. मेरा मानना है कि सरकार को वास्तविकता के ज़्यादा नजदीक़ रहना चाहिए. और ऐसा तब हो सकता है जब उसके सारे सदस्य अरबपति हों. असल बात यह है.''

''आप अपनी बातों पर क़ायम रहने वाले इंसान हैं'' मैंने कहा.

''बिल्कुल सही!'' उसने स्वीकार करते हुए अपना सिर हिलाया. उसके चेहरे पर से बच्चों वाला भाव समाप्त हो गया और उसके गालों पर गहरी झुर्रियां उतर आईं.

मैं उससे कला के बारे में कुछ सवाल करना चाहता था.

''आपका रवैया...'' मैंने बोलना शुरू किया पर उसने उंगली ऊंची करते हुए कहा :

''दिमाग़ में नास्तिकता और शरीर में अराजकता : यही होता है समाजवादी. उसकी आत्मा को शैतान ने पागलपन और गुस्से के पंखों से सुसज्जित कर दिया है... समाजवादी से लड़ने के लिए हमें और ज़्यादा धर्म और सिपाहियों की ज़रूरत पड़ेगी. नास्तिकता के लिए धर्म और अराजकता के लिए सैनिक. पहले तो समाजवादी के दिमाग़ को चर्च के उपदेशों से भरा जाए. और अगर इससे उसका उपचार न हो सके तो सैनिकों से कहा जाए कि उसके पेट में गोलियां ठूंस दें.''

उसने ठोस विश्वास के साथ सिर हिलाते हुए कहा:

''शैतान की ताक़त बहुत बड़ी होती है.''

''यक़ीनन ऐसा ही है'' मैंने तुरंत स्वीकार कर लिया.

ऐसा पहली बार हो रहा था कि मुझे सोना नाम के पीले दैत्य की ताक़त और उसके प्रभाव देखने का मौक़ा मिला था. इस बूढ़े की जर्जर हड्डियों वाली कमज़ोर देह ने अपनी त्वचा के भीतर सड़े हुए कूड़े का ढेर छिपा रखा था जो इस वक़्त झूठ और आध्यात्मिक भ्रष्टाचार के परमपिता की ठंडी और क्रूर इच्छाशक्ति के प्रभाव में उत्तेजित हो गया था. बूढ़े की आंखें जैसे दो सिक्कों में बदल गई थीं और वह ज़्यादा ताक़तवर और रूखा दिखने लगा था. अब वह पहले से कहीं ज़्यादा एक नौकर लगने लगा था लेकिन मुझे मालूम चल गया कि उसका मालिक कौन है.

''कला के बारे में आपके क्या विचार हैं?'' मैंने सवाल किया.

उसने मुझे देखा, और अपने चेहरे पर हाथ फिराते हुए वहां से कठोर ईर्ष्या के भाव हटा दिए. एक बार फिर कोई बाल-सुलभ चीज़ उसके चेहरे पर उतर आई.

''क्या कहा आपने?'' उसने पूछा.

''कला के बारे में आपके क्या विचार हैं?''

''ओह'' उसने ठंडे स्वर में जवाब दिया ''मैं उसके बारे में कुछ नहीं सोचता. मैं उसे ख़रीद लेता हूं...''

''मुझे मालूम है. पर शायद कला के बारे में आपके कुछ विचार हों और यह कि आप उससे क्या उम्मीद रखते हैं?''

''ओह शर्तिया. मैं जानता हूं मुझे कला से क्या चाहिए होता है... कला को आपका मनोरंजन करना चाहिए. उसे देख कर मुझे हंसी आनी चाहिए. मेरे धंधे में ऐसा ज़्यादा कुछ नहीं जो मुझे हंसा सके. दिमाग़ को कभी-कभी ठंडाई की ज़रूरत पड़ती है... और शरीर को उत्तेजना की. छतों और दीवारों पर लगे कुलीन चित्रों को भूख बढ़ाने का काम करना चाहिए... विज्ञापनों को सबसे बढ़िया और चमकीले रंगों से बनाया जाना चाहिए. विज्ञापन को आपको एक मील दूर से ललचा देने लायक होना चाहिए ताकि आप तुरंत उसकी मर्जी का काम करें. तब तो कुछ फ़ायदा है. मूर्तियां और गुलदस्ते हमेशा तांबे के बढ़िया होते हैं बजाय संगमरमर या पोर्सलीन के. नौकरों से पोर्सलीन की चीज़ें टूट जाने का ख़तरा बना रहता है. मुर्गियों की लड़ाई और चूहों की दौड़ भी टीक होती है. मैंने उन्हें लंदन में देखा था... मज़ा आया था. मुक्केबाजी भी अच्छी होती है पर यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि मुक़ाबले का अंत किसी हत्या में न हो... संगीत देशभक्तिपूर्ण होना चाहिए. मार्च अच्छे होते हैं पर अमरीकी मार्च सबसे बढ़िया होता है. अच्छा

संगीत हमेशा अच्छे लोगों के पास पाया जाता है. अमरीकी दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं. उनके पास सबसे ज़्यादा पैसा है. इतना पैसा किसी के पास नहीं. इसीलिए बहुत जल्दी सारी दुनिया हमारे पास आएगी...''

जब मैं उस बीमार बच्चे की चटर-पटर सुन रहा था मैंने कृतज्ञता के साथ तस्मानिया के जंगलियों को याद किया. कहते हैं कि वे लोग नरमांस खाते हैं लेकिन उनका सौंदर्यबोध तब भी विकसित होता है.

''क्या आप थिएटर जाते हैं?'' पीले दैत्य के ग़ुलाम से मैंने पूछा ताकि मैं उसकी उस शेखी को रोक सकूं जो वह अपने मुल्क के बारे में बघार रहा था, जिसे उसने अपने जीवन से प्रदूषित कर रखा था.

''थिएटर? हां, हां वह भी कला है!'' उसने आत्मविश्वास के साथ कहा.

''और थिएटर में आपको क्या पसंद है?''

''एक तो वहां बहुत सारी जवान महिलाएं होती हैं जिन्होंने नीची गरदन वाले गाउन पहने होते हैं. आप ऊपर से उन्हें देख सकते हैं ''एक पल सोचने के बाद उसने कहा.

''लेकिन थिएटर में आपको सबसे ज़्यादा क्या पसंद आता है?'' मैंने बेचैन महसूस करते हुए पूछा.

''ओह'' अपने होंठों को क़रीब-क़रीब अपने कानों तक ले जाते हुए उसने कहना शुरू किया. ''जैसा हरेक को लगता है मुझे भी अभिनेत्रियां सबसे ज़्यादा पसंद है... अगर वे सारी जवान और ख़ूबसूरत हों तब. लेकिन तुरंत देख कर आप बता नहीं सकते कि उनमें से कौन-सी जवान है. वे सब इस कदर बनी-संवरी रहती हैं. मेरे ख़्याल से यही उनके पेशे की मांग होती होगी. लेकिन कभी-कभी आपको लगता कि वो लड़की बढ़िया दिखती है! मगर बाद में आपको पता लगता है कि वह पचास साल की है और उसके कम से कम दो सौ आशिक हैं. यह शर्तिया बहुत अच्छा नहीं लगता. सर्कस की लड़कियां उन से कहीं बेहतर होती हैं. वो हमेशा ज़्यादा जवान होती हैं और उनके शरीर लोचदार...''

निश्चय ही इस विषय पर वह उस्ताद की हैसियत रखता था. ख़ुद मैं जो जीवन भर पापों में उलझा रहा था, इस आदमी से काफ़ी कुछ सीख सकता था.

''और आपको कविता कैसी लगती है?'' मैंने पूछा.

''कविता?'' अपने जूतों को देखते हुए उसने मेरी ही बात को दोहराया. उसने एक क्षण को सोचा अपना सिर उठाया और अपने सारे दांत एक ही बार में दिखाता हुआ बोला ''कविताएं? अरे हां! मुझे कविताएं पसंद हैं. अगर हरेक आदमी विज्ञापनों को कविता में लिखना चालू कर दे तो ज़िंदगी बहुत ख़ुशनुमा

हो जाएगी.''

"आपका सबसे प्रिय कवि कौन है?'' मैंने जल्दी-जल्दी अगला सवाल पूछा.

कुछ परेशान होते हुए बूढ़े ने मुझे देख कर धीमे से पूछा: "आपने क्या कहा?''

मैंने अपना सवाल दोहराया.

"हम्म्म्म... आप बड़े मज़ाकिया आदमी हैं'' संशय के साथ अपना सिर हिलाते हुए उसने कहा "मैं क्यों किसी कवि को पसंद करूं? और किसी कवि को किस बात के लिए पसंद किया जाना चाहिए?''

"माफ़ कीजिए'' अपने माथे से पसीना पोंछते हुए मैंने कहा "मैं आपसे पूछ रहा था कि आपकी चेकबुक के अलावा आपकी सबसे पसंदीदा किताब कौन-सी है...''

"वह एक अलग बात है!'' उसने सहमत होते हुए कहा "मेरी सबसे पसंदीदा दो किताबों में एक है बाइबिल और दूसरा मेरा बहीखाता. वे दोनों मेरे दिमाग़ को बराबर मात्रा में उत्तेजित करती हैं. जैसे ही आप उन्हें अपने हाथ में थामते हैं आपको अहसास होता है कि उनके भीतर एक ऐसी ताक़त जो आपको आपकी ज़रूरत का हर सामान उपलब्ध करा सकती है...''

"ये आदमी मेरा मज़ाक़ उड़ा रहा है'' मुझे लगा और मैंने सीधे-सीधे उसके चेहरे को देखा. नहीं. उसकी बच्चों जैसी आंखों ने मेरे सारे संशय दूर कर दिए. वह अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ था अपने खोल में घुसे अखरोट की तरह सिकुड़ा हुआ और यह बात साफ़ थी कि उसे अपने कहे हर शब्द की सच्चाई पर पूरा यक़ीन था.

"हां!'' अपने नाखूनों की जांच करते हुए उसने बोलना जारी रखा "वे शानदार किताबें हैं! एक फरिश्तों ने लिखी और दूसरी मैंने. आपको मेरी किताब में बहुत कम शब्द मिलेंगे. उसमें संख्याएं ज़्यादा हैं. वह दिखाती है कि अगर आदमी ईमानदारी और मेहनत से काम करता रहे तो वह क्या पा सकता है. सरकार मेरी मौत के बाद मेरी किताब छापे तो वह अच्छा काम होगा. लोग भी तो जानें कि मेरी जैसी जगह पर आने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है.''

उसने विजेताओं की-सी मुद्रा बनाई.

मुझे लगा कि साक्षात्कार ख़त्म करने का समय आ चुका है. हर कोई सिर इस कदर लगातार कुचला जाना बरदाश्त नहीं कर सकता.

"शायद आप विज्ञान के बारे में कुछ कहना चाहेंगे?'' मैंने शांति से सवाल किया.

"विज्ञान?" उसने अपनी एक उंगली छत की तरफ़ उठाई. फिर उसने अपनी घड़ी बाहर निकाली. समय देखा और उसकी चेन को अपनी उंगली पर लपेटते हुए उसे हवा में उछाल दिया. फिर उसने एक आह भरी और कहना शुरू किया:

"विज्ञान... हां मुझे मालूम है. किताबें. अगर वे अमरीका के बारे में अच्छी बातें करती हैं तो वे उपयोगी हैं. मेरा विचार ये... कवि लोग जो किताबें-विताबें लिखते हैं बहुत कम पैसा बना पाते हैं. ऐसे देश में जहां हर कोई अपने धंधे में लगा हुआ है, किताबें पढ़ने का समय किसी के पास नहीं है... हां और ये कवि लोग गुस्से में आ जाते हैं कि कोई उनकी किताबें नहीं ख़रीदता. सरकार को लेखकों को ठीक-ठाक पैसा देना चाहिए. बढ़िया खाया-पिया आदमी हमेशा ख़ुश और दयालु होता है. अगर अमरीका के बारे में किताबें वाकई ज़रूरी हैं तो अच्छे कवियों को किराए पर लगाया जाना चाहिए और अमरीका की ज़रूरत की किताबें बनाई जानी चाहिए... और क्या."

"विज्ञान की आपकी परिभाषा बहुत संकीर्ण है." मैंने विचार करते हुए कहा.

उसने आंखें बंद कीं और विचारों में खो गया. फिर आंखें खोलकर उसने आत्मविश्वास के साथ बोलना शुरू किया:

"हां हां... अध्यापक और दार्शनिक... वह भी विज्ञान होता है. मैं जानता हूं प्रोफेसर, दाइयां, दांतों के डाक्टर ये सब. वकील, डॉक्टर, इंजीनियर. ठीक है ठीक है. वो सब ज़रूरी हैं. अच्छे विज्ञान को ख़राब बातें नहीं सिखानी चाहिए. लेकिन मेरी बेटी के अध्यापक ने एक बार मुझे बताया था कि सामाजिक विज्ञान भी कोई चीज़ है... ये बात मेरी समझ में नहीं आई... मेरे ख़्याल से ये नुक़सानदेह चीज़ें हैं. एक समाजशास्त्री अच्छे विज्ञान की रचना नहीं कर सकता उनका विज्ञान से कुछ लेना-देना नहीं होता. एडीसन बना रहा है ऐसा विज्ञान जो उपयोगी है. फोनोग्राफ और सिनेमा -- वह उपयोगी है. लेकिन विज्ञान की इतनी सारी किताबें. ये तो हद है. लोगों को उन किताबों को नहीं पढ़ना चाहिए जिनसे उनके दिमाग़ों में संदेह पैदा होने लगें. इस धरती पर सब कुछ वैसा ही है जैसा होना चाहिए और उस सबको किताबों के साथ नहीं गड़बड़ाया जाना चाहिए."

मैं खड़ा हो गया.

"अच्छा तो आप जा रहे हैं?"

"हां" मैंने कहा "लेकिन शायद चूंकि अब मैं जा रहा हूं क्या आप मुझे बता सकते हैं अरबपति होने का मतलब क्या है?"

उसे हिचकियां आने लगीं और वह अपने पैर पटकने लगा. शायद यह उसके हंसने का तरीका था?

"यह एक आदत होती है" जब उसकी सांस आई वह ज़ोर से बोला.

"आदत क्या होती है?" मैंने सवाल किया.

"अरबपति होना... एक आदत होती है भाई!"

कुछ देर सोचने के बाद मैंने अपना आख़िरी सवाल पूछा:

"तो आप समझते हैं कि सारे आवारा, नशेड़ी और अरबपति एक ही तरह के लोग होते हैं?"

इस बात से उसे चोट पहुंची होगी. उसकी आंखें बड़ी हुईं और गुस्से ने उन्हें हरा बना दिया.

"मेरे ख़्याल से तुम्हारी परवरिश ठीक-ठाक नहीं हुई है." उसने गुस्से में कहा.

"अलविदा" मैंने कहा.

वह विनम्रता के साथ मुझे पोर्च तक छोड़ने आया और सीढ़ियों के ऊपर अपने जूतों को देखता खड़ा रहा. उसके घर के आगे एक लॉन था जिस पर बढ़िया छंटी हुई घनी घास थी. मैं यह विचार करता हुआ लॉन पर चल रहा था कि मुझे इस आदमी से शुक्र है कभी नहीं मिलना पड़ेगा. तभी मुझे पीछे से आवाज़ सुनाई दी:

"सुनिए."

मैं पलटा. वह वहीं खड़ा था और मुझे देख रहा था.

"क्या यूरोप में आपके पास ज़रूरत से ज़्यादा राजा हैं?" उसने धीरे-धीरे पूछा.

"अगर आप मेरी राय जानना चाहते हैं तो हमें उनमें से एक की भी ज़रूरत नहीं है." मैंने जवाब दिया.

वह एक तरफ़ को गया और उसने वहीं थूक दिया.

"मैं अपने लिए दो-एक राजाओं को किराए पर रखने की सोच रहा हूं." वह बोला. "आप क्या सोचते हैं?"

"लेकिन किस लिए?"

"बड़ा मज़ेदार रहेगा. मैं उन्हें आदेश दूंगा कि वे यहां पर मुक्केबाजी कर के दिखाएं..."

उसने लॉन की तरफ़ इशारा किया और पूछताछ के लहजे में बोला:

"हर रोज़ एक से डेढ़ बजे तक. कैसा? दोपहर के खाने के बाद कुछ देर

कला के साथ रहना अच्छा रहेगा... बहुत ही बढ़िया.''

वह ईमानदारी से बोल रहा था और मुझे लगा कि अपनी इच्छा पूरी करने के लिए वह कुछ भी कर सकता है.

''लेकिन इस काम के लिए राजा ही क्यों?''

''क्योंकि आज तक किसी ने इस बारे में नहीं सोचा'' उसने समझाया.

''लेकिन राजाओं को तो ख़ुद दूसरों को आदेश देने की आदत पड़ी होती है'' इतना कह कर मैं चल दिया.

''सुनिए तो'' उसने मुझे फिर से पुकारा.

मैं फिर से ठहरा. अपनी जेबों में हाथ डाले वह अब भी वहीं खड़ा था. उसके चेहरे पर किसी स्वप्न का भाव था.

उसने अपने होंठों को हिलाया जैसे कुछ चबा रहा हो और धीमे से बोला:

''तीन महीने के लिए दो राजाओं को एक से डेढ़ बजे तक मुक्केबाजी करवाने में कितना ख़र्च आएगा आपके विचार से?''

1906

नैतिकता का एक पुरोहित

... वह देर रात मेरे कमरे में आया और चारों तरफ़ संदेहपूर्ण दृष्टि डालने के बाद दबी जुबान में मुझसे पूछने लगा:

"क्या मैं आपके साथ आधा घंटा अकेले में बात कर सकता हूं?"

उसके लहजे और उसकी दुबली और तनिक झुकी हुई देह की भंगिमा में कोई रहस्यमय और गुप्त चीज़ थी. वह घबराता हुआ एक कुर्सी में बैठा जैसे कि फर्नीचर उसकी लंबी तीखी हड्डियों का भार नहीं सह पाएगा.

"क्या आप परदा खींच सकते हैं?" उसने मुलायम स्वर में कहा.

"क्यों नहीं" मैंने कहा और जल्दी वैसा करने को उठा.

उसने कृतज्ञता में सिर हिलाया, खिड़की की तरफ़ देख कर आंखें झपकाई और और भी ज़्यादा मुलायम स्वर में कहा:

"वो सब मेरा पीछा करते रहते हैं."

"कौन?"

"अरे ये संवाददाता लोग."

मैंने उसे बहुत गौर से देखा. हालांकि वह बहुत सलीके के कपड़े पहने था उसे देख कर अहसास होता था कि वह निर्धन है. उसका गंजा सिर विनम्रता में चमक रहा था. सफाचट और बेहद पतला चेहरा; मुस्कराती स्लेटी आंखें जिन पर पलकों की छाया पड़ रही थी. जब उसने पलकें उठाकर मुझे देखा तो मुझे लगा कि मैं एक कम गहरे धुंधले खोखल के सामने हूं. वह अपने पैर कुर्सी पर अंदर की तरफ़ किए बैठा था. उसका दायां हाथ उसके घुटने पर था जबकि बायां वाला डर्बी हैट थामे फ़र्श की तरफ़ लटका हुआ था. उसकी लंबी उंगलियां थोड़ा-सा कांपीं. उसके भिंचे हुए होंठों के किनारे काफ़ी झुके हुए थे, जो इस बात का संकेत थे कि उस शख्स ने अपने कपड़ों के लिए अच्छी-खासी रक़म ख़र्च की होगी.

"मैं आपको अपना परिचय दे दूं" उसांस भरते हुए और आंखों के कोनों से

खिड़की पर निगाह डालते हुए उसने कहना शुरू किया. "सच कहा जाए तो मैं एक पेशेवर पापी हूं..."

"माफ़ कीजिए?" अपनी हैरत को छिपाते हुए मैंने कहा.

"मैं एक पेशेवर पापी हूं" उसने वही शब्द दोहराए और फिर जोड़ा "मेरी विशेषज्ञता सामाजिक नैतिकता के विरुद्ध अपराधों में है..."

जिस लहजे में यह बात कही गई थी उसमें सिवा विनम्रता के कुछ नहीं था; मुझे उसके शब्दों में या उसके चेहरे पर पश्चाताप का अंश तक नज़र नहीं आया.

"थोड़ा पानी पिएंगे आप?" मैंने प्रस्ताव दिया.

"नहीं धन्यवाद" उसने मना किया और क्षमायाचना से भरी उसकी आंखें मुझ पर टिक गईं. "आप मुझे समझ नहीं पा रहे. है ना?"

"मैं सब समझ रहा हूं" मैंने अपने अज्ञान को छिपाते हुए जवाब दिया जैसा कि तमाम यूरोपीय पत्रकारों की आदत होती है. लेकिन ऐसा लगा कि उसने मुझ पर यक़ीन नहीं किया. अपने डर्बी हैट को झुलाते हुए वह विनम्रतापूर्वक मुस्कराया और बोला:

"मैं आपको अपने पेशे के बारे में बतलाता हूं ताकि आप..."

उसने उसांस भरी और अपना सिर झुका लिया. उसकी उसांस की थकान पर मुझे दुबारा से अचरज हुआ.

"आपको याद होगा" अपना हैट धीरे-धीरे हिलाते हुए उसने शुरू किया "अख़बार में एक आदमी के बारे में ख़बर आई थी... शराबी के बारे में? जब थिएटर में फ़साद हुआ था?"

"वो महाशय जो आगे की कतार में बैठे थे और एक हृदय-विदारक दृश्य के आने पर बीच से उठ कर अपना हैट पहन कर टैक्सी मंगवाने के लिए चीख़ने-चिल्लाने लगे थे?"

"जी हां" उसने पुष्टि की और अहसान जैसा करते हुए बतलाया "वह मैं था. और हां 'बच्चे को पीटने वाला राक्षस' वाला लेख भी मुझ पर था. और वह भी जिसका शीर्षक था 'पति ने पत्नी को बेचा'... और वह आदमी जिसने सड़क पर चल रही एक महिला के सामने एक अश्लील प्रस्ताव रखा था. वह भी मैं ही था... आमतौर पर मेरे बारे में हफ़्ते में कम-से-कम एक लेख छपता है और हमेशा तब जब मामला यह साबित करने का होता है कि जनता की नैतिकता किस कदर वंचित है..."

उसने सब कुछ शांतिपूर्वक कहा, बहुत दूरी से जैसे. लेकिन उसमें अपनी बड़ाई करने जैसी भी कोई बात नहीं थी. मैं उसे समझ नहीं पा रहा था, लेकिन मैं

हार नहीं मानना चाहता था. बाक़ी लेखकों की तरह मैंने भी दिखावा किया कि मैं ज़िंदगी और आदमी की रग रग से वाकिफ हूं.

"हूं" मैंने दार्शनिकों की तरह बोलना शुरू किया "और क्या आपको इस तरह अपना समय बिताना पसंद है?"

"जब मैं छोटा था मुझे ऐसा करने में आनंद आता था" उसने जवाब दिया "लेकिन अब मैं पैंतालीस साल का हूं. शादी हो गई और दो बेटियां हैं... और अब यह थोड़ा असुविधाजनक हो गया है कि हर हफ़्ते अख़बार में दो या तीन दफे मुझे नैतिक सड़ांध के स्रोत की तरह पेश किया जाए. और सारे संवाददाता हर समय इस बात पर निगाह रखे रहते हैं कि आप अपना काम समय पर और मेहनत के साथ कर रहे हैं या नहीं..."

अपने आश्चर्य को छिपाने के लिए मुझे खांसना पड़ा. फिर मैंने सहानुभूति जताते हुए पूछा:

"आपको यह कोई बीमारी जैसी है ना?"

उसने अस्वीकृति में अपना सिर हिलाया और हैट से अपने चेहरे पर पंखा झलते हुए उत्तर दिया:

"नहीं यह मेरा पेशा है. मैंने आपको बताया था. मेरी विशेषज्ञता है गलियों और सार्वजनिक जगहों पर छोटे-मोटे फ़साद फैलाना... हमारे ब्यूरो के बाक़ी लोग बड़े काम देखते हैं जिनमें ज़िम्मेदारी अधिक होती है -- जैसे कि बड़े पैमाने पर धार्मिक उन्माद, लड़कियां पटाना, चोरी करना, मगर एक बार में हज़ार डॉलर से ज़्यादा नहीं..." उसने उसांस ली और आगे कहा "और नैतिकता के विरुद्ध दूसरे अपराध... मैं बस छोटे-छोटे फ़साद फैलाता हूं..."

वह इस तरह बात कर रहा था जैसे कोई कारीगर अपने फ़न का बयान करता है. मुझे इससे थोड़ी कुढ़न होने लगी थी और मैंने तंज करते हुए सवाल किया:

"और आप इससे संतुष्ट नहीं होते?"

"नहीं" उसने आराम से जवाब दिया.

उसके जवाब की साधारणता ने मुझे परास्त कर दिया और मेरे भीतर काफ़ी दिलचस्पी पैदा की. कुछ देर बाद मैंने पूछा:

"क्या आप कभी जेल गए हैं?"

"तीन दफे. लेकिन हर बार छोटे-मोटे जुर्माने देकर छूट गया. और ब्यूरो ही जुर्माना भरता है" उसने समझाया.

"ब्यूरो?"

"जी हां. आपको मानना पड़ेगा कि मैं ख़ुद जुर्माना नहीं भर सकता" उसने

मुस्कराते हुए कहा. "चार लोगों के परिवार के लिए हफ़्ते में पचास डॉलर कुछ नहीं होते..."

"मुझे सोचने दीजिए ज़रा" उठते हुए मैंने कहा.

"जी ज़रूर" उसने हामी भरी.

मैं उसके बग़ल से और कमरे में यहां-वहां चहलक़दमी करने लगा. मैं अपनी स्मृति में तमाम तरह की दिमाग़ी बीमारियों के बारे में सोच रहा था. मैं उसकी बीमारी तक पहुंचना चाहता था, पर मुझसे हो नहीं पा रहा था. एक बात साफ़ थी कि उसे मैगालोमैनिया नहीं था. वह अपनी विनम्र मुस्कान और दुबले चेहरे के साथ मुझे देख रहा था और धैर्यपूर्वक इंतज़ार कर रहा था.

"तो एक ब्यूरो है?" उसके सामने पहुंचकर ठहरते हुए मैंने पूछा.

"जी" उसने कहा.

"और वह कई लोगों को रोज़गार देता है?"

"इस शहर में एक सौ पच्चीस आदमी हैं और पिचहत्तर औरतें..."

"इस शहर में? यानी... और शहरों में भी इस तरह के ब्यूरो हैं?"

"बिल्कुल. वो तो सारे मुल्क में हैं." संरक्षक की तर्ज पर मुस्कराता हुआ वह बोला.

मुझे अपने ऊपर दया आने लगी.

"मगर... कैसे... यानी कि" मैंने झिझकते हुए पूछा "... ब्यूरो करते क्या हैं?"

"नैतिकता के नियमों के ख़िलाफ़ अपराध करते हैं." उसने सपाट जवाब दिया और अपनी कुर्सी से उठकर आर्मचेयर पर बैठ गया. वहां पसर कर उसने उत्सुकता के साथ मेरे चेहरे को देखना शुरू किया. स्पष्टत: उसने मुझे कोई जंगली समझा था और अपना श्रेष्ठ व्यवहार करने की बात उसके जेहन में नहीं थी.

"भाड़ में जाए. मैं इस बात से परेशान नहीं होऊंगा और मुझे ज़रा भी इस बारे में जानकारी नहीं है..." मैंने सोचा और अपने हाथों को मलते हुए मैंने ख़ुश होते हुए उससे पूछा:

"बहुत दिलचस्प है वाकई यह सब. मगर ये होते किस लिए हैं...?"

"क्या?"

"नैतिकता के नियमों के ख़िलाफ़ अपराध करने वाले ये ब्यूरो?"

वह हंसा. किसी बच्चे की मूर्खता का मखौल उड़ाने वाली वयस्क हंसी. मैंने उसे देखा और ख़ुद को यह सोचते हुए पाया कि जीवन में सारी बुरी चीज़ों

का स्रोत अज्ञान में होता है.

"आप क्या समझते हैं? आदमी जीना चाहता है. है कि नहीं?" उसने मांग करते हुए कहा.

"ठीक बात है."

"और मज़े उठाना चाहता है?"

"बिल्कुल सही."

वह उठा, मुझ तक आया और मेरे कंधे पर थाप मार कर बोला:

"और बिना नैतिकता के नियमों को तोड़े वह मज़े कैसे उठा सकता है?"

वह वापस गया और मुझे आंख मारता हुआ आरामकुर्सी पर प्लेट में धरी उबली मछली की तरह लधर गया. उसने एक सिगार निकाला और बिना मुझसे पूछे उसे जला लिया. फिर वह बोला:

"कार्बोलिक एसिड के साथ स्ट्राबेरी कौन खाना चाहेगा?"

फिर उसने जलती हुई तीली को फर्श पर गिर जाने दिया.

हमेशा ऐसा ही होता है -- जैसे ही एक आदमी को लगने लगता हे कि वह दूसरे पर सवार हो चुका है वह उसके साथ सूअर की तरह व्यवहार करने लगता है.

"आपको समझने में मुझे दिक्कत हो रही है" उसके चेहरे को देखते हुए मैंने स्वीकार किया.

वह मुस्कराता हुआ बोला:

"मैंने आपकी क्षमताओं का ज़्यादा अनुमान लगा लिया था..."

अपने व्यवहार को और ज़्यादा अशालीन बनाते हुए उसने सिगार की राख को फ़र्श पर गिराया, अपनी आंखों को आधा बंद किया और धुंए के छल्लों को अपनी भौंहों पर उड़ता हुआ देखता मुझसे बोला:

"आपको नैतिकता के बारे में बहुत नहीं मालूम. बात असल में यह है..."

"मेरा सामना नैतिकता से कुछ मौक़ों पर हुआ है" मैंने विनम्रता के साथ प्रतिवाद किया.

उसने सिगार अपने मुंह से बाहर निकाला और उसके सिरे को देखता हुआ दार्शनिकों की तरह बोलने लगा:

"अपना सिर दीवार पर मारने का मतलब यह नहीं होता कि आपने दीवार को समझ लिया है."

"हां, मैं आपसे सहमत हूं. लेकिन मैं बार-बार नैतिकता से टकरा कर वापस आ जाता हूं जिस तरह इंडिया रबर की बनी एक गेंद..."

"यह आपकी परवरिश का सवाल है" उसने फ़ैसला सुनाते हुए कहा.

"हो सकता है" मैंने स्वीकार किया "मैंने आज तक जो सबसे भीषण नैतिकतावादी देखा है वह मेरे दादा थे. स्वर्ग तक जाने वाले सारे रास्ते उन्हें मालूम थे और जो भी उनके सामने पड़ता था, वे उसे उन रास्तों पर धकियाने की कोशिश करते थे. सच्चाई केवल उन्हीं के सामने खुली थी और वे उसका ढोल पीटने में हिचकते नहीं थे और बच्चों के दिमाग़ में उस सच्चाई को डालने के लिए वे उनके सामने जो चीज़ आती थी उसका इस्तेमाल किया करते थे. वे बिल्कुल सही-सही जानते थे कि ईश्वर आदमी से क्या चाहता है और वे बिल्ली-कुत्तों को भी उचित व्यवहार करना सिखाते थे ताकि वे अनन्त आनन्द पा सकें. इसके अलावा वे एक लालची आदमी थे, लोगों से नफ़रत करते थे, झूठ बोलते थे और ऊंची ब्याज-दरों पर ग़रीबों को पैसा उधार देते थे. और एक कायर की क्रूरता के साथ -- जो कि हर नैतिकतावादी का चरित्र होता है -- समूचे घर को आराम से और अपनी सुविधानुसार पीटा करते थे... मैंने इन बुजुर्गवार को समझाने की कोशिश की ताकि वे राह पर आ सकें: एक बार मैंने उन्हें खिड़की से बाहर फेंका; एक दफे मैंने आईने से उनकी धुनाई की. खिड़की और आईने टूट-फूट गए, पर दादाजी पर कोई असर नहीं पड़ा. वे एक नैतिकतावादी की तरह जिए और मरे. और तब से मुझे नैतिकता से नफ़रत हो चुकी है... शायद आप मुझे उसके साथ समझौता करने में मदद कर सकें."

उसने अपनी घड़ी निकाल कर देखी और कहा:

"मेरे पास आपको भाषण देने का समय नहीं है... लेकिन चूंकि मैं यहां आ ही चुका हूं तो शायद दे भी सकता हूं. अगर आप किसी बात को शुरू करते हैं तो आपको उसे ख़त्म भी करना चाहिए. शायद आप मेरे लिए कुछ कर सकें... मैं अपनी बात संक्षेप में रखूंगा..."

उसने अपनी आंखों को दोबारा से आधा बंद किया और प्रभावशाली स्वर में बोलना शुरू किया:

"आपके पास नैतिकता का होना अनिवार्य है -- इस बात का ध्यान रखें! और आपके पास नैतिकता क्यों होनी चाहिए? क्योंकि उससे आपके घर आपकी संपत्ति और अधिकारों की रक्षा होती है. दूसरे शब्दों में कहें इससे आपके पड़ोसी के हितों की रक्षा होती है. 'आपका पड़ोसी' -- वो असल में आप ही होते हैं और कोई नहीं. अगर आपके पास एक सुंदर पत्नी है तो आप सबको बताते हैं: 'आप अपने पड़ोसी की पत्नी को बुरी निगाह से नहीं देखेंगे' अगर आदमी के पास पैसा, बैल, ग़ुलाम, खच्चर हैं और वह ख़ुद मूर्ख नहीं है तो वह नैतिकतावादी है. नैतिकता आपके काम आती रहती है जब आपके पास अपनी ज़रूरत की हर चीज़

है और आप उसे बस अपने लिए रखना चाहते हैं. इस बात का कोई मतलब नहीं अगर आपके पास अपने सिर के बालों के अलावा कुछ नहीं''

उसने अपनी गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरा और अपनी बात को जारी रखा:

''नैतिकता आपके हितों की अभिभावक होती है और आप उसे अपने आसपास के लोगों में उसे रोपते हैं. आप सड़कों-गलियों में पुलिसवालों और जासूसों को तैनात करते हैं और आदमी के दिमाग़ में ठूंस-ठूंस कर सिद्धांतों को भरते हैं जो उसके भीतर उन सारे विचारों को तहस-नहस कर देते हैं, जिनसे आपके अधिकारों को ख़तरा पैदा हो सकता है. जहां-जहां आर्थिक शत्रुता स्पष्ट दिखने लगती है, नैतिकता कठोरतम हो जाती है. जितना ज़्यादा मेरे पास पैसा होगा उतना ही कड़ा नैतिकतावादी मैं होऊंगा. अमरीका में ऐसे काम चलता है. यहां इतने सारे अमीर लोग हैं और वे अपने आपको सौ फ़ीसदी नैतिकतावादी मानते हैं. आप मेरी बात समझे?''

''हां'' मैंने कहा ''लेकिन इसमें ब्यूरो कहां से आया?''

''धैर्य रखिए!'' अपना हाथ ऊंचा करके वह बोला ''सो नैतिकता का उद्देश्य होता है अपने आसपास के लोगों के भीतर इस बात का दबाव डालना कि वे आपके काम में दख़ल न दें. अब अगर आपके पास बहुत-सा पैसा है तो आपके भीतर इच्छाएं भी होंगी और उन्हें संतुष्ट करने के मौक़े भी -- ठीक है? लेकिन आपकी ज़्यादातर इच्छाएं नैतिकता का हनन किए बिना पूरी नहीं हो सकतीं... सो आप क्या कर सकते हैं? आप औरों को वह सब करने का उपदेश नहीं दे सकते जो आप ख़ुद करना नहीं चाहते: यह अटपटा लगेगा और हो सकता है लोग आप पर यक़ीन करना छोड़ दें. आख़िरकार उनमें सारे-के-सारे गधे नहीं होते... मिसाल के लिए आप किसी रेस्त्रां में बैठे हैं और शैंपेन की चुस्कियां ले रहे हैं और एक बहुत सुंदर स्त्री को चूम रहे हैं जो आपकी पत्नी नहीं है... जनता के सामने आपने जो मानदंड रखे हैं उनके हिसाब से यह अनैतिक है. लेकिन स्वयं आपके लिए इस तरह का मनोरंजन ज़रूरी है: यह आपकी मज़ेदार आदत है और इससे आपको बहुत आनंद मिलता है. सो अब आपके सामने समस्या यह है कि इन स्वादिष्ट आदतों से दूर रहने में जैसा आप औरों को सिखाते हैं और ख़ुद आपके उनको पसंद करने के बीच सामंजस्य कैसे बिठाया जाए. एक और उदाहरण लेते हैं : आप सबसे कहते हैं 'चोरी नहीं करनी चाहिए.' क्योंकि आपको कतई अच्छा नहीं लगेगा अगर लोग आपकी संपत्ति चुराना शुरू कर दें. साथ ही जहां एक तरफ़ आपके पास काफ़ी पैसा है आपके दिल में थोड़ा-सा और पैसा चुराने की बेकाबू इच्छा होती है. इसके अलावा आप ख़ुद 'हत्या नहीं करेंगे' के सिद्धांत का

पालन करते हैं. क्योंकि आपको जीवन की क़ीमत मालूम है, क्योंकि जीवन एक मज़ेदार चीज़ है. एक दिन आपकी कोयले की खदानों के मज़दूर वेतन बढ़ाने की बात करते हैं. आप फौज बुला लेते हैं -- आपके पास कोई और चारा नहीं है -- और धड़ाम. कुछेक मज़दूर मारे जाते हैं. या समझ लीजिए आपके माल के लिए बाज़ार नहीं मिल रहा. आप इस बात को अपनी सरकार को बताते हैं और उससे अपने माल के लिए एक नया बाज़ार बनवा लेते है. सरकार अपना फर्ज निभाती है और एशिया या अफ्रीका में कहीं अपनी फौजें भेजकर कुछ सौ या हज़ार लोगों को मार कर आपकी इच्छा पूरी कर देती है... यह सब आपसी भाईचारे और पवित्रता के आपके सिद्धांतों से कतई मेल नहीं खाता. लेकिन लोगों को गोली से उड़वा देने की बात को आप इस तर्क से न्यायोचित ठहरा सकते हैं कि वह सरकार के हित के लिए था, जो तब रहेगी ही नहीं अगर लोग आपके सामने नतमस्तक न रहें. सरकार माने आप -- अगर आप कोई हस्ती हैं तो. छोटी-छोटी चीज़ों से आपके लिए बड़ी मुश्किल है: सस्ता जीवन, चोरी वगैरह-वगैरह. आमतौर पर धनी व्यक्ति की स्थिति बड़ी त्रासद होती है. उसके लिए यह बेहद ज़रूरी है कि सारे लोग उससे प्यार करें, उसकी संपत्ति को हानि पहुंचाने के षड्यंत्र रचने से बचें, उसकी आदतों में ख़लल न डालें, और उसकी पत्नी, बहनों और बेटियों की पवित्रता की इज्जत करें. ख़ुद उसके लिए दूसरी तरफ़ लोगों को प्यार करने की कोई ज़रूरत नहीं, न चोरी से दूर रहने की, न स्त्रियों की पवित्रता की इज्जत करने की वगैरह वगैरह -- असल में सच्चाई इसके बिल्कुल उलट है! वह सब उसकी गतिविधियों में बाधा डालेगा और उसकी सफलता के रास्ते में आएगा. नियमानुसार उसका जीवन चोरी के अलावा कुछ नहीं है : वह हज़ारों लोगों को लूटता है, सारे देश को लूटता है -- पूंजी की बढ़ोत्तरी के लिए यह ज़रूरी है यानी कि देश की तरक्की के लिए -- समझे? वह दर्जनों की संख्या में औरतों के साथ सोता है -- आरामपसंद व्यक्ति के लिए यह बहुत आनंददायी मनोरंजन है. उसे और किसे प्यार करना है? उसके लिए सारे लोग दो समूहों में बंटे होते हैं: एक वह जिसे वह लूटता है और दूसरा वह जो लूटने में उसके साथ प्रतिस्पर्धा करता है.''

विषय का जानकार होने की ख़ुशी के कारण मेरे वक्ता महोदय ने मुस्कान फेंकी और सिगार की ठुड्डी को कोने में फेंकते हुए अपना भाषण जारी रखा.

''इस तरह नैतिकता रईस आदमी के लिए उपयोगी होती है और आमतौर पर बाक़ी लोगों के लिए बुरी. लेकिन दूसरी तरफ़ नैतिकता उसके लिए सतही

और दूसरों के लिए आवश्यक होती है. इसीलिए नैतिकतावादी लोगों के दिमाग़ों के भीतर नैतिकता के नियमों को ड्रिल कर के घुसाते हैं, लेकिन ख़ुद उसे बाहर से पहनते हैं, जैसे कोई टाई या दस्ताना. अगला सवाल यह है कि लोगों को कैसे समझाया जाए कि उन्हें नैतिकता के सामने समर्पण कर देना चाहिए? चोरों के बीच कोई भी ईमानदार नहीं होना चाहता. अगर आप उन्हें समझा नहीं सकते तो उन्हें जादू से बांध लीजिए! उससे हमेशा काम बन जाता है...''

उसने ज़ोर देकर सिर हिलाया और मेरी तरफ़ आंख मारते हुए अपनी बात दोहराई:

''अगर आप उन्हें समझा नहीं सकते तो उन्हें जादू से बांध लीजिए!''

फिर उसने अपना हाथ मेरे घुटने पर रखा और मेरे चेहरे पर निगाह डालने के बाद आवाज़ नीची करते हुए कहा:

''इसके बाद की हर बात हम दोनों के बीच रहेगी.''

मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया.

''मैं जिस ब्यूरो के साथ काम करता हूं वह जनता के विचारों को जादू से बांधने का काम करता है. यह अमरीका की एक बेहद ओरिजिनल संस्था है. मैं बताता हूं आपको इस बारे में.'' उसने किंचित गर्व के साथ कहा.

''देखिए'' वह बोला ''हमारा देश केवल पैसा बनाने के विचार पर जीवित रहता है. यहां हर कोई अमीर बनना चाहता है और आपके साथ काम करने वाली बस एक ऐसी चीज़ है जिससे सोने के कुछ कण तो कभी भी खींचे जा सकते हैं. और जीवन की पूरी प्रक्रिया मानवीय रक्त और मांस से सोना निकालने की प्रक्रिया होती है. इस देश के लोग -- और मैंने सुना है बाक़ी जगहों के भी -- बस खनिज भर होते हैं जिनसे पीली धातु निकाली जाती है; प्रगति का मतलब होता है लोगों की शारीरिक-शक्ति का केंद्रीकरण यानी आदमी के मांस, हड्डियों और नसों का सोने के रूप में तब्दील हो जाना. जीवन को बड़ी आसानी के साथ व्यवस्थित किया गया है...''

''क्या यह आपके अपने विचार हैं?'' मैंने सवाल किया.

''ये? नहीं हर्गिज नहीं'' उसने घमंड के साथ कहा ''यह तो किसी की कल्पना है... मुझे नहीं पता यह मेरे विचारों में कैसे घुस गई... इस बारे में मैं तभी बताता हूं जब मैं उन लोगों से बात कर रहा होता हूं जो... सामान्य नहीं होते. ख़ैर आगे बढ़ा जाए. यहां लोगों के पास बुरी आदतों में गंवाने को समय नहीं है -- उसके लिए उनके पास ख़ाली समय होता ही नहीं. कड़ी मेहनत के घंटे उसे इस कदर थका देते हैं कि ख़ाली समय में पाप करने के लिए न उसके पास ताक़त

बचती है न इच्छा. लोगों के पास सोचने का समय नहीं होता, उनके पास किसी चीज़ इच्छा करने की ताक़त नहीं होती, वे अपने काम में जीवित रहते हैं और काम करने के लिए जीवित रहते हैं, और इस वजह से उनका जीवन बेहद नैतिक बना रहता है. अपवाद के तौर पर किसी छुट्टी के दिन कुछ लोग एकाध नीग्रो को टांग देते हैं, लेकिन इस बात से नैतिकता पर कतई आंच नहीं आती, क्योंकि एक तो नीग्रो गोरा नहीं होता दूसरे यह देश उनसे अटा पड़ा है. हर कोई शालीन व्यवहार करता है और पुराने ज़माने की नैतिकता के भीतर बंद इस बोझिल जीवन में नैतिक सिद्धांतों से ज़रा भी इधर-उधर भटकना कालिख की तरह नज़र आ जाता है. यह बात अच्छी भी है और बुरी भी. उच्चवर्ग को निम्नवर्ग के इस व्यवहार पर गर्व होता है पर इस तरह का व्यवहार ख़ुद उच्चवर्ग के जीवन को घोंटने लगता है. उनके पास पैसा है -- इसका मतलब हुआ कि वे नैतिकता के बारे में ज़रा भी सोचे बिना अपनी मनमर्जी का काम करें. अमीर लोग लालची होते हैं, खाऊ, वासना से भरे, ख़ाली और नैतिकता से बेजार. बढ़िया मिट्टी पर झाड़ियां उगती हैं और संतुष्टि की मिट्टी पर वासना. तो क्या किया जाए? नैतिकता को छोड़ दिया जाए? यह असंभव है, क्योंकि यह मूर्खतापूर्ण होगा. अगर आपके हितों के लिए ज़रूरी है कि लोग नैतिक बने रहें तो कोशिश कीजिए आप अपनी बुरी आदतों को छुपा कर रखिए... बस. कोई नई बात नहीं है इसमें...''

उसने अपने कंधे उचका कर देखा और अपनी आवाज़ को और भी नीचे लाकर बोला:

''सो न्यूयार्क के कुछ रईसों को एक बेहतरीन विचार आया. उन्होंने तय किया कि इस देश में नैतिकता के नियमों के अतिउल्लंघन की एक गुप्त संस्था बनाई जाए. चंदे से अच्छी-खासी रक़म जमा हो गई और जनता के विचारों को जादू से बांधने के उद्देश्य से एक ब्यूरो बनाया गया. इसे गुप्त रूप से कई शहरों में खोला गया. और बंदे की तरह के कई लोगों को नौकरी पर रखा गया और उन्हें नैतिकता के ख़िलाफ़ अपराध करने का ज़िम्मा सौंपा गया. हर एक ब्यूरो का मुखिया कोई वफ़ादार और अनुभवी आदमी होता है जो तमाम ऑपरेशनों का निर्देशन करता है और कर्मचारियों को अलग-अलग काम बांटता है... नियम तो यह है कि यह मुखिया हमेशा किसी अख़बार का संपादक होता है...''

''मुझे ब्यूरो का उद्देश्य समझ में नहीं आया'' नाख़ुश होते हुए मैंने कहा.

''बहुत सामान्य-सी बात है'' उसने जवाब दिया. अचानक उसके चेहरे पर तनाव और स्नायुविक आशा का भाव आ गया. वह उठा और अपने हाथ पीठ पर

लगाकर कमरे में चहलक़दमी करनी शुरू कर दी.

"बहुत सामान्य-सी बात है" उसने ख़ुद को दोहराया "मैंने आपको पहले भी बताया था कि निचले तबके के लोग बहुत ज़्यादा पाप नहीं करते. उनके पास समय ही नहीं होता. दूसरी तरफ़ यह भी ज़रूरी है कि नैतिकता के ख़िलाफ़ काम किए जाएं. आख़िर आप उसे किसी बांझ औरत की तरह अकेला नहीं छोड़ सकते. नैतिकता के बारे में लगातार एक कोलाहल चलता रहना चाहिए ताकि जनता के कान बहरे होते रहें और उसे सच सुनने को कभी न मिले. अगर आप नदी में ढेर सारे कंकड़ फेंकें तो उनके बग़ल से एक बड़ा लठ्ठा बिना लोगों की निगाह में आए निकल सकता है. या अगर आप बिना बहुत सावधानी बरते अपने पड़ोसी की जेब से उसका बटुआ निकालते हैं, लेकिन तुरंत ही फुटपाथ पर मुठ्ठीभर चने चुराकर भाग रहे बच्चे की तरफ़ लोगों का ध्यान बंटा देते हैं तो आप बच जाएंगे. बस आपको चिल्लाना है: "पकड़ो-पकड़ो" और अपनी पूरी ताक़त से. हमारा ब्यूरो बहुत सारी छोटी-छोटी वारदातें करता है ताकि बड़े पापों पर किसी की निगाह न जा सके."

उसने उसांस ली और कमरे के बीचोबीच जा कर ठहर गया. बहुत देर तक वह कुछ नहीं बोला.

"मिसाल के लिए शहर में अफ़वाह उड़ने लगती है कि एक सम्मानित नागरिक अपनी बीवी को पीटता है. ब्यूरो तुरंत मुझे और बाक़ी कर्मचारियों को आदेश देता है कि हम अपनी बीवियों को पीटें. हम तुरंत वैसा ही करते हैं. बीवियों को यह पता ही होता है, पर वे अपनी पूरी ताक़त से चिल्लाती हैं. सारे अख़बार इस बारे में लिखते हैं और इससे उपजने वाले कोलाहल में सम्मानित नागरिक के बारे में उड़ रही अफ़वाहें थम जाती हैं. अफ़वाह पर कौन ध्यान दे, जब आपके सामने ठोस तथ्य मौजूद है? या हो सकता है कि अफ़वाहें उड़ने लगें कि सीनेट के सदस्य रिश्वत लेते हैं. ब्यूरो तुरंत कई सारे पुलिस अधिकारियों द्वारा रिश्वत लिए जाने की घटनाओं को जनता के सामने रख देता है. एक बार फिर तथ्यों के सामने अफ़वाहें डूब जाती हैं. ऊंची सोसाइटी में कोई साहब किसी महिला का अपमान कर देते हैं. इस बात की तुरंत व्यवस्था कर दी जाती है कि होटलों और सड़कों पर कई सारी महिलाओं का अपमान किया जाए. ऊंची सोसाइटी वाले साहब का अपराध इस तरह के अपराधों की शृंखला में खो जाता है. तो हर चीज़ में इस तरह होता है सब कुछ. यही करता है ब्यूरो."

वह खिड़की तक गया और सावधानी से बाहर देखने के बाद वापस बैठ गया. उसने उसी दबी जुबान में कहना जारी रखा:

"ब्यूरो अमरीका के उच्च-वर्ग को जनता के फ़ैसले से बचा कर रखता है. साथ ही नैतिकता के विरुद्ध हो रहे अपराधों को लेकर एक सतत् कोलाहल बनाया जाता है ताकि लोगों को छोटी वारदातों के अलावा कुछ और के बारे में सोचने का अवसर न मिले और रईसों के पाप ढंके रहें. लोग एक तरह के स्थाई जादू से बंधे रहते हैं और उन्हें अपने बारे में सोचने का समय नहीं मिलता. वे उसी पर विश्वास करते हैं, जो उन्हें अख़बारों में बताया जाता है. सारे अख़बार अरबपतियों के हैं और ब्यूरो को भी वहीं से पैसा मिलता है... समझे आप. लेकिन आइडिया यह बेहतरीन है..."

वह चुप होकर सिर झुकाए कुछ सोचने लगा.

"धन्यवाद" मैंने कहा "आपने मुझे बहुत सारी दिलचस्प बातें बतलाईं."

उसने सिर उठाया और बहुत उदासी से मुझे देखा.

"ह... आं निश्चय ही यह दिलचस्प है." वह कुछ सोचता हुआ बोल रहा था, "पर अब मैं इस सबसे थकने लगा हूं. मैं परिवार वाला आदमी हूं. तीन साल पहले मैंने अपना मकान बनवाया है... मैं कुछ आराम करना चाहता. यह मेरा धंधा बहुत थकाऊ होता है. यक़ीन मानिए नैतिकता के सिद्धांतों की इज्जत करना बहुत मुश्किल होता है. देखिए: शराब पीना मेरे लिए अच्छा नहीं, पर मुझे पी कर धुत्त होना होता है. मैं अपनी बीवी से प्यार करता हूं और मुझे घर की शांत ज़िंदगी पसंद है, लेकिन मुझे होटलों में दंगा करना होता है और अपने को लगातार अख़बार में देखना होता है... हालांकि वहां मेरा असली नाम नहीं होता लेकिन... किसी दिन मेरा नाम भी आ जाएगा और फिर... फिर मुझे शहर छोड़ना होगा... मुझे सलाह चाहिए... मैं आपकी राय मांगने आया हूं... एक धंधे के बारे में... बहुत अजीबोग़रीब धंधे के बारे में."

"बोलिए."

"देखिए" उसने शुरू किया "मैं बताता हूं सब. नीचे दक्षिणी सूबों में उच्चवर्ग के लोगों ने नीग्रो रखैलें रखना शुरू कर दिया है... एक साथ दो या तीन. लोगों ने इस बारे में बात करना चालू कर दिया है. पत्नियों को यह सब पसंद नहीं है. कुछेक अख़बारों को इन पत्नियों ने चिठ्ठियां लिख कर अपने पतियों के कारनामों को उजागर किया है. एक बड़ा कांड हो सकता है. ब्यूरो ने तुरंत अपना काम करना शुरू कर दिया है. तेरह एजेंटों को अपने लिए नीग्रो रखैलें रखने को कहा गया है और मैं भी उन में एक हूं. एक साथ दो या तीन..."

वह बेचैन हो कर खड़ा हुआ और अपना हाथ अपने सीने की जेब में डालते हुए उसने घोषणा की:

"मैं नहीं कर सकता यह सब! मैं अपनी पत्नी से प्यार करता हूं... और वैसे भी वह मुझे ऐसा करने नहीं देगी! चाहे एक ही रखने की बात क्यों न होती!"

"तुम मना क्यों नहीं कर देते?"

उसने मुझे दया-भाव से देखा.

"और हर हफ़्ते के पचास डॉलर मुझे कौन देगा? और काम ठीक हो जाने पर बोनस? ना ना आप अपने पास रखें अपनी सलाह... अमरीकी आदमी मरने के बाद भी पैसा लेने से इंकार नहीं करता. कुछ और सोचिए."

"मेरे ख़्याल से यह मुश्किल है" मैंने कहा.

"मुश्किल? आपको क्या मुश्किल है? नैतिकता के लिहाज से आप यूरोपियन लोग ढीले होते हैं... इसे लेकर आप लोग बदनाम हैं." उसने इस बात को इतने विश्वास के साथ कहा मानो वह सच हो.

"देखिए" वह मेरी तरफ़ झुकता बोलता गया "आपके ज़रूर कोई यूरोपियन दोस्त होंगे? मुझे पक्का है होंगे!"

"उनसे तुम्हें क्या चाहिए?"

"उनसे मुझे क्या चाहिए?" वह एक क़दम पीछे ठिठका "मैं आपसे कह रहा हूं. ये नीग्रो लड़कियों वाला काम मुझसे नहीं होगा. आप ख़ुद फ़ैसला कीजिए: मेरी बीवी इसकी इजाजत नहीं देगी और मैं उससे प्यार करता हूं. ना मैं कतई नहीं कर सकता..."

उसने अपना सिर तेज़-तेज़ हिलाया और उसकी गंजी सतह पर हाथ फेरने के बाद मनाने की तर्ज पर बोलना शुरू किया:

"हो सकता है आप इस काम के लिए कुछ यूरोपीयों के नाम सुझा सकें? चूंकि वे नैतिकता को कुछ नहीं समझते उनके लिए ये कोई बड़ी बात नहीं होगी. कोई ग़रीब आप्रवासी शायद? मैं उन्हें हर हफ़्ते दस डॉलर दूंगा -- ठीक है ना? नीग्रो लड़कियों के साथ मैं ही जो करना होगा करूंगा... असल में सारा काम मैं ही करूंगा -- उसको बस इतना देखना है कि बच्चे पैदा हो... यह सब आज रात ही तय होना है... ज़रा सोचिए दक्षिण में कितना बड़ा कांड होने जा रहा है अगर जल्द ही इसे बहुत सारे झूठों तले दफ़नाया नहीं गया! अगर नैतिकता को जीतना है तो खोने के लिए ज़रा भी समय नहीं है..."

... जब वह कमरे से जा चुका था, मैंने खिड़की के ठंडे शीशे पर अपना हाथ रखा जो उसकी खोपड़ी के कारण चोटिल हो गया था.

वह नीचे खड़ा मुझे इशारे कर रहा था.

"क्या चाहिए अब?" मैंने खिड़की खोलते हुए पूछा.

"मैं अपना हैट भूल गया" उसने विनम्र होते हुए कहा.

मैंने फ़र्श से उसका डर्बी हैट उठाया और सड़क की तरफ़ उछाल दिया. जब मैं खिड़की बंद कर रहा था, मैंने उसे एक और व्यावसायिक प्रस्ताव देते सुना:

"मान लीजिए मैं हफ़्ते में पंद्रह डॉलर दूं तो! घाटे का सौदा नहीं है!"

1906

जीवन के ईश्वर

"मेरे साथ चलो सत्य के झरने तक!" हंसते हुए शैतान ने मुझसे कहा और मुझे क़ब्रिस्तान में ले गया.

जब हम पुरानी क़ब्रों के पत्थरों और लोहे के स्लैबों के बीच घुमावदार रास्ते पर चल रहे थे उसने उस पुराने प्रोफेसर की तरह थकी हुई आवाज़ में बोलना शुरू किया जो अपना बंजर ज्ञान बांटने से आजिज आ गया हो.

"तुम्हारे पैरों तले" वह मुझसे बोला "वे नियम-निर्माता लेटे हुए हैं जिनके बताए रास्ते पर तुम चलते हो. अपने बूट के तलुवे से तुम उन बढ़इयों और लोहारों की राख उड़ा रहे हो, जिन्होंने तुम्हारे भीतर के पशु के लिए पिंजरा तैयार किया था."

ऐसा कहते हुए उसने अट्टहास किया जिसमें लोगों के लिए ख़ौफ़नाक नफ़रत भरी हुई थी. उसकी प्रताड़ित आंखों की ठंडी हरी चमक क़ब्रों की घास और कुतबों पर के ढेरों पर गिरी. मृतकों की सघन मिट्टी के भारी ढेले मेरे पैरों से चिपक गए थे और उन क़ब्रों के पत्थरों के बीच से चलना मुश्किल हो रहा था, जिनके भीतर सांसारिक ज्ञान सोया हुआ था.

"ए इंसान ! तुम क्यों नहीं कृतज्ञता में इन लोगों की धूल के सामने सिर नवाते हो, जिन्होंने तुम्हारी आत्मा को सांचे में ढाला था" शैतान ने ऐसी आवाज़ में कहा जो शरद की नम हवा के झोंके जैसी थी. उसे सुन कर मेरी रीढ़ में कंपन हुआ और मेरा दिल उदासी से ठंडा पड़ गया. पुरानी क़ब्रों के ऊपर विषाद भरे पेड़ धीरे-धीरे हिल रहे थे और उनकी ठंडी गीली शाखें मेरे चेहरे को सहला रही थीं.

"नकली मुद्रा बनाने वालों को श्रद्धांजलि दो! ये थे वे लोग जिन्होंने तुच्छ और स्लेटी विचारों का झुंड पैदा किया जो तुम्हारी बुद्धि की रेजगारी हैं. ये थे वे लोग जिन्होंने तुम्हारी आदतें बनाईं और तुम्हारी ईर्ष्याएं और वह सब जिसके साथ तुम ज़िंदा रहते हो. उन्हें धन्यवाद दो कि वे तुम्हारे लिए इतनी बड़ी विरासत

छोड़ गए.

हौले से पीली पत्तियां मेरे सिर पर से होकर गिरती हुईं मेरे पैरों पर ठहर रही थीं. क़ब्रिस्तान की मिट्‌टी ने एक लाल्‌ची आवाज़ निकालते हुए अपने इस ताज़ा भोजन का आनंद लेना शुरू किया: शरद की मृत पत्तियां.

"यहां लेटा हुआ है एक दर्ज़ी जिसने लोगों की आत्माओं के लिए ईर्ष्या के भारी स्लेटी लबादे तैयार किए. क्या तुम उसे देखना चाहोगे?"

मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया. शैतान ने एक क़ब्र के ऊपर के एक जंग खाए स्लैब पर लात मारी, लात मारी और कहा:

"सुनो तुम लेखक! उठो चलो..."

स्लैब उठा. कीचड़ के खिसकने की भारी आह सुनाई दी और कीड़ों के खाए किसी बटुए जैसी एक खोखली क़ब्र नज़र आई. उसके गीले अंधेरे में से एक शिकायतभरी आवाज़ आई:

"बारह के बाद मृतकों को जगाए जाने के बारे में किसी ने सुना है क्या?"

"देखा?" शैतान बोला "जीवन के नियम बनाने वाले सड़ चुकने के बाद भी अपने को लेकर सच्चे होते हैं."

"अरे आप हैं मालिक?" क़ब्र के किनारे पर ख़ुद को टिकाते हुए और अपनी खोखली खोपड़ी को खड़खड़ाते हुए कंकाल ने शैतान का अभिवादन किया.

"हां मैं हूं" शैतान ने जवाब दिया "मैं अपने एक दोस्त को तुमसे मिलाने लाया हूं... वह उन लोगों के बीच उल्लू बन चुका है जिन्हें तुमने अक्ल सिखाई थी. और अब वह उसके मूल स्रोत के पास आया है ताकि वहां से लगी बीमारी का इलाज करा सके..."

मैंने बहुत इज्जत के साथ संत को देखना शुरू किया. उसके सिर का सारा मांस गल चुका था लेकिन चेहरे से अतितृप्ति का भाव ग़ायब नहीं हुआ था. हरेक हड्‌डी इस चेतना के साथ चमक रही थी कि वह एक संपूर्ण और अद्वितीय प्रणाली का हिस्सा है...

"हमें बताओ तुमने धरती पर क्या किया" शैतान ने प्रस्ताव रखा.

बहुत तड़क-भड़क के साथ वह मृतक शांत हो गया. उसकी बांहों और पसलियों से कफन के गहरे रंग के टुकड़े लटक रहे थे जैसे वे किसी कंगाल के चीथड़े हों. फिर उसने घमंड के साथ अपनी दाईं बांह की हड्‌डी को कंधे के स्तर तक उठाया और अपनी उंगली के जोड़ से क़ब्रिस्तान के अंधकार की तरफ़ इशारा करते हुए ठंडी आवाज़ में शांति से बोलना प्रारंभ किया:

"मैंने दस बड़ी किताबें लिखीं जिन्होंने लोगों के दिमाग़ में इस महान विचार को गहराई से उकेर दिया कि गोरे लोगों की जाति कालों से बेहतर है..."

"सच्चाई की भाषा में अनुवाद किया जाए तो" शैतान ने अपनी तरफ़ से जोड़ते हुए कहा "यह इस तरह सुनाई देगा: मैं जो एक अधपागल बूढ़ी नौकरानी हूं मैंने पूरी ज़िंदगी अपने दिमाग़ की कुंद सुई की मदद से तार-तार विचारों की ऊन से उन लोगों के लिए मूर्ख टोपियां बनाईं जो अपनी खोपड़ियों को गरम रखना चाहते हैं..."

"क्या तुम्हें उसे नाराज़ करने से डर नहीं लगता?" मैंने धीरे-से शैतान से पूछा.

"ओह! अक्लमंद लोग तब भी सच्चाई को कान नहीं देते जब वे ज़िंदा होते हैं." शैतान ने जवाब दिया.

"सिर्फ़ यह गोरी नस्ल ही" संत ने अपनी बात जारी रखी "इतनी विकसित सभ्यता का निर्माण कर सकती थी और इतने कठोर नैतिक सिद्धांतों का. इसकी त्वचा का रंग और इसके रक्त की रासायनिक-संरचना के कारण ऐसा संभव हुआ जैसा कि मैंने प्रमाणित किया था..."

"इसने साबित किया" सहमत होते हुए शैतान ने कहा "कि यूरोपियन के अलावा ऐसा कोई भी जंगली नहीं होता जो अपने इस विश्वास से कभी नहीं डिगता कि क्रूरता उसका जन्मसिद्ध अधिकार होता है..."

"ईसाई-धर्म और मानवतावाद गोरी जाति द्वारा बनाए गए थे" मृत व्यक्ति कहता गया.

"फरिश्तों की ऐसी जाति जिसे दुनिया पर शासन करना चाहिए" शैतान बीच में बोल उठा "इसीलिए वे अपने बालों को इतने उत्साह के साथ अपने सबसे प्रिय रंग में रंगते हैं -- लाल, ख़ून का रंग..."

"उन्होंने महान साहित्य और चमत्कारिक मशीनों की रचना की" अपनी उंगली की हड्डियों को तड़काते हुए मृतक ने कहा...

"कोई तीस बढ़िया किताबें और आदमी को ख़त्म करने के लिए असंख्य बंदूक़ें..." हंसते हुए शैतान ने समझाया "गोरों के संसार से अलग और कौन-सी ऐसी जगह है जहां जीवन इस कदर टूटा हुआ है और आदमी को इतना नीचा दिखाया जाता है."

"क्या यह नहीं हो सकता कि शैतान हमेशा सही न होता हो?" मैंने हिम्मत कर के पूछा.

"यूरोपियनों की कला असीम ऊंचाई तक पहुंच चुकी है" उखड़े और धीमे

स्वर में कंकाल बोला.

"बेहतर होगा तुम यह कहो कि शैतान चाहता है कि उसे ग़लत समझा जाए !" मेरे साथी ने समझाया "हमेशा सही होना बुरी तरह उबाने वाला होता है. लेकिन आदमी इसीलिए ज़िंदा रहता है कि मेरी नफ़रत को बढ़ाए... अश्लीलता और झूठ के बीज ही दुनिया में सबसे अच्छी फ़सल देते हैं. उन्हें बोने वालों में से एक यहां तुम्हारे सामने है. औरों की ही तरह इसने भी कुछ नया नहीं किया. इसने पुरानी लाशों को नए शब्दों का चोला पहना कर पुनर्जीवित किया... क्या किया गया है धरती पर? बहुत कम लोगों के लिए महल बनाए गए हैं जबकि ज़्यादातर के लिए गिरजाघर और फैक्ट्रियां. गिरजाघर में आत्माओं को कुचला जाता है और फैक्ट्रियों में शरीरों को ताकि महल बने रह सकें... आदमियों को कोयला और सोना निकालने के लिए धरती में गहरे नीचे भेजा जाता है और उस बेइज्जतीभरे काम के एवज में उन्हें सीसा और इस्पात लगी डबलरोटी का एक टुकड़ा मिलता है."

"क्या तुम समाजवादी हो?" मैंने शैतान से पूछा.

"मुझे शांति चाहिए!" उसने उत्तर दिया "मुझे यह देखकर उबकाई आने लगती है कि प्रकृति के बनाए एक संपूर्ण आदमी को माचिस की तीली बना कर तोड़ दिया जाता है या किसी दूसरे के लालची हाथ के लिए एक औजार बना दिया जाता है. मुझे ग़ुलाम नहीं चाहिए -- मेरी आत्मा को ग़ुलामी से वितृष्णा है... इसीलिए मुझे स्वर्ग से निकाल दिया गया. जहां भी देवता होंगे आध्यात्मिक ग़ुलामी का वहां होना अवश्यंभावी है और झूठ की फफूंद हर जगह फैलती जाएगी... धरती को जीने दो -- समूची धरती को! इसे दिन भर जलने दो चाहे रात के आने तक राख के सिवा कुछ न बचे. अपने जीवनकाल में हर आदमी को एक बार प्यार करने का हक़ है... एक आश्चर्यजनक सपने की तरह प्यार बस एक बार आता है लेकिन इस एक क्षण में अस्तित्व का सारा अर्थ होता है..."

कंकाल एक काली चट्टान से लग कर खड़ा था और उसकी पसलियों के ख़ालीपन में हवा कराह रही थी.

"उसे ठंड और असुविधा हो रही होगी" मैंने शैतान से कहा.

"मुझे एक वैज्ञानिक को देखना अच्छा लगता है जिसने अपने आपको हरेक सतही चीज़ से मुक्त कर लिया है. उसका कंकाल उसके विचारों का कंकाल है... मैं देख सकता हूं वह कितना मूलभूत था... इसके आगे सच्चाई बोने वाले एक और व्यक्ति के अवशेष दबे हुए हैं... चलो उसे भी जगाया जाए. अपने जीवनकाल में वे सब शांति को प्यार करते रहे और विचारों, संवेदनाओं और

जीवन के लिए नियम बनाने के लिए श्रम करते रहे -- वे नवजात विचारों का क़त्ल करते रहे और उनके लिए छोटे-छोटे आरामदेह ताबूत बनाते रहे. लेकिन वे चाहते हैं कि मौत के बाद उन्हें याद किया जाए... -- कोम्प्राचीकोस -- जागो! मैं तुम्हारे पास एक आदमी को लाया हूं जिसे अपने विचारों के लिए ताबूत की ज़रूरत है.''

और एक बार फिर से धरती के भीतर से ख़ाली खोपड़ी वाला, बिना दांतों का, पीला लेकिन फिर भी आत्मतुष्टि से चमकता एक कंकाल बाहर निकला. वह वहां लंबे समय से लेटा होगा, क्योंकि उसकी हड्डियों पर ज़रा भी मांस नहीं बचा था. वह अपनी क़ब्र के पत्थर से लगकर खड़ा था और उसकी पसलियां की छाया काले पत्थर पर धारियों की शक्ल में इस तरह पड़ रही थी मानो वह न्यायालय में काम करने वाले किसी अधिकारी की पोशाक हो.

''वह अपने विचारों को कहां रखता है?'' मैंने पूछताछ की.

''अपनी हड्डियों में. मेरे दोस्त, अपनी हड्डियों में! उनके विचार गठिया की तरह होते हैं और पसलियों में गहरे धंस जाते हैं.''

''मेरी किताब कैसी बिक रही है मालिक?'' कंकाल ने सपाट लहजे में पूछा.

''वह अब भी शेल्फों में धरी है प्रोफेसर!'' शैतान ने जवाब दिया.

''क्यों क्या लोग पढ़ना भूल गए हैं?'' एक क्षण के विचार के बाद प्रोफेसर ने पूछा.

''नहीं, वे मूर्खतापूर्ण चीज़ें अब भी चाव से पढ़ते हैं, लेकिन उबाऊ मूर्खतापूर्ण चीज़ों को उनका ध्यान पाने के लिए कभी-कभी लंबा इंतज़ार करना पड़ता है... यहां जो प्रोफेसर साहब हैं'' मेरी तरफ़ मुड़ते हुए शैतान बोला ''इन्होंने पूरी ज़िंदगी औरतों की खोपड़ियां नापीं ताकि ये सिद्ध कर सकें कि औरत मनुष्य नहीं होती. इन्होंने सैकड़ों खोपड़ियां नापीं, दांतों की गिनती की, कानों की नाप ली और मृत मस्तिष्क-पदार्थ का अध्ययन किया. मृत-मस्तिष्कों का अध्ययन करना प्रोफेसर साहब का पसंदीदा शौक़ था. इनकी सारी किताबों में इस बात के सबूत हैं. क्या तुमने उन्हें पढ़ा है?''

''मैं मंदिर जाने के लिए शराबखाने वाला रास्ता नहीं पकड़ता'' मैंने जवाब दिया ''और मुझे नहीं पता कि मनुष्यों का अध्ययन उनके बारे में किताबें पढ़कर कैसे किया जा सकता है. किताबों में लोग हिस्सों में होते हैं और मेरी अंकगणित वैसे भी कमज़ोर है. लेकिन मैं समझता हूं कि एक मनुष्य जिसकी दाढ़ी नहीं है और जो स्कर्ट पहनता है उस मनुष्य से न तो बेहतर है, न बदतर जिसकी दाढ़ी-मूंछें हैं और जो पतलून पहनता है...''

"हां" शैतान ने कहा "अश्लीलता और बेवकूफी दिमाग़ पर आक्रमण करते हैं और ऐसा करते वक़्त वे पोशाक और केशसज्जा पर ध्यान नहीं देते. लेकिन तो भी औरतों वाली उस समस्या को बड़े अजीब तरीके से समझाया गया है." शैतान हंसा जैसी कि उसकी आदत भी है और इसी वजह से उससे बातें करना मुझे अच्छा लगता है. जो भी क़ब्रिस्तान में हंस सकता है यक़ीनन जीवन को प्यार करता है और आदमी को भी.

"कुछ लोग जिन्हें औरत की ज़रूरत सिर्फ़ पत्नी या ग़ुलाम के तौर पर होती है, मानते हैं कि वह मनुष्य तो कतई नहीं होती." वह बोलता गया "बाक़ी चाहेंगे कि उसकी कार्यक्षमता का इस्तेमाल करते हुए उसे औरत की तरह भी इस्तेमाल करें. ऐसे लोग मानते हैं कि काम के लिए औरत आदमी की ही तरह उपयुक्त है और वह उसके साथ बराबरी की हैसियत से काम कर सकती है यानी सिर्फ़ उसके लिए. लेकिन इनमें से कोई भी उस लड़की को अपने समाज में स्वीकार नहीं करेगा जिसके साथ उन्होंने बलात्कार किया हो. वे मानते हैं कि उनके एक बार छू लेने के बाद वह हमेशा के लिए बदनाम हो चुकी होती है... हां ये महिला-समस्या वाकई बहुत डरावने तरीके से मनोरंजक है. मुझे अच्छा लगता है जब आदमी मासूम झूठ बोलते हैं. उस वक़्त वे बच्चों जैसे लगने लगते हैं और आप उम्मीद करते हैं कि समय के साथ-साथ वे बड़े हो जाएंगे..."

मैं शैतान के चेहरे को देखकर बता सकता था कि वह भविष्य के पुरुष के बारे में कोई बहुत ख़राब बात कहने ही वाला था. लेकिन चूंकि मैं ख़ुद बहुत सारी ऐसी ख़राब बातें आज के पुरुष के बारे में कह सकता हूं और अपने इस प्रिय मनोरंजन में मैं शैतान से टक्कर नहीं लेना चाहता था, मैंने उसकी बात काटते हुए कहा :

"एक कहावत है कि जब शैतान को कहीं जाने का समय नहीं मिलता, वह अपने बदले किसी औरत को भेज देता है. क्या यह सच है?"

उसने अपने कंधे उचकाए और कहा: "हां होता तो है... जब आसपास कोई पर्याप्त चालाक और धूर्त पुरुष उपलब्ध न हो तो."

"मुझे ऐसा लग रहा है कि दुष्टता के लिए तुम्हारा प्यार कम हो गया है." मैंने उसे चुनौती दी.

"दुष्टता जैसी कोई चीज़ अब बची ही नहीं है" उसने आह भरते हुए कहा "सिर्फ़ अश्लीलता ! दुष्टता एक समय ऐसी ताक़त थी जिसके भीतर सौंदर्य होता था. और अब जब आदमी तक मारे जाते हैं, यह काम बहुत बदसूरती से किया जाता है: पहले उनके हाथ बांध दिए जाते हैं. अब कोई खलनायक नहीं बचे हैं

सिर्फ़ जल्लाद हैं. और एक जल्लाद ग़ुलाम से ज़्यादा कुछ नहीं होता: भय की ताक़त से गति में आया हुआ एक हाथ और एक कुल्हाड़ी... आदमी बस उन्हीं को मारते हैं, जिनसे उन्हें डर लगता है..."

दो कंकाल अपनी क़ब्रों के पास अगल-बग़ल खड़े थे और शरद की पत्तियां धीरे-धीरे उनकी हड्डियों पर फिसल रही थीं. हवा उनकी पसलियों के तारों पर एक उदासीभरा गीत गा रही थी और उनकी खोपड़ियों के खोह में चिंघाड़ रही थी. उनकी आंखों के गहरे गड्ढों से नमीदार और तीखी गंध वाला अंधेरा बाहर देख रहा था. वे दोनों कांप रहे थे. मुझे उन पर दया आई.

"उन्हें अपनी क़ब्रों में वापस जाने दो" मैंने निवेदन किया.

"तो क़ब्रिस्तान में भी तुम मानवतावादी हो" उसने कहा "ख़ैर मानवतावाद की जगह यहां मृतकों के बीच ज़्यादा उचित है: यहां यह किसी को भी परेशान नहीं कर सकती. क़ैदखानों, खदानों, फैक्ट्रियों, चौराहों, गलियों में जहां भी जीवित लोग रहते हैं मानवतावाद हास्यास्पद होता है और कभी-कभी तो गुस्से का शिकार बन सकता है. यहां कोई उसका मज़ाक़ नहीं उड़ा सकता. मृतक हमेशा गंभीर होते हैं. और मैं निश्चित हूं कि वे मानवतावाद के बारे में सुनना पसंद करते हैं -- जो भी हो वह एक मरा पैदा हुआ बच्चा है... नहीं, वे मूर्ख नहीं थे जो हाशिए के इस दृश्य को जीवन के मुख्य मंच पर रखना चाहते थे, ताकि यातना पाए लोगों की काली दहशत को ढांपा जा सके और उन चंद लोगों की ठंडी क्रूरता को भी जिनकी ताक़त सारे लोगों की मूर्खता की वजह से है..."

और शैतान हंसा. दुष्टतापूर्ण सच्चाई की कठोर हंसी.

काले आसमान में तारे कांप रहे थे. बीते समय की क़ब्रों के ऊपर काले पत्थर निश्चेष्ट खड़े थे. धरती से सड़नभरी बदबू निकल रही थी और हवा मृतकों की सांसों को रात के ठहराव में उनींदे शहर की गलियों तक पहुंचा रही थी.

"यहां कुछ मानवतावादी लेटे हुए हैं" क़ब्रों पर निगाह दौड़ाता शैतान बोलता जा रहा था "उनमें से कुछ तो वाकई संजीदा थे. जीवन में बहुत-सी नासमझियां होती हैं और शायद यह सबसे मनोरंजक नहीं कही जा सकती... और इनके बग़ल में दूसरी तरह के लोग मित्रतापूर्ण शांति में लेटे हुए हैं -- जीवन के अध्यापक, जिन्होंने एक ठोस बुनियाद बनानी चाही झूठ की उस पुरानी संरचना के नीचे जिसे इतनी मशक्कत से हज़ारों-हज़ार मृतकों ने बनाया था..."

दूर से गाने की आवाज़ें आ रही थीं... दो या तीन ख़ुश आवाज़ें तैरती हुई आईं और क़ब्रिस्तान के ऊपर कांपीं. संभवत: दावत उड़ाकर हल्के दिल के साथ अंधेरे में कोई अपनी क़ब्र की तरफ़ जा रहा था.

"इस भारी पत्थर के नीचे एक संत के अवशेष आराम कर रहे हैं जिसने हमें सिखाया कि समाज एक संरचना है जो एक बंदर या एक सूअर से मिलती-जुलती है मुझे याद नहीं आ रहा किससे. यह उन सारे लोगों के लिए सही चीज़ है जो ख़ुद को संरचना का मस्तिष्क समझते हैं. तक़रीबन सारे राजनेता और गैंगस्टर इस सिद्धांत पर विश्वास करते हैं. अगर मैं मस्तिष्क हूं तो मैं अपनी मर्जी के मुताबिक हाथों को क्यों नहीं चला सकता हूं और अपनी राजकीय-शक्ति के ख़िलाफ़ चल रही किसी भी मांसपेशी की गति को काबू कर सकता हूं. हां साहब हां. और इस जगह उस शख्स की धूल आराम कर रही है जिसने मनुष्य से निवेदन किया था कि उसे उस युग में वापस लौट जाना चाहिए जब वह चारों हाथ-पैरों पर चला करता था और कीड़ों का भोजन किया करता था. उसने ज़ोर दे कर कहा था कि वे मनुष्य के अस्तित्व के सबसे ख़ुशनुमा दिन थे. ख़ुद सबसे शालीन फ्रॉक-कोट पहन कर दो पैरों पर ख़ुद चलते रहें और साथ के मनुष्यों से कहें कि अपने पूरे बदन पर बाल उगा लें. ये हुई बिल्कुल ओरिजिनल बात. ख़ुद कविता पढ़ें, संगीत सुनें, संगहालयों में जाएं, दिन में सौ मील का सफ़र करें और लोगों को सिखाएं कि जंगल में आदिम जीवन जिएं और चार हाथ-पैरों पर चलें. वास्तव में यह आधा बुरा भी नहीं है. और अब यहां इन साहब ने लोगों को संतुष्ट करने की कोशिश की और उनके जीवन को न्यायोचित ठहराने की कोशिश करते हुए बताया कि अपराधी औरों की तरह नहीं होते कि उनकी इच्छा-शक्ति बीमार होती है और वे विशेष तरीके से असामाजिक होते हैं. इनका मानना था कि चूंकि वे समाज के नियमों और नैतिकता के प्राकतिक दुश्मन होते हैं, उनके साथ किसी भी समारोह में हिस्सेदारी नहीं की जा सकती. इन्होंने यह भी निश्चित बताया कि मृत्यु ही अपराध के आदी इन लोगों का इलाज है. बढ़िया ख़्याल है. एक आदमी को अपराधों के लिए ज़िम्मेदार ठहराइए और यह कि वही सारे पापों को प्राप्त करता है और दुष्टता का जैविक वाहक. यह बात कहीं से भी मूर्खतापूर्ण नहीं लगती. आपको हमेशा कोई-न-कोई मिल जाएगा जो जीवन की बदसूरत और आत्मा को तोड़ने वाली संरचना को उचित ठहराएगा. बुद्धिमान लोग बिना किसी अच्छे कारण के अपनी नाक नहीं सुड़कते. जी हां, क़ब्रिस्तानों में शहरों में जीवन का सुधार करने के विचार अटे पड़े हैं..."

शैतान ने चारों तरफ़ नज़र डाली. किसी विशाल कंकाल की उंगली सरीखा एक सफ़ेद चर्च मृतकों के विशाल मैदान के बीच से ऊपर सितारों के ख़ामोश चारागाह जैसे आसमान की तरफ़ उठता चला जा रहा था. चारों तरफ़ खड़े हुए फफूंद लगे ढेरों पत्थरों से घिरी यह चिमनी मनुष्यों की शिकायतों और प्रार्थनाओं

को ऊपर ब्रह्मांड के विस्तार में छितराती थी. क्षय की तैलीय गंध से लदी हवा पेड़ों की टहनियों को मद्धम-मद्धम हिलाती थी जिससे मृत पत्तियां उखड़ कर बिना आवाज़ किए जीवन-निर्माताओं के निवास पर गिर रही थीं...

"अब हम मृतकों की एक शोभायात्रा का प्रबंध करेंगे -- कयामत के दिन की रिहर्सल." पत्थरों और टीलों के बीच सांप जैसे घुमावदार रास्ते पर मुझसे आगे तेज़-तेज़ चलते हुए शैतान बोला. "कयामत का दिन आएगा तुम जानते हो ना! वह यहीं आएगा इसी धरती पर और वह मानवता के लिए सबसे प्रसन्न दिन होगा. वह आएगा जब आख़िरकार लोगों को अहसास होगा कि जीवन के अध्यापकों और नियम-निर्माताओं ने कितने गंभीर पाप किए थे और किस तरह मनुष्य को मांस और हड्डियों के बेकार टुकड़ों में बदला. हम आज जिसे मनुष्य कहते हैं, असल में वह ख़ुद के हिस्से भर है. एक संपूर्ण आदमी की रचना आज तक नहीं की गई है. वह धरती द्वारा जिए गए तमाम अनुभवों की राख से उठेगा. वह संसार भर के अनुभवों को आत्मसात् करेगा जिस तरह सागर सूर्य की किरणों को आत्मसात् करता है. वह धरती के ऊपर उगेगा एक-दूसरे सूर्य की तरह. मैं उसके दर्शन करूंगा! मैं उस मानव का निर्माण कर रहा हूं और वह अस्तित्वमान होगा!"

वह ज़्यादा ही बड़ी-बड़ी बातें करने लगा था और एक काव्यात्मक मूड में जाता दिख रहा था जो एक शैतान के लिए अप्राकृतिक माना जाएगा. मैंने उसे क्षमा कर दिया. आप कर भी क्या सकते हैं? जीवन अपने ज़हरीले अम्लों से शैतान तक की मजबूत आत्मा को तहस-नहस कर देता है. और सारे मनुष्यों के सिर तो गोल होते हैं, पर उनके विचार आड़े-तिरछे और जब भी हर कोई शीशे के सामने खड़ा होता है, उसे एक सुंदर चेहरा नज़र आता है.

कुछ क़ब्रों के बीच खड़ा हो कर शैतान अधिकारपूर्ण आवाज़ में कहता जा रहा था:

"तुममें से बुद्धिमान और ईमानदार कौन है?"

एक क्षण को शांति रही. फिर अचानक मेरे पैरों तले की धरती हिलने लगी मानो हज़ारों बिजलियों ने धरती को भीतर से फाड़ कर रख दिया हो मानो किसी विराट दैत्य ने उसकी गहराइयों में करवट ली हो. ऐसा लग रहा था कि टीलों के ऊपर गंदी बर्फ़ फैल गई हो. हमारे चारों तरफ़ हर चीज़ गंदे पीले में तब्दील हो गई थी; हर जगह हवा में हिलती घास की तरह कंकाल हिल रहे थे आसपास की शांति को हड्डियों और पसलियों के आपस में और क़ब्रों से टकराने की खड़खड़ाहट से भरते हुए. एक-दूसरे को धकियाते कंकाल बाहर निकल आए थे; हर तरफ़ डैंडीलियनों की तरह खोपड़ियां उठी हुई थीं; पसलियों का गहन जाल मेरे चारों

तरफ़ एक पिंजरे की तरह कसा हुआ था; कंकालों की पिंडलियां उनके भयावह दीखते कूल्हों की हड्डियों के भार के कारण तनाव में कांप रही थीं; हमारे चारों तरफ़ हर चीज़ एक मूक गतिमानता में सीझ गई थी...''

शैतान के ठंडे अट्टहास में सारी अमूर्त आवाज़ें डूब गईं.

''देखो वे सारे बाहर रेंग आए हैं. सारे-के-सारे.'' वह बोला ''यहां तक कि शहर के मूर्ख भी. धरती ने कै की और अपनी अंतड़ियों से मनुष्य की मृत बौद्धिकता को बाहर निकाल फेंका...''

हिसहिसाता हुआ शोर लगातार बढ़ रहा था जैसे कोई लालची हाथ कबाड़ी द्वारा बरामदे में फेंके गए गीले कबाड़ के ढेर को छान रहा हो.

''ज़रा देखो कितने सारे बुद्धिमान और ईमानदार लोग इस संसार में जिए.'' चारों तरफ़ से नजदीक़ आने की कोशिश करते हज़ारों टूटे-फूटे टुकड़ों के ऊपर अपने डैनों को फैलाते हुए शैतान ने कहा.

''तुममें से किसने लोगों के लिए सबसे ज़्यादा भले काम किए?'' शैतान ने ज़ोर की आवाज़ निकाली.

एक शोर उभरा जैसे कि किसी बड़े बरतन में क्रीम में भूने जाते कुकुरमुत्ते सनसनाते हैं.

''कृपया मुझे आगे आने दो'' चिड़चिड़ी आवाज़ में कोई चिल्लाया.

''मैं हूं वह आदमी, मालिक मैं हूं वह आदमी. यह मैं था जिसने सिद्ध किया कि समाज के कुल जोड़ में एक मनुष्य केवल शून्य भर होता है.''

''मैं तो इससे भी आगे गया था'' दूर से विरोध में एक आवाज़ उठी ''मैंने यह सिखाया कि सारा समाज शून्यों का जोड़ होता है और यह कि इसी कारण इस समाज को वही करना चाहिए जो कि एक समूह-विशेष की मंशा हो.''

''और उस समूह-विशेष का नेतृत्व एक इकाई द्वारा किया जाना चाहिए जो कि मैं था'' गंभीर स्वर में कोई बोला.

''तुम क्यों थे?'' कई स्वर एक साथ चेतावनी में उभरे.

''मेरे चाचा एक राजा थे.''

''अच्छा तो वे तुम्हारे चाचा थे जिनका सिर इतनी जल्दी काट दिया गया था?''

''राजाओं के सिरों को एक निश्चित समय पर कटना ही होता है'' हड्डियों के वंशज की हड्डियों ने किंचित गर्व के साथ कहा जो एक समय में सिंहासन पर बैठा करती थीं.

''ओहो'' ख़ुशी में कोई फुसफुसाया ''तो हमारे बीच में एक राजा भी है. ऐसा नसीब हर क़ब्रिस्तान का थोड़े ही होता है...''

नम फुसफुसाहटों और हड्डियों की खड़खड़ के कारण आवाज़ों का एक ऐसा जाल बन रहा था जो धीरे-धीरे भारी और सघन होता जा रहा था.

"मुझे कोई बताओ" छोटे क़द और झुकी रीढ़ वाले एक कंकाल ने उखड़ती सांस के साथ पूछा "क्या यह सच है कि राजाओं की हड्डियां नीली होती हैं?"

"मैं बताता हूं..." एक स्मारक पर बैठे कंकाल ने प्रभावशाली तरीके से अपनी बात शुरू की.

"सबसे बढ़िया प्लास्टर मैंने खोजा था" उसके पीछे से कोई चिल्लाया.

"मैं हूं भवन-निर्माता..."

फिर एक नाटा कंकाल सभी को अपने हाथों की गांठदार हड्डियों से ठेलकर आगे आया और बाक़ी मृत आवाज़ों के कोलाहल के ऊपर उसकी चीख़ सुनाई दी:

"ईसामसीह के नाम पर भाइयो! क्या मैं तुम्हारा आध्यात्मिक चिकित्सक नहीं हूं? किसने इस्तेमाल किया मुलायम संवेदना का प्लास्टर यातना के कारण तमाम बीमारियों से जूझती तुम्हारी आत्माओं का?"

"कहीं कोई यातना नहीं होती!" गुस्से में किसी ने घोषणा की "सब कल्पना में होता है बस!"

"... वह शिल्पी जिसने नीचे दरवाज़ों का आविष्कार किया..."

"और मैंने फ्लाईपेपर ईजाद किया!"

"... ताकि जो भी लोग घर के भीतर आएं उन्हें हर हाल में गृहस्वामी के सामने अपना सिर झुकाना पड़े..."

"क्या पहला हक़ मेरा नहीं बनता भाइयो? यह मैं था जिसने उन लोगों को दुनियावी चीज़ों से उठकर ध्यान लगाना सिखाया था जिन्हें विस्मृति की चाह होती थी!"

"जो है वह हमेशा रहेगा" बेहद चिड़चिड़ी आवाज़ में किसी ने घोषित किया.

सलेटी पत्थर पर बैठे एक टांग वाले कंकाल ने अपनी टांग ऊपर की और पता नहीं क्या सोचकर वह चिल्लाया:

"सुनो सुनो!"

क़ब्रिस्तान एक ऐसा बाज़ार बन गया था जहां हर कोई अपने माल की तारीफ़ कर रहा था. रात के अंधेरे और ख़ामोश वीराने में दबी हुई कराहों और गाली-गलौज और शेखियों की सड़ी हुई नदी बह रही थी. ऐसा लग रहा था मानो क़ब्रों की सारी दुर्गंध के साथ भिनभिनाते मच्छरों का झुंड किसी उपसे हुए दलदल

पर मंडरा रहा हो. एक के बाद एक मृत विचार पुनर्जीवित हो रहे थे और हवा में पतझड़ की सूखी पत्तियों की मानिंद उड़ रहे थे.

इस उबलती हुई खमीर को शैतान ने अपनी हरी आंखों से देखा. तमाम निगाहें हड्डियों के ढेर को एक चमकदार फास्फोरस चमक के साथ घूर रही थीं.

शैतान के पैरों पर बैठे कंकाल ने अपनी बांहें सिर के ऊपर उठाकर उन्हें एक लय में हिलाते हुए कहा:

"हर औरत को बस एक आदमी के साथ रहना चाहिए..."

एक और आवाज़ इस फुसफुसाहट में जुड़ गई और उसके शब्द अजीब तरीके से इसी आवाज़ का हिस्सा बन गए:

"केवल मृतकों को सत्य का ज्ञान होता है..."

और शब्द जुड़े .

"परमपिता ने कहा कि एक मकड़ी की तरह मैं..."

"इस धरती पर हमारा जीवन संशयों का एक गड़बड़झाला है, भीषण अज्ञान का एक छलावा!"

"मेरी तीन बार शादी हुई और तीनों बार चर्च में..."

"पूरी ज़िंदगी बिना रुके वह अपने परिवार की भलाई का जाल बुनता रहता है..."

"... और हर बार अलग-अलग औरत के साथ..."

अचानक एक नया कंकाल प्रकट हुआ. उसकी छिद्रदार पीली हड्डियां तीखी आवाज़ के साथ कड़कीं. उसने अपने आधे तबाह हो चुके चेहरे को शैतान के चेहरे के स्तर तक उठाकर कहा:

"मेरी मौत सिफलिस से हुई, हां! तो भी मैंने समाज की नैतिकताओं का सम्मान किया. जब मैंने पाया कि मेरी पत्नी वफ़ादार नहीं है तो मुझे ख़ुद क़ानून और समाज के सामने उसके ख़राब व्यवहार पर मुक़दमा चलाना पड़ा..."

लेकिन उसे चारों तरफ़ से बाक़ी कंकालों ने परे धकेल दिया. चिमनी की हवा की तरह आवाज़ों का तूफ़ान फिर चलने लगा.

"इलैक्ट्रिक चेयर मैंने ईजाद की थी. इससे आदमी बिना तकलीफ़ के मर जाता है..."

"मैंने लोगों को बतलाया कि मौत के बाद अनंत आनंद उनका इंतज़ार कर रहा है..."

"पिता अपने बच्चों को जीवन और भोजन देता है... आदमी तभी संपूर्ण होता है जब वह पिता बन जाता है. उसके पहले वह फकत परिवार का सदस्य होता है..."

अंडाकार खोपड़ी वाला एक कंकाल जिसके चेहरे पर अभी थोड़ा मांस लटक रहा था सबकी आवाज़ों को दबाता हुआ चिल्लाया:

"मैंने साबित किया कि कला को समाज के विचारों, आदतों और ज़रूरतों के हिसाब से चलना सिखाया जाना चाहिए..."

टूटे पेड़ का प्रतिनिधित्व करने वाले स्मारक पर बैठे एक कंकाल ने पलटकर कहा:

"आज़ादी बस अराजकता के रूप में अस्तित्वमान रह सकती है."

"जीवन और कार्य से ऊबी हुई आत्मा के लिए कला एक अच्छा इलाज हो सकती है..."

"इस बात को मैंने सुनिश्चित किया था कि कर्म ही जीवन है" दूर से एक आवाज़ बोली.

"हर किताब को उतना ही सुंदर होना चाहिए जितना दवा की शीशी होती है..."

"सारे लोगों को काम करना चाहिए और उनमें से कुछ को उनकी देख-रेख... जिन लोगों का काम और मेहनत शानदार हो उन्हें उसका फल मिलना ही चाहिए..."

"कला को परोपकारी और सामंजस्यपूर्ण होना चाहिए... जब मैं थका होऊं मैं ख़ाली ऐसे ही गाना चाहूंगा..."

"और मुझे मुक्त कला अच्छी लगती है" शैतान बोला "जो सौंदर्य की देवी के अलावा और किसी की भी सेवा नहीं करती. तब मुझे बहुत अच्छा लगता है जब एक पवित्र युवा अमर सौंदर्य का स्वप्न देखता है और उसी के साथ रहना चाहता है और कला जीवन के शरीर से उसकी चमकीली पोशाक उतार फेंकती है और उसके सामने जीवन खड़ा होता है झुर्रियों और घावों से भरी एक बूढ़ी दुराचारी औरत की तरह. एक पागल गुस्सा, सौंदर्य के लिए कामना, जीवन के ठहरे हुए छलावे के लिए नफ़रत -- इन सबको खोजता हूं मैं कला में... शैतान और स्त्री एक कवि के इकलौते दोस्त होते हैं..."

चर्च की मीनार से एक तांबई कराह उठी और मृत नगर के ऊपर अदृश्य तुतलाती तैरती गई जैसे किसी विशाल चिड़िया के पारदर्शी पंख... अधसोए किसी चौकीदार ने आलस के साथ थके हाथों से घंटी की रस्सी को हिलाया होगा. आवाज़ हवा में घुली और ख़त्म हो गई. लेकिन उसके ख़त्म होते ही घंटी फिर से बजी. इस बार उसकी आवाज़ तीखी और स्पष्ट थी.

एक बार फिर से मैंने दर्दनाक मूर्खता की खुट्टल आवाज़ों का कोलाहल

सुना -- मृत अश्लीलता के चिपचिपे शब्द, विजयी दोगलेपन की अपमानभरी ध्वनियां, धोखाधड़ी का विलाप. शहर के लोग जिन विचारों के साथ जीते हैं वे सारे-के-सारे पुनर्जीवित हो उठे. लेकिन उनमें से एक भी विचार ऐसा नहीं था जिस पर वे गर्व कर सकें. मनुष्य की आत्मा को क़ैद रखने वाली वे सारी जंग लगी बेड़ियां खड़खड़ाईं लेकिन आत्मा के अंधेरे को रोशन करने वाला उजास एक बार को भी नहीं चमका.

"नायक कहां हैं?" मैंने शैतान से पूछा.

"वे सब विनम्र हैं और उनकी क़ब्रों को भुला दिया गया है. उन्हें उनके जीवनकाल में दबाया गया और यहां क़ब्रिस्तान में भी मृत हड्डियां उन्हें दबा देती हैं." अपने पंखों को हिलाते हुए शैतान ने जवाब दिया.

मोची ने कहा कि सबसे अधिक धन्यवाद उसे दिया जाना चाहिए, क्योंकि उसने तीखे सिरों वाले जूतों का आविष्कार किया. मकड़ियों की हज़ार से अधिक प्रजातियां खोज चुके एक वैज्ञानिक की भी यही मांग थी. तेज़ी से फायर करने वाली बंदूक़ बनाने वाला आदमी जब लोगों को अपनी रचना की आवश्यकता के बारे में बता रहा था, पाउडर वाला दूध बनाने वाले ने उसे पीछे की तरफ़ खींच लिया. मस्तिष्क पर हज़ारों पतली गीली रस्सियां कस गईं और सांपों की तरह डंक मारने लगीं. और सारे मृतक ठेठ नैतिकतावादियों की तरह बोल रहे थे -- उनके विषय जो भी हों -- जीवन के उन जेलरों की तरह जो अपने काम को देखकर ख़ुशी से फट पड़ने को तैयार रहते हैं.

"बहुत हो गया!" शैतान चीख़ा "मैं आजिज आ गया हूं इससे... मैं इस क़ब्रिस्तान की हर चीज़ से आजिज आ गया हूं और जिंदा लोगों के क़ब्रिस्तानों जैसे शहरों में दिखने वाली हर चीज़ से भी... तुम सच्चाई के पहरेदारो, जाओ अपनी-अपनी क़ब्रों में वापस...!"

उसकी आवाज़ किसी मालिक की इस्पाती आवाज़ थी जो उस ताक़त से ऊब चुका था जो उसकी थी.

इस पर वह राख-सा स्लेटी और पीला पुंज फुंकारने और हिलने लगा जैसे सड़क पर बवंडर के चलने से धूल उड़ने लगती है. धरती ने उस भोजन को दुबारा भकोसना शुरू किया जिसे उसने कुछ देर पहले बाहर निकाला था... अचानक हर चीज़ अदृश्य हो गई. क़ब्रों के पत्थर दुबारा ठोस खड़े हो गए जैसे कभी हिले ही न हों. लेकिन गला दबोचने वाली वह बदबू बनी ही रही.

शैतान एक क़ब्र के ऊपर बैठा और अपने घुटनों पर कोहनियां रख कर उसने लंबी उंगलियों वाले अपने काले हाथों से सिर थाम लिया. उसकी निगाह

सामने पत्थरों और क़ब्रों के ढेर पर ठहर गई... उसके ऊपर सितारे चमक रहे थे. ऊपर जहां आसमान थोड़ा रोशन हो गया था और घंटियों की तैरती हुई आवाज़ जहां रात को उसकी नींद से जगा रही थी.

"देखा तुमने?" शैतान ने मुझसे पूछा "चिपचिपी अश्लीलना, सपाट झूठ और फफूंद लगी मूर्खता की ख़तरनाक, फिसलन भरी, ज़हरीली मिट्टी के ऊपर जीवन का कैसा अंधेरा जकड़दार महल खड़ा किया गया है. एक पिंजरा जिसमें तुम सबको मृतकों द्वारा भेड़ों की तरह खदेड़ा जाता है. दिमाग़ी ढीलापन और कायरता तुम्हारे पिंजरे को लचीली सलाखों की तरह बांधे रखते हैं... तुम्हारे जीवन के असली स्वामी मृतक लोग हैं. यह हो सकता है कि तुम पर जीवित लोग शासन कर रहे हों, पर उन्हें भी मृतकों से ही प्रेरणा मिलती है. दुनियावी ज्ञान के सारे स्रोत क़ब्रों में हैं. मैं तुमसे कहता हूं कि तुम्हारी अक्ल एक फूल जैसी है जो मृत शरीरों के जल से पोषित मिट्टी पर उगता है. शरीर क़ब्र के भीतर जल्दी-जल्दी सड़ जाता है लेकिन वह तब भी जीवितों की आत्मा के साथ रहना चाहता है. मरे हुए विचारों की महीन सूखी राख जीवितों के मस्तिष्क में आसानी से घुस जाती है; इसीलिए तुम्हारे यहां अक्लमंदी सिखाने वाले सारे उपदेशक हमेशा आत्मा की मृत्यु के उपदेशक होते हैं!"

शैतान ने अपना सिर उठाया और उसकी हरी आंखें मेरे चेहरे पर दो ठंडे सितारों की तरह ठहर गईं.

"इस धरती पर इतनी ज़ोरों से क्या बात फैलाई जा रही है? वह क्या है जिसे मनुष्य एक अपरिवर्तनीय नियम की तरह स्थापित करना चाहता है? यह जीवन को टुकड़ों में बांट देना है; लोगों के लिए अलग-अलग जीवन परिस्थितियों को न्यायोचित ठहराया जाना और उनकी आत्माओं के लिए एकसार होने की ज़रूरत; आत्माओं में ईंटों जैसी ज्यामितीय एकरूपता ताकि शासक उन्हें आसानी से लिटा सकें..."

भोर हो रही थी. सूरज की उम्मीद पर फ़ीके पड़ते हुए सितारे आसमान में खो गए. लेकिन शैतान की आंखें अब भी चमक रही थीं.

"आदमी को क्या सिखाया जाना चाहिए ताकि उसका जीवन संपूर्ण और सुंदर बन सके? -- सबके लिए एक-सी परिस्थितियां और आत्माओं में भिन्नता. तब जीवन फूलों की झाड़ी जैसा होगा जिसकी जड़ों को हर व्यक्ति की स्वतंत्रता के आदर से पोषण मिलेगा. यह आपसी दोस्ती और साथ विकसित होने की साझा इच्छा के कोयलों से दहकी आग़ जैसा होगा... तब केवल विचारों का युद्ध होगा, जबकि सारे मनुष्य साथी बने रहेंगे. क्या तुम समझते हो यह असंभव है? -- मैं

कहता हूं ऐसा होगा, क्योंकि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ है!''

''दिन हो रहा है!'' पूर्व की तरफ़ देखते हुए शैतान बोला ''लेकिन क्या यह सूरज आदमी के लिए ख़ुशी लेकर आएगा जब दिल में रात उतरेगी? लोगों के पास सूरज का आनंद लेने का समय नहीं है. वे बस रोटी चाहते हैं. बहुत सारे यह सुनिश्चित करने में व्यस्त हैं कि कम-से-कम रोटियां बाहर जाएं. बाक़ी के लोग जीवन के कोलाहल में फिरते रहते हैं और अपनी आज़ादी खोजते हैं, लेकिन रोटी के उनके संघर्ष में आज़ादी हमेशा खो जाती है. अपने अकेलेपन में वे उसके साथ समझौता करते हैं जिसके साथ वैसा संभव ही नहीं है. इस तरह सबसे बेहतरीन लोग अश्लील झूठों की रपटनभरी कीच में डूब जाते हैं -- पहले मासूमियत के साथ ख़ुद के लिए अपनी वफ़ादारी को नज़रअंदाज़ करते हुए; फिर अपने पुराने विश्वासों और विचारों से दगा करते हुए पूरे होशोहवास में...''

वह खड़ा हुआ और उसने अपने ताक़तवर डैने फैलाए.

''मेरे ख़्याल से मैं भी अपनी आशाओं की सड़क पर चलता जाऊंगा शानदार संभावनाओं के एक भविष्य की तरफ़...'' और चर्च की तांबे की घंटी की रूखी आवाज़ के साथ ही वह पश्चिम की तरफ़ उड़ गया...

मैंने इस सपने के बारे में एक अमरीकी को बतलाया जो मुझे बाकियों से ज़्यादा मानवीय लगा था. एक क्षण को वह सोच में डूबा फिर मुस्कराता हुआ बोला:

''मैं समझ गया. शैतान असल में एक फर्म का एजेंट था जो भट्ठियां बनाने का काम करती है. क्यों नहीं! वह जो भी कह रहा था, असल में शवों को जलाने के पक्ष में था, लेकिन मेरे विचार से वह बेहद लायक एजेंट था. वह अपनी फर्म को स्थापित करने को इतना उत्सुक था कि लोगों के सपनों तक में आने लगा...''

1906

अमरीका से लिखे गए गोर्की के कुछ पत्र

विलियम डी हेवुड और चार्ल्स मोयर वेस्टर्न फेडेरेशन आफ माइनर्स के नेताओं को

मैं आप का अभिवादन करता हूं प्यारे समाजवादी साथियो. हिम्मत रखो. संसार में न्याय और शोषितों की मुक्ति का दिन नजदीक है.

हमेशा भाईचारे के साथ आपका
एम गोर्की

होटल बैलेक्लेयर

न्यूयार्क के अख़बारों के संपादकों को

अप्रैल का मध्य 1906, न्यूयार्क
ए वी एम्फितेयात्रोव को
अगस्त का आख़िर 1906
द एडीरोन्डाक्स

प्यारे ए वी
मैं अपने उपन्यास पर काम कर रहा हूं. उसके अलावा मैं एक जंगली आदमी की उत्सुकता के साथ अमरीकी संस्कृति को देख रहा हूं. इसे देखकर मुझे उबकाई आती है, पर कभी-कभी मैं पागलों की तरह हंसता हूं. मैं अभी से ख़ुद को अमरीका के बारे में कुछ लिख सकने की हालत में पा रहा हूं जिसके छपने के बाद मुझे यहां से लतियाकर खदेड़ दिया जाएगा.

लेकिन ये लोग बड़े हैरतअंगेज होते हैं. मैं यहां जो भी छपाता हूं उसका ये हमेशा विरोध करते हैं. और ज़्यादा कड़े विरोधों को काग़ज़ पर लिखकर मेरे घर

के गेट पर चिपका जाते हैं. जब वे मुझे सड़क पर देखते हैं तो टिड्डियों की तरह मेरे रास्ते से हट जाते हैं. यह बड़ा मनोरंजक होता है. सीनेटर लोग सबसे ज़्यादा विरोध करते हैं.

मुझे नवंबर में पेरिस जाने की उम्मीद है.

फिलहाल के लिए विदा.

बस मैं 'माँ'' ख़त्म कर लूं. उसके बाद तुम्हें अमरीका की पृष्ठभूमि पर एक कहानी भेजूंगा. हर हाल में.

तुम दोनों को मेरा अभिवादन.

ए पेश्कोव

ए वी एम्फितेयात्रोव को

सितंबर की शुरुआत 1906
द एडीरोन्डाक्स

मेरी ख़राब तबीयत का काफ़ी कुछ किया जाना है, लेकिन मुझे अब इसकी आदत पड़ चुकी है और मेरे जीवन और काम में इससे बाधा नहीं पहुंचती. मैं अपना उपन्यास लिख रहा हूं और अमरीकियों के लिए समारोह आयोजित कर रहा हूं.

ड्यूमा के व्यवहार को वे सब सराहनीय मानते हैं. चूंकि इन लोगों को बड़ी संख्याओं की आदत पड़ी होती है, वे इस बात से आश्चर्यचकित थे कि 450 में से केवल 3 सदस्य बागी हुए. यहां के अमीर और प्रभावशाली लोगों का विचार है कि अगर रूस में जार का तख्तापलट होगा तो उसकी जगह लेने वाली किसी भी सरकार को अमरीका वित्तीय सहायता देगा. वे स्पष्ट रूप से जानते हैं कि रूसी स्वशासन के लिए तैयार हैं. काश, तुम कल्पना भी कर पाते ये लोग किस कदर बोझिल और अज्ञानी हैं! यह हैरत में डालने वाली बात है.

अख़बारों ने मेरे ख़िलाफ़ ज़हर उगलना फिर शुरू कर दिया है -- मैंने एक स्थानीय पत्रिका के लिए न्यूयार्क के बारे में एक लेख 'पीले दैत्य का नगर' छपाया था. वह उन्हें पसंद नहीं आया. सीनेटरों ने तमाम आपत्तियां उठाईं, जबकि मज़दूरों ने उनका मज़ाक़ बनाया. एक साहब ने सार्वजनिक रूप से मेरा विरोध करना शुरू कर दिया है -- लोग अमरीका छोड़ने के बाद उसकी बुराई किया करते थे और आजकल तो यहां रहते हुए भी उसे गालियां देते हैं -- इसका क्या मतलब है? मैं समझता हूं मुझे यहां से लात मार कर भगा दिया जाएगा. तो भी मुझे

मेरा पैसा तो मिलेगा ही.

काश तुम मुझे कुछ बढ़िया साहित्य भेज पाते. कम-से-कम कुछ रूसी अख़बारों की कुछ कतरनें जो तुम्हारे पास ढेरों होंगी. रूस की ख़बरों के लिए हम तरसते हैं. मुझ तक अख़बार पहुंचते हैं, पर रास्ते में बहुत देर कहीं ठहरने के बाद.

मैं शरद के मौसम में शायद समुद्र पार करूंगा. हो सकता है अक्तूबर में. लेकिन मुझे पता नहीं कि मैं कहां जाऊंगा. अगर सब ठीक-ठाक रहा तो शायद पहले भी. तुमसे मैं निश्चित मिलूंगा. अपनी पत्नी को मेरा अभिवादन कहना और हमारे रूसी और गेलिक कामरेडों को मेरा सलाम कहना. मैं कोशिश करूंगा पांचवीं किताब के लिए भी कुछ भेज पाऊं.

हमेशा तुम्हारा
ए पेश्कोव

वाई पी पेश्कोवा को

अगस्त का आख़िर या सितंबर की शुरुआत 1906
द एडीरोन्डाक्स

मैंने तुम्हें एक पत्र भेजा और बच्चों की तस्वीरों के साथ तुम्हारा पत्र मुझे मिला. बिल्कुल समय पर.
मैक्सिम की आंखें दिलचस्प हैं और वे सुंदर भी होंगी. उसे बताना कि अगर मैं खोज पाया तो उसके लिए असली इंडियनों के धनुष-बाण ले कर आऊंगा. और कुछ अमरीकी तितलियां भी जो यहां बहुत शानदार होती हैं. और कुछ ख़ास नहीं है. सारी सुंदर चीज़ें यूरोप से आती हैं. सौंदर्य का अर्थ समझने के लिए अमरीका अभी बहुत युवा है. मैं क़रीब-क़रीब कनाडा की सीमा पर रहता हूं और शायद कनाडा जाकर दूखोबोरी सैक्ट और रेड इंडियनों को देखूंगा. इंडियंस और नीग्रो ही यहां सबसे दिलचस्प लोग होते हैं. जहां तक अमरीकियों का सवाल है वे बस इस मायने में दिलचस्प हैं कि वे बहुत अज्ञानी हैं और पैसे के लिए उनका लालच उबकाई पैदा करता है.

ऐसा लगता है कि मुझे यहां राष्ट्रपति पद के एक संभावित उम्मीदवार को अदालत ले जाना पड़ेगा, क्योंकि मैं उसे ठगी करने का दोषी मानता हूं.

काश, तुम जान पातीं, देख पातीं कि मैं यहां कैसे रहता हूं. या तो तुम हंसी से दोहरी हो जातीं या तुम्हारी आवाज़ बंद हो जाती. मैं इस देश का सबसे भयानक

आदमी हूं और जैसा एक अख़बार लिखता है : "इस देश ने ऐसा अपमान कभी नहीं जाना है जैसा यह पागल रूसी उस पर लादे जाता है. वह बिना नैतिकता के पैदा हुआ है और धर्म-नियम क़ानून और मानवता के लिए उसकी घृणा हर किसी को चौंका देती है." एक-दूसरे अख़बार ने सीनेट से अपील की कि मुझे देश से बाहर भेज दिया जाए. पीत-पत्रकारिता पगला गई है. मेरे ख़िलाफ़ सबसे ख़राब आरोपों को उस घर के दरवाज़े पर चिपका दिया जाता है जहां मैं रहता हूं. यहां तक कि तुमको भी नहीं बख्शा गया है.

पर ध्यान देना इस सबके बावजूद अख़बार मेरे लेखों के लिए मुझसे भीख मांगते हैं. उनसे अच्छा धंधा चलता है और यहां वही सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है.

क्या मैंने तुम्हें बताया था कि न्यूयार्क के बारे में मेरे लेख की प्रतिक्रिया में 1400 से ऊपर विरोध-पत्र आए. सीनेटरों के भी. मैं समझ सकता हूं अमरीका के बारे में मेरे साक्षात्कार और बाक़ी लेखों के छपने पर क्या होने वाला है.

मैं एक जंगल में रहता हूं, एक बहुत एकांत जगह में, यहां से निकटतम शहर एलिजाबेथ-टाउन 18 मील है, लेकिन इसके बावजूद अमरीकी मुझे देखने यहां आते हैं. वे घर में आने से डरते हैं -- मेरे साथ जान-पहचान उनके लिए मुश्किल खड़ी कर सकती है. वे जंगल में ही डोलते रहते हैं और उम्मीद करते हैं कि संयोगवश हमारी मुलाक़ात हो ही जाएगी. घर पर हम पांच लोग हैं -- मैं, ज़ीना, वह रूसी जो मेरे साथ मेरा सचिव बनकर आया है, भौतिकशास्त्र का एक प्रोफेसर और मिस ब्रुक्स नाम की एक भली वृद्ध अविवाहित महिला. हमारे यहां कोई कर्मचारी नहीं है और हम खाना बनाना और बाक़ी सारा काम ख़ुद ही करते हैं. मैं बरतन साफ़ करता हूं; ज़ीना घोड़े में बैठकर शहर जाता है और राशनपानी ख़रीदता है; प्रोफेसर चाय-कॉफ़ी वगैरह बनाते हैं वगैरह-वगैरह. कभी-कभार मैं खाना बनाता हूं -- मैं पाल्मानी बनाता हूं या बंदगोभी का सूप या और कुछ. हम सुबह सात बजे उठ जाते हैं, मैं आठ से काम चालू कर देता हूं और बारह बजे तक लगा रहता हूं. एक बजे खाना होता है और चार बजे चाय. रात का खाना आठ बजे होता है जिसके बाद मैं दुबारा आधी रात तक काम करता रहता हूं. हमारा रूसी कामरेड कला-विद्यालय का ग्रेजुएट है और बढ़िया पियानो बजाता है. 6 से साढ़े 7 तक हमारी संगीतसभाएं चलती हैं. इन दिनों हम स्कैंडनेवियाई संगीत का अध्ययन कर रहे हैं -- ग्रेग, ओले ओल्सेन, लुडविग शिटे और बाक़ी.

मैंने अपना लिखा सारा यहां अमरीकी पत्रिकाओं को सोलह सेंट प्रति शब्द के हिसाब से बेच दिया है और 30000 शब्दों के लिए क़रीब दो हज़ार डालर बनते हैं. काम करने में व्यस्त रहो तो समय जल्दी बीतता है.

मैं बाक़ी सारों से अलग बिना छत वाले एक बड़े बाड़े में रहता हूं जिसके भीतर एक लोहे का स्टोव है. दो दीवारें कांच की हैं -- ये दो बड़े फ्रेम हैं जिन्हें उठाया जा सकता है; सोने जाते समय मैं ऐसा ही करता भी हूं. लिखने की मेज़ पर लगातार बैठने से मेरी पीठ दुखती रहती है, जब-तब मुझे सांस लेने में तकलीफ़ होती है, मेरा वजन काफ़ी कम हुआ है, मेरी त्वचा सूरज से जल चुकी है और मैंने अपना सिर मुंडा लिया है. लेकिन कुल मिला कर मेरी तबीयत ठीक-ठाक कही जा सकती है.

यहां से थोड़ी दूरी पर दर्शनशास्त्र का एक विद्यालय है जो सिर्फ़ गर्मियों में तीन माह खुलता है. प्रोफेसर ड्यूई ने इसे स्थापित किया था. अध्ययन का कोई नियत कोर्स नहीं है और जो भी आसपास रह रहा होता है, वह भाषण दे देता है. अभी कुछ दिन पहले जेम्स नाम के एक मनोचिकित्सक का भाषण था, जिसे यहां काफ़ी बुद्धिमान समझा जाता है. मेरी उससे मुलाक़ात हुई -- बढ़िया आदमी है बुढ्ढा. गिडिंग्स नाम का एक समाजशास्त्री भी अच्छा आदमी है और मैंने उससे पहचान बना ली है.

अंग्रेज़ी-संस्कृति बहुत दिलचस्प चीज़ है. मुझे इस बात से हैरत होती है कि राजनीतिक स्वतंत्रता और आध्यात्मिक ग़ुलामी दोनों साथ-साथ मौजूद हैं. इनके लिए मृत शरीर जीवन की सांस होते हैं और जंगलियों की तरह ये लोग अधिकारियों की पूजा करते हैं.

परसों को जान मार्टिन नाम के एक सज्जन अपने घर क़रीब सौ लोगों के आने की उम्मीद कर रहे हैं. मेरे ख़्याल से ये लोग फेबियन समाजवादी हैं. ये सारे चाय पर मेरे यहां भी आने वाले हैं.

ख़ैर तो यह था मेरे जीवन और विचारों का यहां का पैटर्न. हालांकि इसमें मेरे सारे विचार नहीं हैं. यहां दिमाग़ बहुत ऊर्जा के साथ काम करता है. मैं लगातार उत्तेजना की स्थिति में रहता हूं. मेरे सामने बहुत सारा काम करने को है जिसे करने में मुझे कम-से-कम सोलह साल और लगने हैं.

अब कुछ गंभीर काम करने का समय आ गया है. मुझे ऐसा लग रहा है. जल्दबाजी में लिखी गईं ये तमाम चीज़ें ख़ास मतलब नहीं रखतीं.

ठीक है. अलविदा मेरी दोस्त. एक बार फिर तमाम चीज़ों के लिए तुम्हारा धन्यवाद। मेरे दिल की गहराइयों से.

यह चिठ्ठी तुम तक पहुंचने में 15 दिन लगेंगे. और तुम्हारा जवाब अगले 15 दिन में वापस आएगा.

कृपया पत्र लिखना. मैं यहां से अक्तूबर की शुरुआत में जाऊंगा. यह तय हो

चुका है. मुझे नीचे लिखे पते पर लिखना.

बूहनेन उन्द बूखफेरलाग रूसिखेर आउतोरेन जे लादीशनिकोव, बर्लिन डब्लू 15 ऊलान्दश्त्रासे 145.

इवान पाव्लोविच चिठ्ठियां मुझ तक पहुंचा देगा. उसे पता होता है मैं कहां होऊंगा.

ठीक है. अलविदा. तुमसे मिलकर मैं बहुत ख़ुश होऊंगा. मेरी तरफ़ से मैक्सिम को चुंबन देना. क्या उसे मेरे भेजे इंडियनों वाले पोस्टकार्ड मिले? मैं उन्हें लगातार भेजता रहा हूं.

मेरी शुभकामनाएं. सबसे ऊपर बहादुरी. यही सारी चीज़ों में श्रेष्ठतम है.

तुम्हारा

ए

एक अमरीकी पत्रिका द्वारा भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर

आपने पूछा है : **'क्या आपका देश अमरीका से नफ़रत करता है, और अमरीकी सभ्यता के बारे में आप क्या सोचते हैं?'**
सिर्फ़ इसी एक तथ्य में कि इस तरह के प्रश्न पूछे जा सकते हैं और इस तरीक़े से, एक विशिष्ट अमरीकी शैली अपने दानवीय अतिकथन और तनाव के अतिरेक के साथ मौज़ूद है. मैं कल्पना ही नहीं कर सकता कि कोई भी यूरोपीय 'पैसा बनाने के लिए' इस तरह के प्रश्न पूछ सकता है. और मैं आपको बता देना आवश्यक समझता हूं -- विशेषत: पहले और बाक़ी प्रश्नों के संबंध में -- कि अपने देश की पंद्रह करोड़ जनसंख्या की तरफ़ से इनका उत्तर देने का मुझे कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि इतने लोगों से यह पूछ सकने का मेरे पास कोई तरीका ही नहीं है कि वे आपके देश के बारे में क्या सोचते हैं.

मैं समझता हूं कि उन देशों में भी जहां आपके पूंजीवादी जनता के रक्त को डॉलरों में बदल रहे हैं -- फिलीपींस, दक्षिण अमेरीकी देश और चीन में -- यहां तक कि स्वयं आपके संयुक्त राष्ट्र अमरीका के एक करोड़ काले लोगों में, आपको एक भी ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति मिल सकेगा जो अपने लोगों की तरफ़ से आपको बतला सके : 'हां, मेरा देश, मेरी जनता अमरीका से नफ़रत करती है, उसके सारे लोगों से नफ़रत करती है, कामगारों से और अरबपतियों से, कालों से और गोरों से, औरतों और बच्चों से, खेतों से, नदियों से, जंगलों से, पशुओं और पक्षियों से, आपके देश के इतिहास और वर्तमान से, इसके विज्ञान और वैज्ञानिकों से, इसकी शानदार टेक्नॉलॉजी से, ऐडीसन और लूथर बरबैंक से, एडगर पो, वाल्ट व्हिटमैन, वाशिंगटन और लिंकन से, थियोडोर ड्राइज़र और यूजीन ओ नील से, शेरवुड एंडरसन से, इसके तमाम प्रतिभावान कलाकारों से, उस शानदार रोमांटिक ब्रैट हार्ट से जो जैक लंडन का आध्यात्मिक पिता था --

थोरो और एमर्सन से, हर चीज़ से जो संयुक्त राज्य अमरीका का निर्माण करती है और उन सारे लोगों से जो यहां निवास करते हैं.'

मुझे उम्मीद है आपको किसी भी ऐसे बेवकूफ को खोज पाने की आशा नहीं होगी जो आपके प्रश्न का ऐसा पागलपन से भरा उत्तर देगा. एक ऐसा उत्तर जो जनता और संस्कृति के पति इस क़दर नफ़रत से भरा हुआ हो.

लेकिन, निश्चय ही जिस चीज़ को आप संयुक्त राज्य अमरीका की सभ्यता कहते हैं, उसके प्रति मेरी कतई सहानुभूति नहीं है और हो भी नहीं सकती. मैं समझता हूं कि आपकी सभ्यता हमारे ग्रह की सबसे कुरूप सभ्यता है, क्योंकि इसने यूरोप की ज़्यादातर शर्मनाक कुरूपताओं को दानवीय आकारों में ढाल लिया है. त्रासद तरीके से यूरोप वैसे ही राज्य की वर्ग-संरचना की सनक के कारण काफी भ्रष्ट हो चुका है : लेकिन तब भी यूरोप ऐसी एक भी चीज़ का प्रदर्शन नहीं कर सकता, जो आपके करोड़पतियों और अरबपतियों द्वारा इतनी बेशर्मी और कमअक्ली के साथ प्रदर्शित की जाती है. आपको निश्चय ही बोस्टन-हत्याकांड याद होगा जब दो रईसज़ादों ने महज़ दिलचस्पी के लिए तीसरे की हत्या कर दी थी. और फक़त दिलचस्पी के लिए आपके देश में कितने सारे ऐसे अपराधों को अंजाम दिया जाता है? यूरोप भी कह सकता है कि उसके नागरिक बेहद असुरक्षित है, पर इतना डूब नहीं गया है कि सैंको और वैजेंटी की हत्या जैसी वारदातों पर उतर आए. फ्रांस में 'ड्राइफ़स कांड' हुआ था; वह भी बहुत शर्मसार करने वाली घटना थी. लेकिन फ्रांस में ही एमिल ज़ोला और अनातोले फ्रांस ने घटना के शिकार लोगों का पक्ष लिया और हज़ारों लोग हरकत में आ गए. जर्मनी में, विश्वयुद्ध के बाद हत्यारों का एक संगठन कू कल्क्स क्लान अस्तित्व में आया; लेकिन वहां उन्हें पकड़ कर सलाखों के पीछे कर दिया गया; जबकि आपके देश में ऐसा रिवाज नहीं है -- कू कल्क्स क्लान बेशर्मी से काले स्त्री-पुरुषों की हत्या करता है और उन्हें गाली देता है; वह ऐसा दंडित करने की मंशा से करता है, ठीक उसी तरह जैसे आपके राज्यों के गंवर्नर समाजवादी कार्यकर्ताओं के साथ किया करते हैं.

यूरोप में नीग्रो लोगों के प्रति घृणा जैसा कुछ नहीं, अलबत्ता वह एक दूसरी बीमारी -- 'एंटी सेमाइटिज़्म' का शर्मनाक रूप से शिकार है; यह एक बीमारी है और असल में अमरीका को भी लगी हुई है.

अपराध यूरोप में भी धीरे-धीरे बढ़ रहा है, लेकिन अभी यह उस सीमा तक नहीं पहुंचा है, जैसाकि आपके अख़बार बताते हैं. शिकागो के बारे में जहां एक्सचेंज और बैंक के गुंडों के अलावा ऐसे गुंडों की भरमार है, जिनके पास

बंदूकें हैं और जो अपनी मनमर्जी चलाते हैं. आपके यहां लगे 'निषेध' के कारण जो हथियारबंद लड़ाइयां हुई हैं वैसा यूरोप में नहीं हो सकता, न ही यूरोप का कोई मेयर सरेआम अंग्रेज़ी के क्लासिक्स को जला सकता है जैसा शिकागो के मेयर ने किया.

मैं नहीं समझता कि बर्नार्ड शॉ किसी और देश से मिले निमंत्रण का उतना तल्ख और तंज़भरा जवाब देते, जैसा उन्होंने 'नेशन' के संपादक बिलार्ड द्वारा अमरीका निमंत्रित किए जाने पर दिया.

किसी भी देश के पूंजीवादी एक घृणास्पद प्रजाति के सदस्य होते हैं, पर आपके वहां वे बदतर हैं. साफ़ तौर पर वे मूर्खों की तरह पैसे के लोभी हैं. बताना चाहूंगा कि व्यक्तिगत रूप से मैं 'व्यापारी' शब्द को 'सनकी' की तरह लेता हूं.

ज़रा सोचिए यह किस क़दर मूर्खतापूर्ण और शर्मनाक है : यह हमारा शानदार नक्षत्र जिसे हमने इस क़दर परिश्रम के साथ सुंदर बनाना सीखा है -- क़रीब-क़रीब सारी हमारी धरती मुट्ठी भर घृणित लोगों की जकड़ में है जो सिवाय पैसा बनाने के कुछ नहीं कर सकते. वह शानदार रचनात्मक-शक्ति -- हमारे वैज्ञानिकों का रक्त और दिमाग़, टैक्नीशियनों, कवियों और कामगारों का, जो हमारी 'दूसरी प्रकृति' यानी संस्कृति की रचना करता है -- कुछ मूढ़बुद्धि व्यक्तियों द्वारा धातु की नन्हीं पीली डिस्कों और चेकों की काग़ज़ी पत्तियों में बदल दी गई है.

पूंजीवादी पैसे के अलावा क्या बनाते हैं? निराशावाद; ईर्ष्या; लालच और एक नफ़रत जो अंततः उन्हें बरबाद कर देगी; लेकिन इस सबके साथ, अपने विस्फोट की हिंसा से वह सांस्कृतिक ख़जाने के बड़े हिस्से को भी बरबाद कर सकती है. आपकी मरियल, अति-विस्तृत सभ्यता घृणास्पद त्रासदियों के साथ आपको चेतावनी दे रही है.

जहां तक मेरा सवाल है, मेरा विचार है कि वास्तविक सभ्यता के साथ-साथ संस्कृति का तीव्र विकास तभी संभव है जब राजनैतिक सत्ता पूरी तरह से कामगारों के हाथ हो -- न कि दूसरों की मेहनत पर पल रहे परजीवियों के और निश्चय ही मैं सलाह दूंगा कि पूंजीवादियों को समाज के लिए ख़तरनाक वर्ग घोषित कर दिया जाए, राज्य के लाभ के लिए उनकी सारी संपत्ति जब्त कर ली जाए. उन्हें जहाज़ में बिठा कर किसी टापू पर छोड़ दिया जाए -- और वहां उन्हें शांति से मरने दिया जाए. एक सामाजिक समस्या का यही एक मानवीय समाधान होगा, यह 'अमरीकी आदर्शवाद' के अनुरूप भी होगा, जो और कुछ नहीं बल्कि अति-निश्छल व्यक्तियों का आशावाद भर है, जिन्होंने अभी उन नाटकों को

और उन त्रासदियों को नहीं झेला है -- कुल मिलाकर जिन्हें 'जनता का इतिहास' कहा जाता है.

1927 -- 1929.

अनुवादक परिचय

अशोक पाण्डे

जन्म : 29 नवंबर, 1966. कवि-अनुवादक-चित्रकार. एक कविता-संग्रह **देखता हूं सपने** 1992 में प्रकाशित.लारा एस्कीवेल के स्पेनिश उपन्यास का मूल से अनुवाद **जैसे चाकलेट के लिए पानी** चर्चित. येहूदा आमीखाई और फर्नांदो पेसोआ पर पुस्तिकाएं प्रकाशित. हिंदी की महत्त्वपूर्ण पत्रिका **पहल** में यात्रा-वृत्तांत के साथ विश्व-कविता से अनुवाद का ढेर सारा काम कई अंकों में छपा है. शमशेर बहादुर सिंह की चुनिंदा कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद **Broken and Scattered** नाम से 2002 में प्रकाशित.वीरेन डंगवाल की कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद **Its Been Long Since, I found Anything** 2004 में प्रकाशित.

संवाद से प्रकाशित अनुवाद : 'लस्ट फॉर लाइफ' (वॉन गॉग के जीवन पर आधारित उपन्यास), 'धरती जानती है' (यहूदा अमीखाई की कविताएं), 'एकाकीपन के बीस अरब प्रकाशवर्ष' (शुनीतारो तानीकावा की कविताएं), 'फर्नांदो पेसोवा की चयनित कविताएं'. इसके अलावा बड़े पैमाने पर विश्व-साहित्य से संवाद के लिए अनुवाद. अनेक पुस्तकें शीघ्र प्रकाश्य.

संपर्क : डी-35, जज फार्म, हल्द्वानी, जि. नैनीताल (उत्तरांचल), पिन- 263 139

विचार
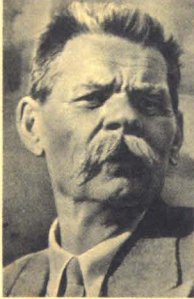
पीले दैत्य का नगर

अब से क़रीब सौ साल पहले प्रख्यात रूसी लेखक मैक्सिम गोर्की समाजवाद के प्रचार और पार्टी के लिए धन इकट्ठा करने के उद्देश्य से अमरीका की यात्रा पर गए थे. यह नन्हीं-सी किताब उन्हीं दिनों उनके द्वारा लिखे गए लेखों इत्यादि का संग्रह है.

'माँ' जैसी क्लासिक कालजयी कृति के रचनाकार के रूप में दुनिया भर में विख्यात मैक्सिम गोर्की की यह रचना बहुत ज़्यादा प्रसिद्ध नहीं हुई पर विगत कुछ दशकों से अमरीका की अंतर्राष्ट्रीय दादागीरी और सनकभरी नीतियों की पृष्ठभूमि में यह किताब हरेक सजग पाठक के लिए आवश्यक हो गई है.

लालच और पैसे की चकाचौंध से भरे नगर न्यूयॉर्क को गोर्की 'पीले दैत्य का नगर' कहते हैं. पीला दैत्य यानी सोना और सोना माने लालच और और अधिक लालच. इस पुस्तक में संग्रहीत लेखों को पढ़ना गहरे कहीं डराता भी है. सौ साल पहले के न्यूयार्क के दृश्य आज तक़रीबन उसी वीभत्स रूप में उन तमाम विकासशील देशों में देखे जा सकते हैं जिन पर काला अमरीकी साया पड़ा हुआ है. कहना न होगा हमारा अपना देश भी इन्हीं में एक है.

गहरे तक उद्वेलित कर देने वाला भाव-प्रवण गद्य.

अक्षर संरचना : डी. सुरेंद्र राव
आवरण संयोजन : अभिषेक उपाध्याय